॥ श्रीहरिः ॥

गीता-दैनन्दिनी

सन् १९९८ ई०

(संवत् २०५४-५५)

गीताप्रेस, गोरखपुर

15 अक्टूबर 98 तक का रेल
— Card Pass-No — 426891



सेवा करते हुए तुम लोग परम कल्याणको प्राप्त हो जाओगे'—'**ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः॥**' (१२। ४) 'जो मनुष्य प्राणीमात्रके हितमें लगे हुए हैं, वे मुझे ही प्राप्त होते हैं।'

जो मनुष्य दूसरोंकी सेवा तो करते हैं, पर बदलेमें उनसे कुछ चाहते हैं, वे वास्तवमें सेवा नहीं करते हैं, प्रत्युत व्यापार करते हैं। सेवा वही है, जो निष्काम भावसे की जाय।

सभी प्राणियोंमें कोई-न-कोई विशेषता रहती ही है। ऐसा देखनेमें भी आता है कि जो विशेषता हमारे में है, वह दूसरेमें नहीं है और जो विशेषता दूसरेमें है, वह हमारेमें नहीं है। ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है, जिसमें कुछ भी विशेषता न हो अथवा जिसमें सम्पूर्ण विशेषतायें हों। अतः अपने वर्ण, आश्रम, जाति, धर्म, सम्प्रदाय, विद्या, योग्यता, बल आदिको लेकर दूसरोंकी अपेक्षा अपनेमें विशेषता देखनी गलती है। मनुष्यको चाहिये कि वह दूसरोंकी विशेषताको देखकर उनका सदा सम्मान करे।

इस प्रकार स्वार्थ और अभिमान त्याग करके दूसरोंको सुख पहुँचानेकी भावनासे ही विश्वशान्ति सम्भव है गीता कहती है—'**त्यागाच्छान्तिरनन्तम्॥**' (१२। १२) 'त्यागसे तत्काल शान्ति होती है।'

~~~~~~

दृढ़ धारणा करिये!

नये वर्षमें मनुष्य-जीवनके चरम उद्देश्य भगवत्-प्राप्तिके पवित्र मार्गपर अग्रसर होनेकी; प्रभुमय जीवन बनानेकी, मान-सम्मानके दलदलमें न फँसकर सचेष्ट हो अपना मार्ग पूरा करनेकी!

~~~~~~

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।१।

सञ्जय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा। आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत्।२।

dhṛtarāṣṭra uvāca

dharmakṣetre kurukṣetre samavetā yuyutsavaḥ māmakāḥ pāṇḍavāścaiva kimakurvata sañjaya

sañjaya uvāca

dṛṣṭvā tu pāṇḍavānīkaṁ vyūḍhaṁ duryodhanastadā ācāryamupasaṅgamya rājā vacanamabravīt

(Ch. 1/1-2)

सूर्यो० ६।४६, सूर्यां० ५।१४ — राजगुरुमठ के कोटिहोम-सत्संग-भवन में
श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती शोध-संस्थान का उद्घाटन कार्य संपन्न।
उद्घाटन कर्ता डॉ० स्वामीनाथ तिवारी ने [illegible] किया -
अध्यक्षता पूर्व विधायक रामजनम राय - लौआडीह ने किया - विशिष्ट
समागत मानी हैं - राजेन्द्र प्रसाद सिंह - वरिष्ठ अधिवक्ता - वर्द्धमान -
नाथ लाल ने किया। त्रिवेणी प्रसाद सिंह - मुजफ्फरपुर ने धन्यवाद
ज्ञापन किया - सभा संचालन - राजगुरुमठ न्यास समिति के सचिव,
श्री प्रमोद कुमार दीक्षित ने किया। गणमान्यों में अतिरिक्त - गोपालराय,
हरिश्चन्द्र कॉलेज के प्राचार्य - श्रीराम सिंह, श्री [illegible] सिंह - सिंह
तथा विश्वनाथ राय, शिवमुनि राय, महादेव राय आदि सम्मानित
समाजसेवी श्रद्धा प्रेम पूर्वक उपस्थित थे। मेरे आशीर्वाद
से सानन्द सभा विसर्जित हुई। जगमोहन राय, उनकी पुत्रवधू -
आदि भी उपस्थित थे।

पौष शुक्ल ३, वि० सं० २०५४, गुरुवार, 'विकृतनाम' संवत्सर, शक-सं० १९१९,

श्रीकृष्ण-सं० ५२२३, JAN.1.1998

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्। व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता।३।
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि। युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः।४।

paśyaitāṁ pāṇḍuputrāṇāmācārya mahatīṁ camūm vyūḍhāṁ drupadaputreṇa tava śiṣyeṇa dhīmatā
atra śūrā maheṣvāsā bhīmārjunasamā yudhi yuyudhāno virāṭaśca drupadaśca mahārathaḥ
(Ch. 1/3-4)

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१५

आज १२ बजे खतौनी कोठी गये। मुन्नाबाबू, तथा अंजनाई और शिवप्रसाद सिंह से अनाज के मामले, कामों के सम्बन्ध में [illegible] हुआ।

कुटुम्ब के त्रिभुवननारायण राय, जगदीश्वर राय, सुदामा राय, श्री नारायण राय आदि भी थे। व [illegible] के समारोह में भाग लेकर [illegible] [illegible] [illegible] द्वारा [illegible] १३७० रुपये दे गये। उनका ब्यौरा निम्नलिखित है। (गत वर्ष का)

① श्री प्रेमशंकर राय ४०० + १२० विद्यालय की दक्षिणा।
② श्री त्रिभुवननारायण राय ५०० रुपये
③ सच्चिदानंद राय — १५० रु०
④ जगदीश्वर राय — १५० रु०
⑤ श्री नारायण राय — ५०

१३७०.

कल आकाश कुमार "मुन्ना" [illegible]

१ [illegible] के [illegible] ८०० रुपये [illegible]

[illegible] में श्री राजेन्द्र [illegible] के समारोह में उपस्थित थे। [illegible] उन्होंने ४०० रुपये और दिये। मैंने स्कूल के खाते में [illegible] उनकी ओर से [illegible] जमा करा दिये। दो सौ रुपये [illegible] [illegible], मैं लगाया। दो [illegible]। [illegible] आदि [illegible]।

ईश्वरकी स्मृति निरन्तर रहनी चाहिये।

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्। पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः।५।
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्। सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।६।

dhṛṣṭaketuścekitānaḥ kāśirājaśca vīryavān purujitkuntibhojaśca śaibyaśca narapuṅgavaḥ
yudhāmanyuśca vikrānta uttamaujāśca vīryavān saubhadro draupadeyāśca sarva eva mahārathāḥ
(Ch.1/5-6)

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१५

आध्यात्मिक व्यक्ति की दृष्टि में प्रत्येक जीव में ईश्वर का वास रहता है। जीव तो वास्तव में ईश्वर का अंश ही है। फिर भी सांसारिक जीव जहाँ इसे भूले रहते हैं, वहीं आध्यात्मिक व्यक्ति इसका ध्यान रखते हैं। उनकी दृष्टि में प्रत्येक जीव में ईश्वर ही अभिव्यक्त है और ये समस्त अभिव्यक्तियाँ योगमाया से ढकी रहती हैं।

यही कारण है कि आध्यात्मिक व्यक्तियों को ईश्वर सर्वसुलभ रहता है। किन्तु सांसारिक पुरुषों को सर्वदा सदैव ही माया दिखलाई पड़ती है। और यही कारण है कि आध्यात्मिक व्यक्ति प्रत्येक जीव का सम्मान करता है। प्रत्येक जीव को सुख पहुँचाने का प्रयास करता है। प्रत्येक जीव का हित-साधन करता है।

पौष शुक्ल ६, रविवार, 4 JAN.
सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१६

× × × ×

ईश्वर की एक विशेषता यह है कि वे लोगों के अभिमान को चूर्ण कर देते हैं। इसीलिये उन्हें दर्पदलन भी कहा जाता है। वैसे भी अभिमानी का पतन होता ही है। इसीलिये आध्यात्मिक व्यक्ति अभिमान नहीं करता। अभिमान के त्याग का भी अभिमान उसे नहीं होता। सरलता ही उसका आभूषण होता है। आध्यात्मिकता जीवन को भोगों में नष्ट होने से बचा लेती है।

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम । नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते।७।
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः। अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च।८।

asmākaṁ tu viśiṣṭā ye tānnibodha dvijottama nāyakā mama sainyasya sañjñārthaṁ tānbravīmi te bhavānbhīṣmaśca karṇaśca kṛpaśca samitiñjayaḥ aśvatthāmā vikarṇaśca saumadattistathaiva ca
(Ch.1/7-8)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१७

सोंठ - ५० ग्राम
सौंफ — १०० ग्राम
मिश्री — २०० ग्राम

प्रेमीको प्रभु त्याग नहीं सकते।

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः। ९।
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्। पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्। १०।

anye ca bahavaḥ śūrā madarthe tyaktajīvitāḥ nānāśastrapraharaṇāḥ sarve yuddhaviśāradāḥ
aparyāptaṁ tadasmākaṁ balaṁ bhīṣmābhirakṣitam paryāptaṁ tvidameteṣāṁ balaṁ bhīmābhirakṣitam
(Ch.1/9-10)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१८

श्री विपिन बिहारी सिंह आयिवक्ता
उत्तरी आनन्दपुरी, बोरिंग
कैनाल रोड (देवी स्थान के निकट)
पटना - फोन नं० 267986

श्री उमाशंकर राय (भूतपूर्व प्रधान)
ग्राम-नरही - बलिया।
गाडी - केशौराय पुरशतिर
थाना से उत्तर वाली सड़क। के दरवाजे
पकड़कर
पुना
नरही थाना में श्री० अरविन्द (बुलबुल राय)

हमें अपने मस्तकपर प्रभुका हाथ समझकर सदा आनन्दित रहना चाहिये।

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः । भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि।११।
तस्य सञ्जनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः । सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्।१२।

ayaneṣu ca sarveṣu yathābhāgamavasthitāḥ bhīṣmamevābhirakṣantu bhavantaḥ sarva eva hi
tasya sañjanayanharṣaṁ kuruvṛddhaḥ pitāmahaḥ siṁhanādaṁ vinadyoccaiḥ śaṅkhaṁ dadhmau pratāpavān
(Ch.1/11-12)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१९

प्रकाश उदय
द्वारा श्री उदय प्रकाश त्रिपाठी
माँ कमला निवास
बी 37/19/K
विरदोपुर
बैजनाथ मंदिर के पीछे

फोन नं० - 360332 (P.P. रावतजी)

सत्यकी चेष्टा कभी व्यर्थ नहीं जाती।

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः। सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्।१३।
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ। माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः।१४।

tataḥ śaṅkhāśca bheryaśca paṇavānakagomukhāḥ sahasaivābhyahanyanta sa śabdastumulo'bhavat
tataḥ śvetairhayairyukte mahati syandane sthitau mādhavaḥ pāṇḍavaścaiva divyau śaṅkhau pradadhmatuḥ
(Ch.1/13-14)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१९ पुत्रदा एकादशीव्रत

ओम नारायण शर्मा
बुद्धा कॉलोनी
त्रिभुवन हॉस्पीटल (श्री कुंज अपार्टमेंट
के बगल में)
पटना - 1
Tel. No. - 210231

रण विजय कुमार
C/O बजरंग बहादुर सिंह (वकील)
पश्चिमी लोहानीपुर
कदम कुआँ, पटना - 3.

कालका जरा भी विश्वास नहीं करना चाहिये।

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः। धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः।१७।
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते। सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक् पृथक्।१८।

kāśyaśca parameṣvāsaḥ śikhaṇḍī ca mahārathaḥ dhṛṣṭadyumno virāṭaśca sātyakiścāparājitaḥ
drupado draupadeyāśca sarvaśaḥ pṛthivīpate saubhadraścamahābāhuḥśaṅkhāndadhmuḥpṛthakpṛthak
(Ch.1/17-18)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२१ — **शनिप्रदोष**

श्री फौजदार राय - आनेवाले थे. किन्तु नहीं आये। प्रयाग की तिथि बदल गई। प्रभुता पाकर बड़ों की दलगत में विशेष रुचि रखते हैं। उनके माध्यम से पीताम्बर की मूर्ति वाले आश्रम से मिल जाती थी। किन्तु न हो सकी।

स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती - भारती मिलने आते हैं, उन्हें स्वरयोग में गति है. पर देश के लोग में कुछ बैठने में लगा है. इस के लिये इन्हें पर निर्भर करना उचित नहीं है।

मैं इनकी व्यवस्था इनका छोड़ के मालिक. पं. राम कृष्ण से कोई काम चलाता हूँ। फौज तथा आश्रमी दया पाठ की व्यवस्था भेजना है वह तो पड़ती है।

पौष शुक्ल १४, रविवार, 11 JAN.
सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२२

आज अपराह्न प्रमोद कुमार घर गये. गंगोत्री की लोक गये। विश्व. पाठ के का कार्यक्रम - 'कुम्भ स्नान' के संबंध में निर्णय होने बन्द हुआ है। वैसे भी पूर्व वे लोग जायेंगे और व्यवस्था करेंगे।

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्। नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्।१९।
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः। प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः।२०।

sa ghoṣo dhārtarāṣṭrāṇāṁ hṛdayāni vyadārayat nabhaśca pṛthivīṁ caiva tumulo vyanunādayan
atha vyavasthitāndṛṣṭvā dhārtarāṣṭrān kapidhvajaḥ pravṛtte śastrasampāte dhanurudyamya pāṇḍavaḥ
(Ch.1/19-20)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२३   **पूर्णिमा, माघस्नानारम्भ**

आज स्वामी ज्ञानानंद सरस्वती आनुष्ठानिक
जाने को उद्यत: प्रात: भोजन करके गये।
उनकी स्मृति भोजन छोड़ना और ध्यानयोगकी आपकी
उत्कृष्ट है।
यह संस्कारोंके लिये ध्रुव निश्चयात्मी है।
भूख के बाद कुछ परिश्रमी भी है।
जो हो सकता है, कोई न जाने। बहुत आराम
रखकर लम्बा होके का भोजन करना उचित
नहीं है।
स्वामी हरिदर्शनानंद को भगवानके तथा
सिकंदराके लिये नमस्कार - स्वभाव कहना
स्वयं बना देना स्व कर्तव्य चाहिए।

कुसंस्कारोंके नाशके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिये।

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।
अर्जुन उवाच सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत।२१।
यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्। कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे।२२।

hṛṣīkeśaṁ tadā vākyamidamāha mahīpate
arjuna uvāca senayorubhayormadhye rathaṁ sthāpaya me'cyuta
yāvadetānnirīkṣe'haṁ yoddhukāmānavasthitān kairmayā saha yoddhavyamasminraṇasamudyame
(Ch.1/21-22)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२३

ग्राम — स्व. अरविन्द बरवाँ = आजमगढ़ की शिष्य मंडली —
(1) त्रिलोकीनाथ तिवारी > स्व० मुनीन्द्र नाथ तिवारी 21/=
2. स्व राजनेति तिवारी = देवेन्द्र नाथ तिवारी → 60/=
2 श्री रामेश्वर तिवारी = श्री भूदेव तिवारी (एडवोकेट) 280
3 = स्व० धर्मेन्द्र तिवारी = देवकुमार + नीरज कुमार 51/=
4 = स्व० बलिराम
5 श्री आदिनाथ तिवारी
6. स्व० रमाकान्त तिवारी — पुत्र → डा० अनिल तिवारी
7. स्व० राममूरत तिवारी
8. स्व० शिवपूजन तिवारी
9. स्व० बनारसी तिवारी की पत्नी केवल —
10. स्व० बंशनारायण तिवारी = श्री रविशंकर तिवारी
श्री स्वदेश विहारी तिवारी =
11. स्व० राजेश्वर तिवारी
स्व० बनारसी तिवारी के पुत्र श्री अशोक तिवारी 81/=
✓ श्री तपेश्वर तिवारी सपत्नीक शिष्य बने कुल दक्षिणा 160/=
✓ श्री दयाशंकर तिवारी 10/=
61/=
725/=

स्व० शर्वदेव तिवारी (डिप्टी साहब) के तीन पुत्र
स्व० राजनेति तिवारी + स्व० धर्मेन्द्र तिवारी + श्री धीरेन्द्र तिवारी
श्री सभाजीत तिवारी

यदि हम जीभसे भगवन्नाम लेंगे तो सभी अङ्ग पुष्ट हो जायेंगे।

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः। धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः। २३।

सञ्जय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत। सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्। २४।

yotsyamānānavekṣe'haṁ ya ete'tra samāgatāḥ dhārtarāṣṭrasya durbuddheryuddhe priyacikīrṣavaḥ

sañjaya uvāca

evamukto hṛṣīkeśo guḍākeśena bhārata senayorubhayormadhye sthāpayitvā rathottamam

(Ch.1/23-24)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२४ — मकर-संक्रान्ति (विशेष पुण्यकाल अपराह्न ३ बजेसे सूर्यास्ततक)

बाबा नागार्जुन,

द्वारा श्री शोभाकान्त,

ख्वाजा सराय, लहेरियासराय,

(दरभंगा) बिहार.

चिन्ता ही करनी है तो केवल भगवान्‌की करो।

गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके । हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ।५।
न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः । यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ।६।

gurūnahatvā hi mahānubhāvān śreyo bhoktuṁ bhaikṣyamapīha loke hatvārthakāmāṁstu gurūnihaiva bhuñjīya bhogānrudhirapradigdhān
na caitadvidmaḥ kataranno garīyo yadvā jayema yadi vā no jayeyuḥ yāneva hatvā na jijīviṣāmaste'vasthitāḥ pramukhe dhārtarāṣṭrāḥ

(Ch.2/5-6)

सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।३७

आज बंबई के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह जो बंबई उच्च न्यायालय में अधिवक्ता है, उनको पत्र लिखकर कई विचारबिन्दुओं के संबंध में पत्र लिखा। जयपुरी जी सफल नगर के लिये - चिकित्सा सभागार मजीठी के रूप में उनके पत्या लेनी - तथा मठ के आगे के निर्माण, पुस्तक प्रकाशन आदि के बारे में। उसके बाद दफ्तर में जानकारी की न्यास समिति की बैठक के विषय में पत्र राजनैतिक सच्चिदानंद राय वकुल तथा डा० योगीन्द्र नारायण शर्मा को पत्र लिखा।

माघ शुक्ल ५, रविवार, 1 FEB.
सूर्यो० ६।४२, सूर्या० ५।३८

वसन्तपञ्चमी

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् । आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।५५।
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।५६।

śrībhagavānuvāca

prajahāti yadā kāmānsarvānpārtha manogatān ātmanyevātmanā tuṣṭaḥ sthitaprajñastadocyate
duḥkheṣvanudvignamanāḥ sukheṣu vigataspṛhaḥ vītarāgabhayakrodhaḥ sthitadhīrmunirucyate

(Ch.2/55-56)

सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।५८ — अवसर के जयंती समारोह में उपस्थित नहीं होने के कारण, प्रो० दीनानाथ प्रसाद, पटना को तथा डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा को शुभ पत्र लिख भेजा।

[illegible] शर्मा के माध्यम से [illegible] तथा औरों को भी पत्र लिखकर उनकी उदासीनता के लिये विरोध [illegible] भेज दिया।

इस जगत्‌में न कोई अपना है न पराया।

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः। रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते।५९।
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।६०।

viṣayā vinivartante nirāhārasya dehinaḥ rasavarjaṁ raso'pyasya paraṁ dṛṣṭvā nivartate
yatato hyapi kaunteya puruṣasya vipaścitaḥ indriyāṇi pramāthīni haranti prasabhaṁ manaḥ
(Ch.2/59-60)

सूर्यो० ६।१९, सूर्या० ५।५९ राँची के श्री कृष्ण [illegible] शर्मा के
श्री पुस्तक के लेख शब्दार्थ, गढ़ के निर्माण में
सहायतार्थ फल भेज कर [illegible] किया।

अपरिचितों और नवयुवकोंसे अधिक बातें न करो।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः । वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता । ६१ ।
ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते । सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते । ६२ ।

tāni sarvāṇi saṁyamya yukta āsīta matparaḥ vaśe hi yasyendriyāṇi tasya prajñā pratiṣṭhitā dhyāyato viṣayānpuṁsaḥ saṅgasteṣūpajāyate saṅgātsañjāyate kāmaḥ kāmātkrodho'bhijāyate
(Ch.2/61-62)

सूर्यो० ६।१८, सूर्या० ५।५९

श्री खड़्गधारी शर्मा - जनपुर को फोन भेजकर वैभव की प्राप्ति एवं राजनीतिज्ञों से सावधानी बरतने के संबंध में आगाह किया - सजग - सचेत किया।

बंबई जाने का आशय, रुक्मणि के लिये [illegible] में [illegible] बटन [illegible] मिला है पर [illegible] शरण में स्थान प्राप्ति की पुष्टि हो जायेगी।
२६ को ११ बजे कालिन्दी से चलकर दूसरे दिन [illegible] आदरणीय [illegible] पहुंचने की संभावना है।

भगवत्कृपा से मन्नाबाबू रवीन्द्र अपने मुजफ्फरपुर के संबंधी - श्री शिवधारी प्रसाद सिंह के साथ दिल्ली होते २८ ता० को बंबई पहुंचेंगे। दोनों महानुभावों की स्वीकृति मिल चुकी है।

बंबई की यात्रा का निमंत्रण लेकर राजे कृष्णप्रताप सिंह गाजीपुर के [illegible] अजयप्रताप सिंह स्वयं मठमें आकर निमंत्रण दे गये तथा टिकट कराने आदि की बात भी की।

विद्याके समान संसारमें कोई नेत्र नहीं है।

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति। ६३।
रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्। आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति। ६४।

krodhādbhavati sammohaḥ sammohātsmṛtivibhramaḥ smṛtibhraṁśād buddhināśo buddhināśātpraṇaśyati
rāgadveṣaviyuktaistu viṣayānindriyaiścaran ātmavaśyairvidheyātmā prasādamadhigacchati
(Ch.2/63-64)

सूर्यो० ६।१७, सूर्या० ६।०० होलाष्टकारम्भ

श्री स्वदेश दीक्षित निवासी लालपुर से आयी कि किसी भामके बाद. डा. आबिद [illegible] की सूचना हरेराम शर्मा जी से मिली।

रविवार को मित्रों के सम्बन्ध में जानकारी करने जाना चाहेगा।

श्री प्रमोद कुमार प्रजापति सिंह के लड़के के जन्म हुआ कलकत्ता में आप्त हुई।

चार हजार रुपये महेश्वी कनौजिया के लोकनाथ के पास जाली ताला आदि के मद में जमा किया गया। श्री प्रमोद कुमार विश्वास सचिव, [illegible] समिति ने यह सूचना भेजी।

सावधान रहना, यह दुनियाँ शैतानकी दूकान है।

अ० २] फाल्गुन शुक्ल १०, सं० २०५४, शनिवार, MARCH 7. 1998 [दिन ६६

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते। प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।६५।
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना। न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।६६।

prasāde sarvaduḥkhānāṁ hānirasyopajāyate prasannacetaso hyāśu buddhiḥ paryavatiṣṭhate
nāsti buddhirayuktasya na cāyuktasya bhāvanā na cābhāvayataḥ śāntiraśāntasya kutaḥ sukham
(Ch.2/65-66)

सूर्यो० ६।१६, सूर्या० ६।००

आज चार पत्र लिखा। पटना-बिहार के
बदरपुर के नन्दलालकुमार देवकी को और [illegible]
[illegible] पं. रमाशंकर शर्मा - [illegible] तथा [illegible] के
[illegible] पं. राम[illegible] शर्मा को - मन्त्री सरयू समाज के
कार्यों के [illegible] सम्बन्ध में
[illegible] या विचार भेजा। वे जैसा उचित
समझें करें।
आज [illegible] के लड़के अपनी धर्मपत्नी सहित मठ
में उपस्थित थे तथा उसकी चिकित्सा के लिये आये
उन्हें मालूम हुआ कि [illegible] जायेंगे और
मुझे अस्पताल के [illegible] मिलेंगे।

फाल्गुन शुक्ल ११, रविवार, 8 MARCH
सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ६।१

आमलकी एकादशीव्रत (स्मार्त)

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते। तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।६७।
तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।६८।

indriyāṇāṁ hi caratāṁ yanmano'nuvidhīyate tadasya harati prajñāṁ vāyurnāvamivāmbhasi
tasmādyasya mahābāho nigṛhītāni sarvaśaḥ indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā
(Ch.2/67-68)

सूर्यो० ६।१३, सूर्या० ६।१ — **आमलकी एकादशीव्रत (वैष्णव)**

आज डा० समन्तवक्ष्य शर्मा, पटना एवं सहस्रार्थ
राजनैतिक राय को पत्र लिखकर तैयार किया. कल
छोड़ा जायेगा।
आज प्रभुनारायण सिंह अपनी धर्मपत्नी के साथ
मठ में आये। उनके द्वितीय पुत्र के महामृत्युञ्जय जप
की पूर्णाहुति थी। पंडित और ब्राह्मणों को उन्होंने
भोजन कराया और दक्षिणा प्रदान की। मुझे भी
रु० 13 रु० दिये। . कुसमय. बहुरंगी भोजन करने से
रात में तबियत मंद थी।
गंगाजी के शिवाला घाट - सिकड़ी, धूल और जल से
अधिक चढ़ा है। अपनी माता को दस दिनों से मठ
में रिक्शाकार - अनुराग गंगा-स्नान करा-जाता है. जिन्हें
वाह सीता रहने का या आग्रह भी मर्यादा का ख्याल नहीं है।

संतसमागम और हरिकथा प्रभुमें श्रद्धा उत्पन्न करते हैं।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः। निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति। ७१।
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति। स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति। ७२।

vihāya kāmānyaḥ sarvānpumāṁścarati niḥspṛhaḥ nirmamo nirahaṅkāraḥ sa śāntimadhigacchati
eṣā brāhmī sthitiḥ pārtha naināṁ prāpya vimuhyati sthitvāsyāmantakāle'pi brahmanirvāṇamṛcchati

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे साङ्ख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः। २।
(Ch.2/71-72)

सूर्यो० ६।११, सूर्या० ६।३

जो पुस्तकें आवश्यक हैं जिन्हें निकट-भविष्य में लेना है वे निम्नांकित हैं:—

(१) 'सुभाषितरत्नभाण्डागारम्'
प्रकाशक:- मुंशीराम-मनोहरलाल- पब्लिकेशन्स
द्वारा मोतीलाल-बनारसीदास
या- विश्वविद्यालय प्रकाशन.

(२) कुबेरनाथ राय की रचनायें:-
(१) अन्धकार में अग्नि-शिखा — १५०
(२) पानी का क्षीर सागर — १२०.
(३) कन्था मणि — कंथा मणि १००/-
(४) कामधेनु — मूर्तिदेवी पुरस्कार से सम्मानित.

१

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन। तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव।१।
व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे। तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।२।

arjuna uvāca

jyāyasī cetkarmaṇaste matā buddhirjanārdana tatkiṁ karmaṇi ghore māṁ niyojayasi keśava
vyāmiśreṇeva vākyena buddhiṁ mohayasīva me tadekaṁ vada niścitya yena śreyo'hamāpnuyām

(Ch.3/1-2)

सूर्यो० ६।१०, सूर्या० ६।३

व्रत-पूर्णिमा
(होलिकादाह रात्रि ७.५१ बजेके बांद)

प्रातःकाल डॉ. हरेराम. नारायणजी. सुबोधजी बच्चियाँ तथा पं. रामनारायणजी पत्नी आदि होली त्योहार के लिये चल गये।

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ । ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ।३।
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते । न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ।४।

śrībhagavānuvāca

loke'smindvividhā niṣṭhā purā proktā mayānagha jñānayogena sāṅkhyānāṁ karmayogena yogināṁ
na karmaṇāmanārambhānnaiṣkarmyaṁ puruṣo'śnute na ca sannyasanādeva siddhiṁ samadhigacchati
(Ch.3/3-4)

सूर्यो० ६।९, सूर्या० ६।४ **पूर्णिमा**

आज सहसा [illegible] के श्री [illegible]
भातृव्य श्री सिद्धनाथ राय - जो डी० एल० डब्लू में कार्यरत हैं
आ गये। पहचाना नहीं, परिचय देने पर जान पाये हुए।
वे मुमुक्षु भवन में, अपने नाना के, मैं जब आते गये थे,
वे कभी ध्यान गये थे, मिल नहीं सके। वे [illegible] में
रहकर सामाजिक कार्य भी करते रहे हैं। नवनिर्मित समाज
भी [illegible] बड़ा सा [illegible]
सारस्वत श्रद्धा-संस्थाओं भी [illegible] कार्य
की [illegible] की व्यवस्था के विषय में समझते रहे।
सत्संग भवन के सम्बन्ध पाकर प्रसन्न रहे।
उन्होंने आज के [illegible] कि [illegible] से कहे
कि डी० एल० डब्लू में मैं अधिवक्ता [illegible]
भी अनुपम सेवा है। [illegible] गंगास्नान की व्यवस्था
हो जायेगी। मैंने आश्वासन दिया कि
कहूँगा।
आज पूर्णिमा। आदि [illegible] को
भोग किया गया। [illegible] भोजन [illegible]
[illegible] तृप्त पाते हैं। [illegible]
पायस [illegible] सामाजिक [illegible]
काशी परिवेश के लिये मधुर भोजन
[illegible] के साथ किया जाता है।

आत्मजयसे बढ़कर और कोई विजय नहीं है।

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।५।
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।६।

na hi kaścitkṣaṇamapi jātu tiṣṭhatyakarmakṛt kāryate hyavaśaḥ karma sarvaḥ prakṛtijairguṇaiḥ karmendriyāṇi saṁyamya ya āste manasā smaran indriyārthānvimūḍhātmā mithyācāraḥ sa ucyate
(Ch.3/5-6)

सूर्यो० ६।८, सूर्या० ६।४ — **वसन्तोत्सव, होली**

आज भगवान आद्यशंकराचार्य के "हरिमीडे स्तोत्र" का परायण किया। प्रोफेसर तेजनारायण 'कुमार' को स्पन्दन कुमार के पते पर लिफाफा भेजा। पचास रुपये प्रमोद को दोनिकजन के निमित्त दिया - जिसे उन्होंने चलता में कहीं गिरा दिया खो दिये हैं।

चैत्र कृष्ण २, रविवार, 15 MARCH
सूर्यो० ६।७, सूर्या० ६।५

रात में ग्यारह बजे प्रमोद कुमार ने रेडियो सुनकर सूचना दी है कि श्री अटलबिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बना दिये गये। वे १९ ता. को शपथ लेंगे तथा दस दिनों में अपना बहुमत संसद में सिद्ध करेंगे।

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन । कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते।७।
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः । शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः।८।

yastvindriyāṇi manasā niyamyārabhate'rjuna karmendriyaiḥ karmayogamasaktaḥ sa viśiṣyate
niyataṁ kuru karma tvaṁ karma jyāyo hyakarmaṇaḥ śarīrayātrāpi ca te na prasiddhyedakarmaṇaḥ
(Ch.3/7-8)

सूर्यो० ६।६, सूर्या० ६।५ — **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

आज पूर्वाह्न ९ बजे हरेराम नारायण तथा गार्गी मैत्रेयी
आदि परिवार लौटकर मठ में वापस आ गये। विवेकनारायण
की पत्नी भी आ गई। नारायण जी से एक बोरी गेहूँ और
एक बोरी चावल भी मठ के भोजन व्यवस्था हेतु ले आये।
रात में सुना गया। भाजपा सरकार का और केन्द्र सरकार
आगमन में [illegible] बहुत सी आवश्यक बातें भी जानकारी
हुई। आज हनुमानघाट [illegible] के [illegible] ९०० रुपये
कल वापस की यात्रा के भाड़े के लिये उधार गये।
पाण्डेय [illegible] का - श्रीमद् [illegible] के [illegible]
एकता-[illegible] का निमंत्रण पत्र [illegible] प्राप्त
हुआ।

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।११।
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः। तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।१२।

devānbhāvayatānena te devā bhāvayantu vaḥ parasparaṁ bhāvayantaḥ śreyaḥ paramavāpsyatha
iṣṭānbhogānhi vo devā dāsyante yajñabhāvitāḥ tairdattānapradāyaibhyo yo bhuṅkte stena eva saḥ
(Ch.3/11-12)

सूर्यो० ६।३, सूर्या० ६।६ आज प्रातः राजगुरुमठ से प्रस्थान करके
मुगलसराय-मगध एक्सप्रेस से - बक्सर आश्रम पर पहुँचे।
तत्काल सेन्ट्रल बैंक गये। अपने पेंशन खाते से - पेंशन की बकाया राशि
के पैसे तथा फरवरी की पेंशन के ११२५० ग्यारह हजार दो सौ पचास
रुपये प्राप्त किया। ग्यारह हजार रुपये, उसी बैंक में बचत खाते में
जमा किया। इस खाते में १०२५० रुपये थे अब वर्तमान में २१२५०
इक्कीस हजार दो सौ पचास हो गये हैं।
एक सौ रुपये [illegible] के [illegible] वाली पत्नी को (रामदिहल्ली राय की पत्नी)
को दिये। १०० रुपये [illegible] को - ५० उनके हाथ में ५० रुपये
अखिलेश कुमार के हाथ साधु की दवा के लिये।
[illegible] से पत्र लेकर के [illegible] - कलकत्ता
से [illegible]। [illegible] चले गये। वहाँ के [illegible] को [illegible]
आश्रम को ले गये।
एक हजार रुपये [illegible] आश्रम बक्सर के [illegible]
कार्य के खाते में दे दिया। उसके बाद [illegible] किलो [illegible] २० किलो,
गेहूँ कलकत्ता से प्राप्त करके श्रमजीवी एक्सप्रेस से चल के अभी
राजगुरु मठ में पहुँच गये। २० रुपये बच्चों को मिठाई। आज रात को
[illegible]। भोजन बना किया। शेष रुपये प्रमोद कुमार के पास
छोड़ रहा हूँ जो मेरे विभिन्न कार्यों में प्रयुक्त होंगे।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् । १३ ।
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः । यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः । १४ ।

yajñaśiṣṭāśinaḥ santo mucyante sarvakilbiṣaiḥ bhuñjate te tvaghaṁ pāpā ye pacantyātmakāraṇāt
annādbhavanti bhūtāni parajanyādannasambhavaḥ yajñādbhavati parjanyo yajñaḥ karmasamudbhavaḥ
(Ch.3/13-14)

सूर्यो० ६ । २, सूर्या० ६ । ७

आज मन - [illegible] [illegible] के व्यवहार से बहुत दुःखी हुआ। प्रतिक्रियावश उन्हें - और के पैसे पर पत्र भेज रहा हूं। अंतःकरण को [illegible] उचित मालूम हुआ। तदनुसार कार्य कर रहा हूं।
[illegible] के साथ आनन्द चौधरी, आ. [illegible] प्राध्यापक, [illegible] को हरिद्वार पत्र भेजा।

* *

श्री प्रमोद कुमार दीक्षित, मेरे अनन्य सेवक और भक्तप्रवर हैं। वे पन्द्रह वर्षों से निस्पृह भाव से सेवा में तल्लीन हैं। आज रात को पुनः उन्हें कन्या पैदा हुई। यह उनके शरीर से तीसरी देवी है। मुझे आत्मीयता वश स्वभाववश चिन्ता बनी रही। मन खिन्न रहा। सोच रहा हूँ कि मैं उनके अतिरिक्त क्या स्वयं उलझन में क्या योगदान कर सकता हूं। मेरी इच्छा थी कि मेरे सामने उन्हें पुत्ररत्न प्राप्त हो जाता। मैं अब कितने दिन रहूँगा।
तत्काल मैं वर्तमान के अतिरिक्त उन्हें पाँच हजार रुपये की राशि रखकर भविष्य निधि के लिये नगद दे सकता हूँ।

जो वस्तु अतिथिको न खिलावे उसे आप भी न खाय।

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः । आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते । १७ ।
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन । न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः । १८ ।

yastvātmaratireva syādātmatṛptaśca mānavaḥ ātmanyeva ca santuṣṭastasya kāryaṁ na vidyate
naiva tasya kṛtenārtho nākṛteneha kaścana na cāsya sarvabhūteṣu kaścidarthavyapāśrayaḥ
(Ch.3/17-18)

सूर्यो० ६।००, सूर्या० ६।८ — श्रीशीतलाष्टमीव्रत

आज प्रेस से नई विज्ञप्ति छपकर आ गई। बहुत ही घटिया रद्दी कागज दिया है। दो सौ सोलह रुपये लगे। पुनः बंबई पहुँच कर कुछ और ओंकार-आशीरूप उपादानों का नाम ज्यों सहायता के रूप भी फिर - छपवाना होगा - राजेन्द्र प्रसाद सिंह विधिवेत्ता के माध्यम से। आज पं० गणेश चौबे के पुत्र - शैलेन्द्र किशोर चौबे का पत्र आया।

आज रामशरण शर्मा का विस्तृत पत्र - उपनयन के संबंध में लिख भेजा और सुझाव दिया कि बटुक आश्रम पर ही समय लेकर दें, तबियत मेरी खिन्न और चिन्ताग्रस्त है। बटुक - वाराणसी के स्थानों की व्यवस्था कौन करे - कोई योग्य साधु - दिखाई नहीं देता। कहाँ से योग्य संन्यासी लाऊँ।

चैत्र कृष्ण ९, रविवार, 22 MARCH
सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ६।८

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः। अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।२७।
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः। गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते।२८।

prakṛteḥ kriyamāṇāni guṇaiḥ karmāṇi sarvaśaḥ ahaṅkāravimūḍhātmā kartāhamiti manyate tattvavittu mahābāho guṇakarmavibhāgayoḥ guṇā guṇeṣu vartanta iti matvā na sajjate
(Ch.3/27-28)

सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ६।११

आज महानगरी एक्सप्रेस से
मुंबई के लिये प्रस्थान करके पप.पू०प्र. [illegible]
से चले। रास्ते में कुछ सामान्य दिक्कतें हुई स्थान
के रद्दोबदल को लेकर प्रयाग में।
भोजन विश्राम की बात आती।

मांसाहार करना राक्षसी स्वभाव है।

प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु । तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् । २९ ।
मयि सर्वाणि कर्माणि सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा । निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः । ३० ।

prakṛterguṇasammūḍhāḥ sajjante guṇakarmasu tānakṛtsnavido mandānkṛtsnavinna vicālayet
mayi sarvāṇi karmāṇi sannyasyādhyātmacetasā nirāśīrnirmamo bhūtvā yudhyasva vigatajvaraḥ
(Ch.3/29-30)

सूर्यो० ५।५२, सूर्या० ६।११ — अमावास्या

आज अपराह्न २.३० मिनट दादर स्टेशन पर पहुंचे। श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता मुंबई उच्च न्यायालय के [illegible] गाड़ी लेकर उपस्थित थे। उनके साथ उनके निवास पर पहुंचे - जलपान किया। पुन: वहां से निवास के लिये उनकी दूसरी कोठी पर आये। वहां दोमंजिले पर एक सुसज्जित फ्लैट में ठहरे। भोजन विश्राम किया। [illegible] बाबू श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह वकील के एक दूसरे मकान में ठहरे थे। उन दोनों से भेंट वार्ता किया। विश्राम हुआ।

चैत्र शुक्ल १, रविवार, वि०सं० २०५५,
29 MARCH 1998, श्रीकृष्ण-सं० ५२२४
सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ६।१२
चैत्र नवरात्रारम्भ ('खरनाम' संवत्सर)

आज दो बजे श्री० ब्रा० समाज मुंबई के [illegible] वार्षिक समारोह में पहुंचे। [illegible] के आग्रह पर [illegible]। सभा में [illegible] पहुंचे। मंच तथा सभागार अनुकूल रूप से सुसज्जित थे। समारोह का शुभारंभ मैंने दीप प्रज्वलन किया तथा उद्घाटन-उद्बोधन किया। कार्यक्रम [illegible] स्वागत प्राप्त हुआ। राजगुरु के [illegible] के लिये एक लाख की सम्मान से घोषणा हुई - साढ़े [illegible] तत्काल मिले। पुन: राजेन्द्र बाबू के निवास गृह को गये। विश्राम भी [illegible] बजे [illegible] गाजीपुर [illegible] प्रमोद और उनकी पत्नी [illegible] थे।

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः । श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः । ३१ ।
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् । सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः । ३२ ।

ye me matamidaṁ nityamanutiṣṭhanti mānavāḥ śraddhāvanto'nasūyanto mucyante te'pi karmabhiḥ
ye tvetadabhyasūyanto nānutiṣṭhanti me matam sarvajñānavimūḍhāṁstānviddhi naṣṭānacetasaḥ
(Ch.3/31-32)

सूर्यो० ५।५०, सूर्या० ६।१२ **श्रीमत्स्य-जयन्ती, गणगोर**

आज भी निवास स्थान पर छोटे- मन्नाबाबू -त्रिवेणी
प्रसाद सिंह मिले. मेरी आँख की जाँच हुई- प्रमोद की आँख
की जाँच हुई। पश्चात् [illegible] कर दिया ।

मेरे आँख की जाँच हुई- मन्नाबाबू के दामाद जो
डाक्टर हैं, उन्होंने किया- पुनः कल भी जाँच
करेंगे।
श्री प्रमोद कुमार के आँख की भी जाँच हुई।
कल पुनः रक्तस्राव हो गया।

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि । प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति । ३३ ।
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ । तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ । ३४ ।

sadṛśaṁ ceṣṭate svasyāḥ prakṛterjñānavānapi prakṛtiṁ yānti bhūtāni nigrahaḥ kiṁ kariṣyati
indriyasyendriyasyārthe rāgadveṣau vyavasthitau tayorna vaśamāgacchettau hyasya paripanthinau
(Ch.3/33-34)

सूर्यो० ५।४९, सूर्या० ६।१३

आज नेत्र चिकित्सक - पारिख के यहां गये. वे राजेन्द्र बाबू के मित्र से हैं। उन्होंने चश्मे का नंबर प्रमाण पत्र मुझे तथा प्रमोद कुमार को भी दिये। चश्मे बनने को दिये गये।

~~आज दिन भारत के कुछ [illegible] महाराज के भक्त तथा शिष्य कैलाश शर्मा ने [illegible] समेत [illegible] के कोई रईस भक्त अनोद। [illegible] इति [illegible] पहुंचे। कुशल क्षेम के बाद लौट गये।~~

सत्कर्म करने वालोंकी देवता भी सहायता करते हैं।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।३५।

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः।३६।

śreyānsvadharmo viguṇaḥ paradharmātsvanuṣṭhitāt svadharmenidhanaṁśreyaḥparadharmobhayāvahaḥ

arjuna uvāca

atha kena prayukto'yaṁ pāpaṁ carati pūruṣaḥ anicchannapi vārṣṇeya balādiva niyojitaḥ

(Ch.3/35-36)

सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ६।१३ आज पूजा! मेरे कानकी जाँच हुई। मशीन लगाने की आवश्यकता है, कुछ लाभ मिलेगा।

श्री प्रमोद कुमार के [illegible] की जाँच हुई। उनके दाहिने कान का पर्दा खराब हो गया है। शीघ्र आपरेशन कराना आवश्यक है।

पहले नाक का आपरेशन होगा - दाहिने सिर की हड्डी सट गई है - उसके कारण से भी उपद्रव है।

आज प्रातः मन्ना बाबू और किशोर सिंह वाराणसी वापस गये।

न्यास समिति की बैठक हुई। न्यास-समिति में संशोधन प्रतिबंध की बातें तय हुईं। मन्ना बाबू के पुत्र - श्री अरुण सिंह, राजेन्द्र प्रसाद सिंह, अधिवक्ता, तथा उनके संबंधी श्री [illegible] सिंह जी इसमें सदस्य बनाये गये। [illegible] हुई। श्री कृष्ण [illegible] की [illegible] श्रीमन् [illegible] लोगों। मेरे [illegible] और [illegible] करने की है।

धर्मका आचरण करने वाला ही लोक-परलोकमें सुखी रहता है।

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः। महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्। ३७।
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च। यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्। ३८।

śrībhagavānuvāca

kāma eṣa krodha eṣa rajoguṇasamudbhavaḥ mahāśano mahāpāpmā viddhyenamiha vairiṇam
dhūmenāvriyate vahniryathādarśo malena ca yatholbenāvṛto garbhastathā tenedamāvṛtam
(Ch.3/37-38)

सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ६।१४

आज इरणाकुलम - [illegible] - मंदिर देखने गये। समुद्र के तट पर गये। इधर - अंधेरा होने से दुर्बल नेत्रों से विधिवत् नहीं देख सके। पुनः राजेन्द्र बाबू के घर गये - जलपान किया - तथा निवास गृह को लौटकर विश्राम किया। आज भी कुछ लोग वस्त्र आदि भेंट करने आये। मेरा चश्मा मिला - फिर नजर देखने का। डेढ़ हजार रुपये लगे। ७७० रुपये प्रत्येक चश्मे का।

सरलता बिना कोई भी मनुष्य शुद्ध नहीं हो सकता।

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा। कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च।३९।
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते। एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्।४०।

āvṛtaṁ jñānametena jñānino nityavairiṇā kāmarūpeṇa kaunteya duṣpūreṇānalena ca indriyāṇi mano buddhirasyādhiṣṭhānamucyate etairvimohayatyeṣa jñānamāvṛtya dehinam
(Ch.3/39-40)

सूर्यो० ५।४६, सूर्या० ६।१४

आज राजेन्द्र प्रसाद सिंह के
पुत्र विवाहगृह को गये। टेपरेकार्डर पर
आशीर्वचन उद्बोधनार्थ शब्द कहा तथा उत्तम
टेपरेकार्डर प्राप्त किया।
प्रातः रामप्रसाद सिंह के घर गये वहां भी
उद्घाटन किया। गाड़ी आयी पीछे से
जलपान, वस्त्रादि, फूलमाला सहित
आया।
१० बजे वाराणसी को प्रस्थान
किया। बीबी स्टेशन से कि मीरपुर उतरकर
पहुंचे। आरक्षित स्थान मिले। गाड़ी में भी
राजेन्द्र बाबू तथा गुरु प्रा० समाज के उपाध्यक्ष
ने भी कार्य किया। आर्य-अहमद राजपूत तथा
फूलमालाओं से सम्मानित की।
गाड़ी १२ बजे खुली।

जो ईश्वरमें लीन रहता है वही सच्चा संत है।

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ। पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्।४१।
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः।४२।

tasmāttvamindriyāṇyādau niyamya bharatarṣabha pāpmānaṁ prajahi hyenaṁ jñānavijñānanāśanam
indriyāṇi parāṇyāhurindriyebhyaḥ paraṁ manaḥ manasastu parā buddhiryo buddheḥ paratastu saḥ
(Ch.3/41-42)

सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ६।१५ सारा दिन गाड़ीमें बीता- स्वास्थ्य तथा मिलक्रियामें भारी कष्ट- दर्द करते भी- व्यायेपीते दिन काटते चलते रहे। कुछ अशिष्ट मनचले तरुण- तरुणियां पश्चिमी जानवरों के से हरकतें करते परेशान करने जैसा मालूम आता है।

भारतीय संस्कृति तथा अभिभावकों के विवेक ही यह परिणाम है। समाचार पत्र पढ़ने को मिला. वाजपेयी जी विश्वास मत प्राप्त कर गये। पदभ्रष्टों से पूर्णतः विजय मिली। सभी दल तहकूब, गठित भी भी सूचना किसी पर इतना नहीं है।

चैत्र शुक्ल ९, रविवार, 5 APRIL

सूर्यो० ५।४४, सूर्या० ६।१५

श्रीरामनवमीव्रत

आज प्रातः ४ बजकर ५० मि० पर - वाराणसी उतरे श्री० राजेन्द्र प्रताप सिंहके फोन करने से। स्टेशन पे उनके लड़की सज्जन कार लेकर स्टेशन में उपस्थित थे। उन्होंने कार से मठ में पहुंचा दिया। स्नान- ध्यान विश्राम किया।

स्वास्थ्य ठीक नहीं है। कफ अधिक है, कमजोरी भी अनुभव होती है।

तात्कालिक कुछ दवाओं के सहारे काम चला रहा हूं (आयुर्वेदिक दवा भी)

आनंदभूषण सहित पटने से आये हुए थे। वे ४ मार्च के बाद इलाहाबाद से आये हैं। [illegible] मौलिकायन ×

* मैं भारतीयों को - श्री संस्कृति एवं भारतीय संस्कारों को [illegible] बचाना होगा। [illegible] उपाय करें।

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना। जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।४३।

evaṁ buddheḥ paraṁ buddhvā saṁstabhyātmānamātmanā jahi śatruṁ mahābāho kāmarūpaṁ durāsadam
(Ch.3/43)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः।३।

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ६।१६ प्रभुनारायण सिंह कल ही मध्याह्न

आये। कुशल समाचार हुआ। उन्हें अपना
काम का नकदी, प्रमाणपत्र देकर मैंने
रुपये दे दिया कि [illegible] आना पड़ेगा.
श्री [illegible] नारायण सिंह से विचार किया की
बाबू के काम की नकल [illegible] लेंगे। [illegible]
समय- [illegible] के बाद के पहले हो जाना है।
~~श्री [illegible]~~
श्री राजेन्द्र नारायण सिंह को आज [illegible]
के लिये [illegible] के लिये दिया था
पर [illegible] नहीं मिल सका।

जहाँ ईश्वरकी चर्चा होती है वहीं स्वर्ग है।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्। विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।१।
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः। स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप।२।

śrībhagavānuvāca

imaṁ vivasvate yogaṁ proktavānahamavyayam vivasvānmanave prāha manurikṣvākave'bravīt
evaṁ paramparāprāptamimaṁ rājarṣayo viduḥ sa kāleneha mahatā yogo naṣṭaḥ parantapa

(Ch.4/1-2)

सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ६।१६ **कामदा एकादशीव्रत**

आज राजनैतिक [illegible], उद्योगपति [illegible] शर्मा. मन्ना बाबू को दस्तीपत्र और शेष को डाक द्वारा लिख कर लिफाफे में रखा। [illegible] कुछ जोड़ने की बात सोचा।
श्री लालजी शरण [illegible] आप [illegible] को लेकर उड़ गये। वे दो बजे लौटे- मैंने मन के सोच से भोजन नहीं किया। बहुत दुर्बलता मालूम होती है।

सांयकाल के सौभाग्यवती [illegible] कान्ति शर्मा आयी - उनसे [illegible] की बैठक की सारी बातें बताया तथा स्वामी [illegible] को संदेश भेजकर [illegible] बुलवाया - कि [illegible] की अवधि में [illegible] में रहेंगे।
[illegible] शर्मा दोनों [illegible] के अवकाश में घर जा रहे हैं। श्री वंश नारायण की पत्नी भी प्रयाग जायेंगी।

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः। भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम्।३।

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः। कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति।४।

sa evāyaṁ mayā te'dya yogaḥ proktaḥ purātanaḥ bhakto'si me sakhā ceti rahasyaṁ hyetaduttamam

arjuna uvāca

aparaṁ bhavato janma paraṁ janma vivasvataḥ kathametadvijānīyāṁ tvamādau proktavāniti
(Ch.4/3-4)

सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।१७ आज लेटरी विज्ञप्ति में अंकित संशोधन किया। पं० रामजी उपाध्याय [illegible] का [illegible] प्रमोद को दिया।

डा० शिवशंकर त्रिपाठी के यहाँ चिकित्सार्थ जाकर उन्होंने [illegible] दवा का उपयोग किया।
१२ दिनों की दवा में पांच सौ रुपये लगने की संभावना है।
श्री शिवलाल जैन जी भी पहले से आ पहुंचे हैं, इलाज की यात्रा के लिये।
काम का [illegible] डीजल से [illegible] किया जायेगा — ६००, ८००, और १२०० आदि की तीन तरह की मशीनें हैं।
बाबा से मोटर के पर विचार करके लेना होगा।
भोजन विश्राम किया।
परिस्थिति विकट है, समझना सोच समझ कर चलना है। [illegible] इलाज [illegible] आदि के लिये [illegible]। प्रमोद की पत्नी बच्चों के लिये।

× × ×

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन। तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप।५।
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्। प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया।६।

śrībhagavānuvāca

bahūni me vyatītāni janmāni tava cārjuna tānyahaṁ veda sarvāṇi na tvaṁ vettha parantapa
ajo'pi sannavyayātmā bhūtānāmīśvaro'pi san prakṛtiṁ svāmadhiṣṭhāya sambhavāmyātmamāyayā
(Ch.4/5-6)

सूर्यो० ५।४०, सूर्या० ६।१७ — प्रदोषव्रत, श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन)

आज देहरादून-हावड़ा एक्सप्रेस से हरिद्वार के लिये प्रस्थान किया।
श्री प्रमोदकुमार एवं हिम्मतलाल चौधरी साथ थे। [illegible] बड़ी
कठिनाई से पहुंचे। [illegible]
[illegible] कृपा भी [illegible]
इसी [illegible] किया वह बहुत बढ़िया था - उसके [illegible]
आतिथ्य [illegible] किया। आश्रम से चलने पर [illegible]
[illegible] बैठे थे।

जिसने वासनाओंको पैरों तले कुचल दिया है वही मुक्त है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।७।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।८।

yadā yadā hi dharmasya glānirbhavati bhārata abhyutthānamadharmasya tadātmānaṁ sṛjāmyaham
paritrāṇāya sādhūnāṁ vināśāya ca duṣkṛtām dharmasaṁsthāpanārthāya sambhavāmi yuge yuge
(Ch.4/7-8)

सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।१८ — ट्रेन पिछली रात [illegible] सवेरे इलाहाबाद
पहुँची । टैक्सी से [illegible] दरवाजा [illegible] में महामण्डलेश्वर
जी को सूचना दी गयी । प्रबंध व्यवस्थापक [illegible] (महामण्डलेश्वर के)
कहा कि [illegible] तैयार किया । यहाँ दे दिया जायेगा ।
तदनुसार [illegible] में [illegible] किया
दिया गया । शीघ्र भोजनालय [illegible] में [illegible]
काम किया । उसके बाद आसन व्यवस्था हुई । भोजन विश्राम किया गया ।
सायंकाल [illegible] टहलते हुए [illegible] । साधु [illegible] -
[illegible] भी [illegible] । महामण्डलेश्वर [illegible] हुआ है,
[illegible] हुआ है । उनके आदेश से राजगिरि जाना होगा -
वहाँ [illegible] अभिनन्दन [illegible]
होगा - मुझे ही [illegible] कार्य सम्पन्न करना है ।)

धर्म, सत्य और तप—यही जीवनकी सार सम्पत्ति है ।

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः। त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन। ९ ।
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः। बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः।१०।

janma karma ca me divyamevaṁ yo vetti tattvataḥ tyaktvā dehaṁ punarjanma naiti māmeti so'rjuna
vītarāgabhayakrodhā manmayā māmupāśritāḥ bahavo jñānatapasā pūtā madbhāvamāgatāḥ
(Ch.4/9-10)

सूर्यो० ५।३८, सूर्या० ६।१८ **श्रीहनुमज्जयन्ती, पूर्णिमा, वैशाख-स्नानारम्भ**

आज भी महाराज सायंकाल टहलने पधारे। उसके पूर्व आपके
राजस्थान के महाराजके भक्त कोई श्रीमान् आ पहुँचे। बिहार
के [illegible] वाणिज्य [illegible] जो सुखपाल सिंह हैं वे भी साथ थे।
पारिवारिक संपर्क हुआ। साधुशरण पाण्डेय - [illegible] तथा
उनके गाँव के एक वृद्ध सज्जन भी आये।
काशी में सेठ साहूकार- मारवाड़ी आया करते हैं - सम्पादक भी गाड़
है। [illegible] में [illegible] होता है किन्तु यह तो महामेला है।
ऐसा ही है।। आज डा० चंद्रभूषण मिश्र, डा० भागीरथप्रसाद शर्मा
तथा रामजतन पाण्डेय आदि का पुनः पदार्पण हुआ।
राजेन्द्र शर्मा आदि को पोस्टकार्ड लिखे।
[illegible] साधुशरण पाण्डेय [illegible] की सूची [illegible]
[illegible] सूची भी [illegible]।

वैशाख कृष्ण १, रविवार, 12 APRIL

सूर्यो० ५।३७, सूर्या० ६।१९

आज सायंकाल [illegible] सपत्नीक, कालिकाठाकुर सपत्नीक
तथा [illegible] कोई ६०-७० [illegible] जो पदार रहे हैं और
उनके साथ [illegible] के राजा [illegible] विद्यार्थी [illegible] के परिवार की
[illegible] भी [illegible] लोग भी [illegible] पहुँचे।
आज [illegible] पोस्टकार्ड [illegible] शर्मा, कैलाश पाण्डेय - [illegible]
तथा [illegible] को [illegible] तथा [illegible] हुआ।
[illegible] तथा [illegible] पाण्डेय आदि [illegible] कुमार को
[illegible] (कुछ [illegible] शुभ [illegible]
[illegible] सहना तथा [illegible] होगा। [illegible]
[illegible] हूँ। [illegible]
[illegible] हुए। [illegible]
[illegible] लिये [illegible] जायेगा।
[illegible] ही [illegible] हैं। उन्हें आप [illegible]
[illegible]

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः। शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्। २१।
यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः। समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते। २२।

nirāśīryatacittātmā tyaktasarvaparigrahaḥ śārīraṁ kevalaṁ karma kurvannāpnoti kilbiṣam
yadṛcchālābhasantuṣṭo dvandvātīto vimatsaraḥ samaḥ siddhāvasiddhau ca kṛtvāpi na nibadhyate
(Ch.4/21-22)

सूर्यो० ५।३१, सूर्या० ६।२२

वैशाख कृष्ण ७, रविवार, 19 APRIL

सूर्यो० ५।३०, सूर्या० ६।२२

आज ४ बजे नागरी सदस्यों और [illegible] की [illegible]
बैठक मे श्री सिद्धेश्वरी प्रसाद सिंह 'मधुकर', श्री अरुण सिंह, राजेन्द्र शर्मा [illegible] नरेन्द्र कुमार शर्मा, राजेन्द्र राय, महेन्द्र देव राय, प्रमोद कुमार आदि उपस्थित थे। कुछ प्रमुख आत्मीय जन का योगीन्द्र नाथ शर्मा, रामनरेश पाण्डेय व श्री [illegible] व हिन्दी सभा स्थानीय संयोजक [illegible] प्राधानाचार्य [illegible] आदि के नहीं रहने से आगामी १० मई को बैठक बुलाकर संविधान परिवर्तन की बात तय हुई।

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः। यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते। २३।
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना। २४।

gatasaṅgasya muktasya jñānāvasthitacetasaḥ yajñāyācarataḥ karma samagraṁ pravilīyate
brahmārpaṇaṁ brahma havirbrahmāgnau brahmaṇā hutam brahmaiva tena gantavyaṁ brahmakarmasamādhinā
(Ch.4/23-24)

सूर्यो० ५।२९, सूर्या० ६।२३ [illegible] - हनुमान का [illegible] है
निकालकर [illegible] नारायण को दिया।

जहाँतक हो सके मित्रोंसे लेन-देन मत रखो।

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते। ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति। २५।
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति। शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति। २६।

daivamevāpare yajñaṁ yoginaḥ paryupāsate brahmāgnāvapare yajñaṁ yajñenaivopajuhvati
śrotrādīnīndriyāṇyanye saṁyamāgniṣu juhvati śabdādīnviṣayānanya indriyāgniṣu juhvati
(Ch.4/25-26)

सूर्या० ५।२८, सूर्या० ६।२४

आज बड़े कड़े अनुरोध पर स्वामी [illegible] नामक एक इंडियन संन्यासी - सुन्दरराम के साथ - [illegible] से [illegible] हुए [illegible] जाने में [illegible] हुए। वे बड़े [illegible] परलोक के मिथ्यावादी तथा घर में गाड़ी [illegible]) उनके हैं [illegible] पत्नी [illegible] से मिलते रहते हैं। ऐसा मिथ्यावादी कोई सम्मान्य गृहस्थ भी नहीं होता। आजकल कितने संन्यासी की यही दशा है, अतः चिन्ता का विषय है कि उत्तराधिकारी संन्यासी कहां से लावें।

आज [illegible] से [illegible] उनको प्रमोद को दिया कि पत्नी का दोष [illegible], [illegible] तथा छोटी बच्ची को [illegible]। संस्कृत शास्त्री की उनकी परीक्षा चल रही है।

याद रखो, भगवान्‌का ही नाम दीनबन्धु है।

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्। नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम। ३१।
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे। कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे। ३२।

yajñaśiṣṭāmṛtabhujo yānti brahma sanātanam nāyaṁ loko'styayajñasya kuto'nyaḥ kurusattama
evaṁ bahuvidhā yajñā vitatā brahmaṇo mukhe karmajānviddhi tānsarvānevaṁ jñātvā vimokṣyase
(Ch.4/31-32)

सूर्यो० ५।२५, सूर्या० ६।२५ **प्रदोषव्रत**

आज भी कोई व्यवस्था नहीं हो पायी। गेहूँ दाल
मंगाया [illegible]। मिथिलेश-बबुआ की पत्नी [illegible]
पत्नी [illegible] आये हैं। चिकित्सा के लिये। उन्होंने कुछ
कपड़े और बीज [illegible] दिये। [illegible] दूध आदि को दिया।
ग्लूकोज [illegible] लेकर रख लिये लोगों।
स्वामी [illegible] हैं। [illegible]
मधुर भोजन में फंसे रहे हैं। यह भोजन [illegible] नहीं है।
[illegible] परन्तु [illegible] नहीं।
आज भी स्वामी सत्येन्द्र को कुछ पत्र लिखे गये -
किन्तु नयी विज्ञप्ति के अभाव में उन्हें [illegible] नहीं
किया जा सका।
पता चला स्वामी हरिदर्शनानन्द (तिकड़मी हरिकर शर्मा)
[illegible] के, अपने सहपाठी साथी - परमहंस [illegible] के.
और अब स्वामी [illegible] नागानन्द के स्थान
से [illegible] वेदान्त के [illegible] के नाम
लेकर रोते फिरते हैं। वे दोनों हरिद्वार के महन्तों के
गोद के और [illegible] हैं। ये लोग
न तो संन्यासी की [illegible] रखते हैं न
[illegible] की [illegible] का कोई [illegible] रखते हैं।
केवल मधुर भोजन और पैसा बटोरते हैं। [illegible]
[illegible] चाहते हैं।

एक हाथसे अभिवादन कभी नहीं करना चाहिये।

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप। सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।३३।
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।३४।

śreyāndravyamayādyajñājjñānayajñaḥ parantapa sarvaṁ karmākhilaṁ pārtha jñāne parisamāpyate
tadviddhi praṇipātena paripraśnena sevayā upadekṣyanti te jñānaṁ jñāninastattvadarśinaḥ
(Ch.4/33-34)

सूर्यो० ५।२४, सूर्या० ६।२६ आज भी १० बजे तक स्वामी मनीषानंद नये कुटिया संन्यासी बीती से नहीं आये। प्रमोदकुमार को विलम्बित कार्यों के संबन्ध में सांकेतिक अनुरोध किया। पटना के पंडित चन्द्रशेखर मिश्र के लड़के को - इम्तिहानों के राजगीर [illegible] के रास्ते २ मई को मगध से पटना पहुँचने की सूचना दे दी गई।

वैशाख कृष्ण ३०, रविवार, 26 APRIL

सूर्यो० ५।२३, सूर्या० ६।२७

अमावास्या

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः। छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः। २५।
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्। अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्। २६।

labhante brahmanirvāṇamṛṣayaḥ kṣīṇakalmaṣāḥ chinnadvaidhā yatātmānaḥ sarvabhūtahite ratāḥ kāmakrodhaviyuktānāṁ yatīnāṁ yatacetasām abhito brahmanirvāṇaṁ vartate viditātmanām (Ch.5/25-26)

सूर्यो० ५।९, सूर्या० ६।३७ — श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज प्रमोद कुमार के साथ मझिहनी पहुँचे।
डा० रामविलास राजू के पुत्र-मृत्युंजय के पुत्र
को तिलक समारोह में।

सबके साथ आत्मवत् व्यवहार करो।

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः । प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ।२७।
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ।२८।

sparśānkṛtvā bahirbāhyāṁścakṣuścaivāntare bhruvoḥ prāṇāpānau samau kṛtvā nāsābhyantaracāriṇau
yatendriyamanobuddhirmunirmokṣaparāyaṇaḥ vigatecchābhayakrodho yaḥ sadā mukta eva saḥ
(Ch.5/27-28)

सूर्यो० ५।८, सूर्या० ६।३७

बीमार से रहे। प्रातः पसे से मोहदीपुर और
वहाँ से मटगाँव श्री राजेन्द्र राम प्रजापति के यहाँ
पहुँचकर विश्राम-विचार किया।

ज्येष्ठ कृष्ण ६, रविवार, 17 MAY
सूर्यो० ५।८, सूर्या० ६।३८

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।२९।

bhoktāraṁ yajñatapasāṁ sarvalokamaheśvaram suhṛdaṁ sarvabhūtānāṁ jñātvā māṁ śāntimṛcchati
(Ch.5/29)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसन्न्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः।५।

सूर्यो० ५।७, सूर्या० ६।३८ कौंगडीह - पिपरा पतनापुर की बस से बड़े कष्ट से मध्याह्न में पिपरा उतरकर पहुँचे। वहाँ से सीता पर गये। प्रमोद कुमार भी अस्वस्थ।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः। स सन्न्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः।१।
यं सन्न्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव। न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन।२।

śrībhagavānuvāca

anāśritaḥ karmaphalaṁ kāryaṁ karma karoti yaḥ sa sannyāsī ca yogī ca na niragnirna cākriyaḥ
yaṁ sannyāsamiti prāhuryogaṁ taṁ viddhi pāṇḍava na hyasannyastasaṅkalpo yogī bhavati kaścana
(Ch.6/1-2)

सूर्यो० ५।७, सूर्यां० ६।३९ चिन्तन में उत्कृष्टता का समावेश करने
[redacted] वाले प्रतिपादन को ब्रह्मविद्या कहते हैं। इसमें ईश्वरीय
निर्देशों और ऋषि-अनुभवों को इस प्रकार गूँथा गया है
कि मानवीय अन्तःकरण उसे स्वीकार करले।
शास्त्र वचनों का स्वाध्याय, चिन्तन, मनन एवं शास्त्रज्ञों का
सत्संग इसी निमित्त किया जाता है। यह अध्यात्मविद्या का
तत्वदर्शन वाला पक्ष [redacted] हुआ।
दूसरा पक्ष साधना का है। सूक्ष्म जगत से - दैवीशक्तियों से
संपर्क का आदान-प्रदान का द्वार खोलने वाला यह
प्रयास उपासना-साधना के रूप में जाना जाता है। इसमें
व्यक्ति स्वयं को अनगढ़ से सुगढ़ बना ईश्वर का सामीप्य पाने
योग्य बनाता है।
चिन्तन पक्ष ब्रह्मविद्या तथा साधना पक्ष उपासना भी, दोनों ही
लक्ष्यपूर्ण एवं महत्वपूर्ण हैं। एक ज्ञानपक्ष है तो दूसरा
विज्ञानपक्ष। एक को ब्रह्मदर्शन का बुद्धिपक्ष और
दूसरे को कर्मपक्ष कह सकते हैं। दोनों मिलकर ही
सम्पूर्ण बनते हैं।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् । आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।५।
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः । अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ।६।

uddharedātmanātmānaṁ nātmānamavasādayet ātmaiva hyātmano bandhurātmaiva ripurātmanaḥ bandhurātmātmanastasya yenātmaivātmanā jitaḥ anātmanastu śatrutve vartetātmaiva śatruvat
(Ch.6/5-6)

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।४०

पिपरी में बीमार - मकड़ू की सभी औषधि [illegible]
आये [illegible] [illegible]
वापस आये।

किसीसे भी घृणा न करो।

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः। शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः।७।
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः। युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः।८।

jitātmanaḥ praśāntasya paramātmā samāhitaḥ śītoṣṇasukhaduḥkheṣu tathā mānāpamānayoḥ jñānavijñānatṛptātmā kūṭastho vijitendriyaḥ yukta ityucyate yogī samaloṣṭāśmakāñcanaḥ **(Ch.6/7-8)**

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।४० — **अचला एकादशीव्रत**

आज गौ मिली [illegible] दवाई [illegible] ठीक है।

[illegible]

दूसरोंके हितमें ही अपना हित है।

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु । साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते। ९।
योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः। एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः।१०।

suhṃmitrāryudāsīnamadhyasthadveṣyabandhuṣu sādhuṣvapi ca pāpeṣu samabuddhirviśiṣyate
yogī yuñjīta satatamātmānaṁ rahasi sthitaḥ ekākī yatacittātmā nirāśīraparigrahaḥ
(Ch.6/9-10)

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४१ **शनिप्रदोष**

दर्शन के लिये सत्य आत्मा बनता है। प्राणियों के लिये सत्य ईश्वर बनता है और आचरण के लिये सत्य धर्म बनता है।

त्याग में ही जीवन का सच्चा आनंद है, और मृत्यु में भी नष्ट नहीं होता।

ज्येष्ठ कृष्ण १३, रविवार, 24 MAY
सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४१

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते। ३५।
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः। वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः। ३६।

śrībhagavānuvāca

asaṁśayaṁ mahābāho mano durnigrahaṁ calam abhyāsena tu kaunteya vairāgyeṇa ca gṛhyate
asaṁyatātmanā yogo duṣprāpa iti me matiḥ vaśyātmanā tu yatatā śakyo'vāptumupāyataḥ

(Ch.6/35-36)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४९

ता० १६.१७जून.९८ बुधवार के सजातीय

① रासबिहारी राय - पूजा - पुरुषपद्धी —
② सुश्री नरेन्द्र शर्मा - पादपूजा -
③ शार्ङ्गधर शर्मा - पूजा एवं पादपूजा - द० ध० क०
④ श्री फणीन्द्रनाथ शर्मा - पूजा एवं पादपूजा -
⑤ श्री नारायण राय - गुरुपूजा —
⑥ श्री भुवनेश्वर शर्मा - अरुण शर्मा —
⑦ सुभाष राय - पादपूजा —
⑧ जनार्दन राय — पादपूजा पुरुषपद्धी -
⑨ सुदामा राय — गुरुपूजा - पादपूजा -
⑩ श्री गंगाप्रसाद राय - गुरुपूजा —
⑪ राम दयाल राय - पादपूजा →
⑫ शिवमूरति राय - गुरुपूजा एवं विवाह द० क०
⑬ विजय कुमार राय - पूजा →
⑭ रामावतार शर्मा - गुरुपूजा - दो बेटी श्री
रामावतार शर्मा - विवाह की द० क०
⑮ रामानन्द राय पूजा —

शुभ-चिन्तनका अभ्यास बनावें।

⑯ रासबिहारी राय — पादपूजा —

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः। अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति। ३७।
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति। अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि। ३८।

arjuna uvāca

ayatiḥ śraddhayopeto yogāccalitamānasaḥ aprāpya yogasaṁsiddhiṁ kāṁ gatiṁ kṛṣṇa gacchati
kaccinnobhayavibhraṣṭaśchinnābhramiva naśyati apratiṣṭho mahābāho vimūḍho brahmaṇaḥ pathi

(Ch.6/37-38)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४९ **व्रत-पूर्णिमा**

ब्राह्मण भक्तों एवं शिष्यों की दक्षिणा एवं पादपूजा।

२०२ रु० दो सौ दो रुपये.
५५ रुपये.
५० पैसे ८ डिब्बा टीका [illegible] पैसे
२१९ रु० दो सौ उन्नीस रुपये.

~~५० रुपये (पचास रुपये)~~
~~५१ रु० (इक्यावन रु०)~~
~~२१ रु० इक्कीस रुपये।~~

~~२०) बीस रुपये.~~

~~४६ रु० छियालिस रुपये.~~
१०० रु० एक सौ रुपये.
~~२४ रु० चौबीस रुपये.~~
~~१०१ रु० एक सौ एक रुपये~~

~~५१ रु० इक्कावन रुपये.~~

३०१ तीन सौ एक रु०
५१ रु० इक्कावन रुपये.
२५१ रु० दो सौ इक्कावन रु०.

२१ इक्कीस रुपये ,सावधानी ही साधना है।

१८२२ रु०

~~[illegible] रुपये)~~

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः। त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते।३९।

श्रीभगवानुवाच

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते। न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति।४०।

etanme saṁśayaṁ kṛṣṇa chettumarhasyaśeṣataḥ tvadanyaḥ saṁśayasyāsya chettā na hyupapadyate

śrībhagavānuvāca

pārtha naiveha nāmutra vināśastasya vidyate na hi kalyāṇakṛtkaściddurgatiṁ tāta gacchati

(Ch.6/39-40)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४९ — **पूर्णिमा**

(१७) श्री रामकमल राय शर्मा - पूजा →

(१८) [illegible] नारायण राय - गुरु पूजा एवं पादपूजा -

(१९) श्री श्रीराम राय - गुरु पूजा - ३०० रु०
" " विवाह में [illegible] -

(२०) परमहंस राय — पूजा →

(२१) गजेन्द्र की माता → ५१ रु०

(२२) उदयनारायण राय →

(२३) रास बिहारी राय - बड़की बहटी -

(२४) दीनदयाल राय — ३० रु०

(२५) विपिन बिहारी राय - गुरु पूजा -

(२६) [illegible] राय - (राम [illegible] राय)

(२७) सदानन्द राय - गुरु पूजा - ([illegible])

(२८) गौरी शंकर राय [illegible] -

(२९) गौरी शंकर - ([illegible] राय की) [illegible]

(३०) [illegible] नारायण राय - गुरु पूजा विवाह

(३१) [illegible] राय —

(३२) गोपाल राय →

(३३) संत क्यों कहलाओ मत।
[illegible] राय - ३०० [illegible]

(३४) श्री [illegible] राय - विवाह -

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः । शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।४१।
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्। एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्।४२।

prāpya puṇyakṛtāṁ lokānuṣitvā śaśvatīḥ samāḥ śucīnāṁ śrīmatāṁ gehe yogabhraṣṭo'bhijāyate athavā yogināmeva kule bhavati dhīmatām etaddhi durlabhataraṁ loke janma yadīdṛśam
(Ch.6/41-42)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४९

१०१ एकसौ एक रु०.
५० रु० (४५+५) नगद ~~कै...जी~~
—— ३०० रु० तीन सौ रु० (दो नौरांजी)
पूजा → ५१ रु० .
२५७ रु० दो सौ सतावन रु०.
~~११ रु० . ग्यारह रुपये~~

१२१ रुपये . एकसौ इक्कीस .

चढ़ पूजा १० रु०.
चालिस रु०.

दो कौरांजी – १०१ रु०. एकसौ एक
१०१ रु० एकसौ एक रु०

जी) – १५० रु० एकसौ पचास रुपये.
५१ रु० इक्कावन रुपये
२५) रुपये - पच्चीस रुपये.
साहिल → २०१ दो सौ एक रुपये.

२१ रु० ~~इक्कीस रुपये~~.
५०) पचास रुपये.
– २०० दो सौ रुपये

अपनी आवश्यकताओंको कम-से-कम रखो।

सहित पूजा - २०० दो सौ रुपये २२३३ - बाईस सौ तैंतीस रुपये.

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्। यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन।४३।
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः। जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।४४।

tatra taṁ buddhisaṁyogaṁ labhate paurvadehikam yatate ca tato bhūyaḥ saṁsiddhau kurunandana
pūrvābhyāsena tenaiva hriyate hyavaśo'pi saḥ jijñāsurapi yogasya śabdabrahmātivartate
(Ch.6/43-44)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५० — [illegible] की पूजा [illegible] →

(६५) सच्चिदानन्द राय — गुरुपूजा — १००
(६६) रास बिहारी राय कन्हैया — ५१००
(६७) → राकेश मिश्र → १०५
(६८) दामोदर राय — १०१ (मिठ्ठू राम)
(६९) ब्रह्मदेव राय — १०१ [illegible]
(७०) मिथिलेश कुमार राय — १०१.
(७१) रवीन्द्र नाथ राय → २० रुपये.
(७२) राम किशुन राय (पश्चिम पट्टी)
(७३) डाक्टर — सुदर्शन —
(७४) (७४) वीरेन्द्र राय शर्मा —
(७५) (७५) नन्द कुमार राय —
(७६) राम बचन राय. २०
(७७) श्री राम के घर गोड़लगाई —
(७८) जगन्नाथ राय शर्मा दीक्षा एवं
गुरुपूजा की दक्षिणा — [illegible]
कपड़े →

क्रियाका सिद्ध होना न होना, सुकृत-दुष्कृतका फल है।

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः। अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।४५।
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः। कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन।४६।

prayatnādyatamānastu yogī saṁśuddhakilbiṣaḥ anekajanmasaṁsiddhastato yāti parāṁ gatim
tapasvibhyo'dhiko yogī jñānibhyo'pi mato'dhikaḥ karmibhyaścādhikò yogī tasmādyogī bhavārjuna
(Ch.6/45-46)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५० — **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

एक सौ रुपये.
[illegible] रुपये.
एक सौ पाँच रु०
एक सौ एक रुपये।
→ १० रुपये
[illegible]
बीस रुपये.
→ १०१ रुपये
~~१०१ रु०~~
५० रु० पचास रुपये.
२१ इक्कीस रुपये
बीस रुपये.
४५७ रु०.
१५० रुपये.
८२७ नवसौ सताइस रुपये - टोटल - कुल जोड़

१४२२.
३२३२. } टोटल.
८२७ } [illegible]

चार हजार पाँच सौ
१. जनवरी - कुल जोड़ में मूल - प्राप्त हुए है - ४५५५
चार हजार पाँच सौ पचपन. रुपये →

आषाढ़ कृष्ण ४, रविवार, 14 JUNE
सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना। श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः। ४७।

yogināmapi sarveṣāṁ madgatenāntarātmanā śraddhāvānbhajate yo māṁ sa me yuktatamo mataḥ
(Ch.6/47)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः।६।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१ धन वैभव पद-प्रतिष्ठा की हैं। इन विभूतियों के स्वामी बहुधा स्वार्थी, क्रूर और कठोर देखे जाते हैं।
अच्छाई के लक्षण सेवा, सज्जनता, सहयोग, सहानुभूति, प्रेम और उदारता आदि हैं। जिस व्यक्ति में ये गुण हैं उसे अच्छा ही कहना होगा।
अच्छाई के द्योतक ये मानवीय गुण ज्ञान के आधार पर ही मिल सकते हैं। गुणों की जन्मजात उपलब्धि मानना स्वयं एक अज्ञान है।

× × ×

ज्ञानवान व्यक्ति ही शीलवान, शिष्ट और विनम्र बनता है। इन गुणों का परिणाम समाज में आदर, सम्मान और सहयोग के अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकता।
जो समाज में इस प्रकार की स्थिति पा लेता है, उसे आत्मविश्वास में बड़ी सुविधा रहती है। यही आत्मविश्वास परमानंद की ओर जानेवाला आध्यात्मिक मार्ग है।
मनुष्य के दोनों जीवन भौतिक और आध्यात्मिक आत्मिक ज्ञान के आधार पर ही सफल होते हैं।
साधन, सुविधा, विभूति और वैभव भी तो प्राप्त हो जाय, लेकिन उसके उपयोग के विषय में अज्ञानी ही रह जायें, तो इसका परिणाम प्रतिकूल ही होगा। अज्ञान प्रेरित साधनों का प्रयोग मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है।

ज्ञान के अभाव में साधन संपन्नयुक्त व्यक्ति बहुधा कुमार्गी हो जाते हैं। आत्मा का क्षेत्र तो विशुद्ध रूप से ज्ञान का ही क्षेत्र है। वहां अज्ञान के एक बिंदु की भी गुंजाइश नहीं है। → (आगे के पृष्ठ में नीचे देखें)

परोपकार पुण्यका हेतु है।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः। असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु।१।

śrībhagavānuvāca

mayyāsaktamanāḥ pārtha yogaṁ yuñjanmadāśrayaḥ asaṁśayaṁ samagraṁ māṁ yathā jñāsyasi tacchṛṇu

(Ch.7/1)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१ आज विभूतिनारायण शर्मा. प्रेमशंकर शर्मा. सच्चिदानंद शर्मा, गंगाप्रसाद शर्मा. श्रीराम शर्मा. भानुप्रताप शर्मा. परमहंस शर्मा. आदि ने पूजा दक्षिणा एकत्र करने पर आय का परीक्षण किया।
कमलेश्वर राय वी०ऊ० तथा रामकृपाल राय एवं गौरीशंकर राय. (बलिया रामपुर) तथा अन्य लोगों ने गौरी स्थान. वह उनका पूजा किया व कार गाड़ी में का कुछ भी नहीं लिया। रमाकान्त शर्मा. राजकुमार के लड़के. निर्मल शर्मा. आज में दानादि कार्य दान किया। आज. ८५५५. पैंतालिस सौ पचपन रुपये मिले। वेंकटेश का लड़का पहुंचाने बोलेगे सोचा गया।

× × ×.

आत्मा का विकास गुण कर्म, स्वभाव की उत्कृष्टता पर निर्भर है। जिसने दया, क्षमा, प्रेम और सहानुभूति के गुण विकसित कर लिया है, जिसने परोपकार और परमार्थ ही अपने कर्मों का आधार बना लिया है। और जिसने स्वभाव को काम, क्रोध, मद, लोभ आदि दोषों से मुक्त कर लिया है, आत्मा का क्षेत्र उसके लिये ही खुलता है। किन्तु गुण, कर्म, स्वभाव का निर्माण जिस तथ्य के आधार पर होता है, उसका नाम ज्ञान है।
इस विश्व में ज्ञान एक शक्ति, एक संबल और एक साधन है।

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः। यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते। २।
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः। ३।

jñānaṁ te'haṁ savijñānamidaṁ vakṣyāmyaśeṣataḥ yajjñātvā neha bhūyo'nyajjñātavyamavaśiṣyate
manuṣyāṇāṁ sahasreṣu kaścidyatati siddhaye yatatāmapi siddhānāṁ kaścinmāṁ vetti tattvataḥ
(Ch.7/2-3)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५२

आज [illegible] के लड़का पहुँचाये।
कबीर आश्रम 'वरुणे' [illegible] से मोहल्ला, [illegible]
मोहनिर्या से पीली कोठी आये। वहाँ से
रिक्शा से घर में आये।
[illegible] खत्री · रजनी · [illegible] २०५ रु.
इए। [illegible]
लिफाफा पोस्टकार्ड ७ आये।
[illegible]

~~पीछे के पृष्ठ का अवशेष-तत्त्व~~ →

ज्ञान-प्राप्ति के प्रयास की अनेक शाखायें हैं। जैसे सत्संग, स्वाध्याय, चिन्तन, मनन और अनुभव। जिज्ञासा लेकर ज्ञानी पुरुष के पास जाया जाय और उनसे सत्संग प्रदान करने की प्रार्थना की जाय। वे जो कुछ कहें अथवा बतलावें उसे ध्यान से सुना जाय और विश्वासपूर्वक उसे न केवल हृदयङ्गम किया जाय बल्कि उसपर यथोचित आचरण भी किया जाय। उन व्यक्तियों को जिन्हें शिक्षा का अवसर नहीं मिला है सत्संग ही एक उपाय है। ~~जिनके लिये स्वाध्याय की सुविधा है, उनको~~ कहीं किसी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। वे घर पर ही पुस्तकों और अपनी शिक्षा की सहायता लेकर

अपनी-स्त्री, धन और भोजन—इन तीनोंमें संतोष करना चाहिये।

ज्ञान प्राप्त करने का पुरुषार्थ कर सकते हैं।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च। अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।४।
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्। जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्।५।

bhūmirāpo'nalo vāyuḥ khaṁ mano buddhireva ca ahaṅkāra itīyaṁ me bhinnā prakṛtiraṣṭadhā
apareyamitastvanyāṁ prakṛtiṁ viddhi me parām jīvabhūtāṁ mahābāho yayedaṁ dhāryate jagat
(Ch.7/4-5)

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५२

आज परिश्रमपूर्वक वधुप के शिष्यों भक्तों को उद्बोधन लिखा। खाने की कोई इच्छा नहीं। दिन में सादा भोजन किया। सायंकाल आम का शर्बत पीया। रात में एक रोटी व पाव दूध पीकर।।

राजेन्द्र प्रसाद का नाती नामकरण के लिये आया है। उसके भगवान की एक पुत्र प्राप्त है। दिन में ठहरा फिर रात में कुसुम वाली, उसके मौसी के यहां गया।

हे राम यह तो अवश्य है पर यह पहले ये बेवकूफी है। संसार सामञ्जस्य और संतुलन के सहारे अनुकरण के काबिल प्रायः प्रतीत होता है।

मैंने कुछ कड़े शब्दों का प्रयोग: शिक्षा भाव से किया - वे समझें या मत समझें।

(१) सेवा ही मन को शुद्ध रखने का उत्तम साधन है। जीवन में सफलता पाने के लिये, बलिदान से बढ़कर कोई साधन नहीं है। इच्छा शक्ति की दृढ़ता, ईश्वर पर भरोसा और बलिदान यह तीन गुण ऐसे हैं जिनसे बड़ी बड़ी सफलताओं के दरवाजे खुल जाते हैं। सफलता प्राप्ति के लिये इच्छा शक्ति को दृढ़ रखना होगा और उसे ईश्वरीय इच्छा शक्ति के सामने समर्पित करना होगा। आत्मसमर्पण की भावना से बलिदान की वेदी पर अपने को अर्पित कर देना चाहिये, ऐसा करने से सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय। अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।६।
मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय। मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।७।

etadyonīni bhūtāni sarvāṇītyupadhāraya ahaṁ kṛtsnasya jagataḥ prabhavaḥ pralayastathā
mattaḥ parataraṁ nānyatkiñcidasti dhanañjaya mayi sarvamidaṁ protaṁ sūtre maṇigaṇā iva
(Ch.7/6-7)

सूर्यो० ५।३, सूर्यां० ६।५३ — आज रात में [illegible] सपरिवार घर जायेंगे।
दिल्ली से श्री त्रिपुरारी राय का रजिस्टर्ड पार्सल आया।
देखा नहीं। कल प्रमोदकुमार के आने पर उनके अनुसार
वहाँ त्रिपुरारी राय को [illegible] [illegible] भेजना होगा।
श्री [illegible] प्रसाद जी बर्नपुर वाले के लड़के के अनुसार
एक सौ रुपये - धार्मिक - हल्दी तथा सरसों मँगाने
के लिये भेजूँगा।

सपरिवार घर जाने वाले थे। पर विवेकानंद
द्वारा प्रमोदकुमार के आने की सूचना से नहीं गये कि कल
उनकी प्रतीक्षा के बाद जायेंगे। अतः धार्मिक हल्दी-
मेंथी मंगौरे-सरसों के लिये एक सौ रुपये नहीं जा सके।
कल लक्ष्मीनारायण शर्मा सिताराम सियाराम के यहाँ
भोजन होगा - अपना भी कि कोई भोजनपात्र नहीं होगा।

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः। प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु।८।
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ। जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु।९।

raso'hamapsu kaunteya prabhāsmi śaśisūryayoḥ praṇavaḥ sarvavedeṣu śabdaḥ khe pauruṣaṁ nṛṣu
puṇyo gandhaḥ pṛthivyāṁ ca tejaścāsmi vibhāvasau jīvanaṁ sarvabhūteṣu tapaścāsmi tapasviṣu
(Ch.7/8-9)

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५३ — योगिनी एकादशीव्रत

आज राजनारायण का नाती - अमित - उनके मामा के पुत्र
तथा उनकी आजी - (मातामही) चले गये।
आज कमर में तेरह दिनों के बाद आलू लगाया। पिछले की
याद आयी। उसका परिणाम अधिक होने से कष्ट हुआ
है। शारीरिक क्षमता बहुत घट गई।
ऋतुपर्ण के शिष्यों का उद्बोधन पत्र - डाक में डलवा दिया।
वशिष्ठ मुनि आश्रम को पत्र लिखकर तैयार किया।
श्री हरे राम - सपत्नीक कल रात में चले गये। अकेले रहने के
फलस्वरूप अध्ययन करने में कुछ मन लगा रहा। भगवद्कृपा से
शान्तिपूर्वक रात बीती।

आषाढ़ कृष्ण १२, रविवार, 21 JUNE
सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५३ — प्रदोषव्रत

आज ललितेश्वर के दर्शन
करके लौटते जल्दी भोजन। [illegible] साथ ले आये,
[illegible] और [illegible] - ललितेश्वर की [illegible] प्रकट [illegible]।
प्रातः नव बजे रामपुर गंगोली के श्री शिवमुनि राम। यहां संस्थान
उच्च विद्यालय में - विद्यार्थी के [illegible]। मैं [illegible] और [illegible]।
आये थे श्री गोपाल राव के निमंत्रण पर उनकी संस्था में [illegible]
[illegible] स्वामी [illegible] सरस्वती के संबंध में [illegible]।

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्। बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्। १०।
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्। धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ। ११।

bījaṁ māṁ sarvabhutānāṁ viddhi pārtha sanātanam buddhirbuddhimatāmasmi tejastejasvināmaham
balaṁ balavatāṁ cāhaṁ kāmarāgavivarjitam dharmāviruddho bhūteṣu kāmo'smi bharatarṣabha
(Ch.7/10-11)

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५३ ~~आज अपराह्न मनिहारी के श्री श्यामनारायण~~
~~राय - शिक्षक श्री राम दिनेश राय के मित्र पहुँच गये।~~
~~एक लेटर भी साथ था।~~
~~प्रमोद कुमार तथा हेवाम आदि के चले जाने से गाड़ी कष्ट है।~~
~~कई दिनों से बैलगाड़ी रामाश्रम (तिलरा) पहुँचे उदयगामी~~
~~केदार के भोजन आदि - जलपान आदि, चार दिन हो गये।~~
~~किसी का पता नहीं।~~
~~श्री श्यामनारायण जी से पता चला कि मनिहारी से मेरे~~
~~चले आने के बाद - मामी के श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, कृषिपदा-~~
~~धिकारी पहुँचने पर, मेरे संबंध में पूछताछ करते थे।~~
~~उनकी बड़ी बहन की शादी है, बहनोई लेक्चरर प्रतिष्ठ हैं।~~

निरन्तर चलनेके कारण ही सूर्य वन्दनीय हैं।

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये। मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि। १२।
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्। मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्। १३।

ye caiva sāttvikā bhāvā rājasāstāmasāśca ye matta eveti tānviddhi na tvahaṁ teṣu te mayi
tribhirguṇamayairbhāvairebhiḥ sarvamidaṁ jagat mohitaṁ nābhijānāti māmebhyaḥ paramavyayam
(Ch.7/12-13)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३ आज भी वीरपुर से दोपहर तक कोई नहीं आया।
मैंने तो कटिहार कलेक्टर को लिखा है, जो श्रद्धासमन्वित नहीं रहता
है किन्तु यह व्यवहार स्वाभाविक है।
चाह से पानी का परस्पर सम्बन्ध है कल सायंकाल से ही पानी का
भारी संकट है। आज प्रातः किसी प्रकार ठीक व्यवस्था कर श्रम
मिल रहा जा रहा है।
आज रात को हरेराम तथा प्रेमनारायण-सहसा का
से आ पहुँचे। मनोदकुमार के संबंध में कोई सूचना नहीं थी
इन दोनों से। दोनों प्रथम श्रेणी के तिकड़मी और महत्वाकांक्षी
तथा सुखभोगी हैं। मैं क्या कहूँ। यह दुनिया निराली है।

हमारा सम्मान हो, इसी चाहने हमारा अपमान किया है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।१४।
न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः। माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः।१५।

daivī hyeṣā guṇamayī mama māyā duratyayā māmeva ye prapadyante māyāmetāṁ taranti te
na māṁ duṣkṛtino mūḍhāḥ prapadyante narādhamāḥ māyayāpahṛtajñānā āsuraṁ bhāvamāśritāḥ
(Ch.7/14-15)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३ — अमावास्या

आज मुंबई के पते पर वरिष्ठ अधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद सिंह को पत्र लिखा। एक रजिस्ट्री पत्र १० दिन पहले आ चुका है। हाईकोर्ट [illegible] का पूरा पता मेरे पास नहीं है अतः मुजफ्फरपुर के [illegible] के द्वारा उन्हें लिफाफे में [illegible] पत्र भेजा। श्री [illegible] प्रसाद सिंह को भी [illegible] बुलाया [illegible] [illegible] किया। लिफाफा [illegible] [illegible] मिश्री-आम आदि लेकर [illegible] [illegible] को [illegible] भेजवाया।

[illegible] [illegible] प्रमोदकुमार के [illegible] अनुपस्थित रहने से मन स्वभावतः बहुत [illegible] है।

× × ×

आज लगभग ९ बजे [illegible] के [illegible] राय का सुयोग्य पुत्र उमेश कुमार राय [illegible] पहुंचा। बहुत दिनों से मिलने की उत्कंठा थी। [illegible] में [illegible] [illegible] में काम करते हैं। [illegible] की [illegible] की [illegible] है। [illegible] [illegible] चाहता है। [illegible] सेवा होगी। उसने [illegible] से ५०० [illegible] दिये। [illegible] [illegible] [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] के मूर्तिमान स्वरूप हैं।

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन। आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ। १६।
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते। प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः। १७।

caturvidhā bhajante māṁ janāḥ sukṛtino'rjuna ārto jijñāsurarthārthī jñānī ca bharatarṣabha
teṣāṁ jñānī nityayukta ekabhaktirviśiṣyate priyo hi jñānino'tyarthamahaṁ sa ca mama priyaḥ
(Ch.7/16-17)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३

बड़े तिकड़म, दाँवपेंच और धूर्तता के तरीके से चोर असत्यवादी स्वामी मनीषानंद-वीरूगोविन्द को तैयार हुए किसके। उन पर विश्वास करना उचित नहीं। इनमें भी कच्चाई बहुत है, ढोंग रचते हैं। पं० ज्ञानकी ठीक प्रक्रिया अब तक सीख नहीं सके। कैसे सीखें, उनमें रुचि ही नहीं है। मैंने उन्हें प्रमोदकुमार को शिक्षापत्र और रु० ७० २० पैसे मनिआर्डर भी किया। देख रुपये बच्चा कर लें- इच्छा पैदा करे। मनीषानंद को परिवार की बेहद मोहममता है- बालक पत्नी-पुत्र पौत्र सबका मौके मौके से दावा करते हैं, उन्हें मदद भी पहुँचाते हैं। माया-नेतुवा के बंदर की तरह सबको नचाती है। "जद मरकट इव सबहिं नचावत। राम खगेस बेद अस गावत"॥ जो जैसा करेगा वैसा फल पावेगा। आज प्रातः मैंने भागलपुर के लोकोरी-श्री सुरेन्द्रनाथ राय, ओमशान्ति ओमिनीमा (बनुआ) को विस्तार से व्यक्तिगत पत्र लिखकर ९ जुलाई की गुरुपूर्णिमा पर आगामी आश्रम बैठक में आने का निवेदन किया। आज भी प्राध्यापक "अन्तक" श्री हरिहर के "सम्बन्ध" सम्बन्धी उनके पत्र का भी उत्तर दिया। पत्र १८.६.९८ को लिखा और प्रेषित है।

आज अपराह्न पाँच बजे प्रमोदकुमार पाण्डेय और बच्चे मिल आये। मन हर्षित हुआ मिली। दूध तथा जलपान करके २५ रुपये दिये। शिष्यों से प्राप्त वस्त्रादि दोनों पति-पत्नी को सौंप दिया।

रुपयोंको सबसे बढ़िया मानना बुद्धि भ्रष्ट होनेका लक्षण है।

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ।१८।
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।१९।

udārāḥ sarva evaite jñānī tvātmaiva me matam āsthitaḥ sa hi yuktātmā māmevānuttamāṁ gatim
bahūnāṁ janmanāmante jñānavānmāṁ prapadyate vāsudevaḥ sarvamiti sa mahātmā sudurlabhaḥ
(Ch.7/18-19)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३ श्रीजगदीश-रथयात्रा

~~आज पं॰ राजेश पाण्डेय - सिगरा निवासी समझकर [illegible] श्री मिथिलेश शर्मा को~~
~~पत्र लिखा। बर्तन मलनेवाली को एक साड़ी और ८० रुपये देना~~
~~दिया गया। प्रमोद जी छोटी बच्ची के इण्टरमीडिएट के लिये ४२० रुपये~~
~~एक सौ बीस रुपये दिये। रू २०८ रुपये (तीन हजार दो सौ)।~~
~~हनुमान घाट पोस्ट आफिस में, 524909 खाते में रुपये जमा~~
~~करवाकर रखनेकी व्यवस्था किया। "कर्मकाण्ड" की बहुप्रचलित~~
~~पुस्तक - "निर्णयसिंधु" उसकी टीका - लाने का निश्चय किया,~~
~~Asia-American Who's who के लिये भी ७४० रुपये बैंक ड्राफ्ट~~
~~द्वारा भेजने का निर्णय - काफी दिनों विचार के बाद हुआ।~~

किसीके अहितकी भावना करना अपने अहितको निमन्त्रण देना है।

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञाना: प्रपद्यन्तेऽन्यदेवता: । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियता: स्वया । २० ।
यो यो यां यां तनुं भक्त: श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् । २१ ।

kāmaistaistairhṛtajñānāḥ prapadyante'nyadevatāḥ taṁ taṁ niyamamāsthāya prakṛtyā niyatāḥ svayā
yo yo yāṁ yāṁ tanuṁ bhaktaḥ śraddhayārcitumicchati tasya tasyācalāṁ śraddhāṁ tāmeva vidadhāmyaham
(Ch.7/20-21)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३ आज बटुक जी पूजा के ३५०० रु कतीज सेट. एमुमाकफार
सचिन पास आजिम सौरे भेजा किया - पहले का ५०५५ रुपये थे। ३५४६२११
रुपये वर्षाकाल जौलिगव भुगतान किये हो गये। दिल्ली त्रिपुरारी राय
५०००) जी. आराम बाग-दिल्ली को अपेक्षर्पव पत्रानुसार ५०००) चेक द्वारा
से भेजा। पांच रुपये धनादेश प्रफुल्ल जी। कुंवर के निर्देश पत्र की
प्राप्ति सौभाग्य पत्र प्राप्त हुई। ... सिंह के एक माइस्सा ...
मूंजा - ... कार्य हुआ। ... के फोन से पता चला
कि वे ५ जुलाई को काशी पधारेंगे। आज राजगुरु ...
डा० गोविन्दनाथ शर्मा आदि के पत्र ... किये गये।

आषाढ़ शुक्ल ४, रविवार, 28 JUNE

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४

आज कुंवर प्रभुनारायण सिंह, मछलीपुर - नौरियाना से लौटकर
कार मठ में देवीजी की आरती ... सुजाता ... समय
बाराबंकी शुक्ल - टेलीफोन, उच्चाधिकारी आ गये। ...
दोनों की ओर से आना और दिनांक ... किया गया। टेलीफोन किया ...
... पुत्र ने ... अपनी ओर ...
देकर ... टेलीफोन का ... हो गये।
प्रातः माता जी ... प्रसाद सिंह के ...
मालूम हुआ कि ५ जुलाई के बाद काशी नहीं आ पायेंगे। ...
अस्वस्थ होकर ५ जुलाई के बाद मुंबई आ जायें। ...
करनी होगी। ५ जुलाई को ...
करनी होगी। और राजनारायण शर्मा ... परस्पर होने के
आशीर्वाद ... पत्र लिखा।

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते। लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्। २२।
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्। देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि। २३।

sa tayā śraddhayā yuktastasyārādhanamīhate labhate ca tataḥ kāmānmayaiva vihitānhi tān
antavattu phalaṁ teṣāṁ tadbhavatyalpamedhasām devāndevayajo yānti madbhaktā yānti māmapi
(Ch.7/22-23)

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४ आज लिफाफा एक [illegible] को दिया।
वसुधा के निमित्त शकुन्तला को पत्र लिखकर गंगाजी को भेजे तथा
उसी के [illegible] को भी "[illegible]" की चिन्ता [illegible]
भेज दी गई। [illegible] सिंह [illegible]।

* * *

भौतिक उपलब्धियों से आत्मा की प्यास बुझती नहीं,
आत्मा जब तक अतृप्त रहेगी तब तक व्यक्ति शान्ति नहीं प्राप्त
कर सकता। शान्ति का न प्राप्त होना जीवन की विफलता है।
इन विफलताओं को रोकने के लिये अपने भीतर की यात्रा पर
चलना आवश्यक है।
व्यक्ति का उत्थान सदाचार का आचरण करने एवं भगवद्-भक्ति
का अनुसरण करने में ही निहित है। आत्मा की प्यास इसी उपाय से
मिट सकती है। इसीलिये उच्चकोटि के चिन्तकों, मनीषियों एवं
सन्तों ने प्रेम का मार्ग न अपनाकर श्रेय का मार्ग अपनाने पर
बल दिया है जिससे व्यक्ति का कल्याण हो सके।
वास्तव में यह मानव शरीर मनुष्य के लिये एक वरदान है।
भगवान की अहैतुकी कृपा के फलस्वरूप ही कभी-कभी
किसी जीव को यह शरीर प्राप्त किया जाता है। इसके पीछे यही
एक उद्देश्य होता है कि मनुष्य भगवत् प्राप्ति कर ले। मनुष्य को
इसीलिये अन्य प्राणियों की अपेक्षा विवेक बुद्धि प्रदान की गई है कि
वह अपने विवेक का प्रयोग करके सही मार्ग पर चलकर भगवत्प्राप्ति
कर ले।
प्रत्येक व्यक्ति दुःख से छुटकारा पाने के लिये तड़प रहा है और
सुख में तल्लीन हो जाने के लिये आतुर-व्याकुल है। तो इसका उपाय
क्या है?

स्वार्थ और अभिमानका त्याग करनेसे साधुता आती है।

इसका एक वस्तुतः और व्यापक रूप से सर्वोपरि उपाय है
सत्संग।

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः। परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्। २४।
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः। मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्। २५।

avyaktaṁ vyaktimāpannaṁ manyante māmabuddhayaḥ paraṁ bhāvamajānanto mamāvyayamanuttamam
nāhaṁ prakāśaḥ sarvasya yogamāyāsamāvṛtaḥ mūḍho'yaṁ nābhijānāti loko māmajamavyayam
(Ch.7/24-25)

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४

सत्संग के बिना भगवत्कथा का श्रवण नहीं हो सकता। भगवत्कथा ही है जो व्यक्ति के मोह का नाश कर देती है। फिर भगवान् से ही मोह-निशा भंग होती है, यथार्थ सत्संग रूपी सूर्य का उदय होता है और व्यक्ति जीवन के उस मंगलमय प्रभात का दर्शन करता है जिसमें विवेक की किरणें उसके जीवन का अँधेरा दूर कर उसे मर्म का तत्वबोध कराती हैं।

* * * *

महात्माओंका सङ्ग दुर्लभ, अगम्य और अमोघ है।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्। ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः।२८।
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये। ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम्।२९।

yeṣāṁ tvantagataṁ pāpaṁ janānāṁ puṇyakarmaṇām te dvandvamohanirmuktā bhajante māṁ dṛḍhavratāḥ
jarāmaraṇamokṣāya māmāśritya yatanti ye te brahma tadviduḥ kṛtsnamadhyātmaṁ karma cākhilam
(Ch.7/28-29)

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।५४ ~~गैस सिलिंडर के लिये पचास रुपये दिये गये।~~
~~चीनी के लिये पच्चीस एकसौ रुपये। दूध पन्द्रह रुपये।~~

जो विष पिये वही शिव है।

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः। प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः। ३०।

sādhibhūtādhidaivaṁ māṁ sādhiyajñaṁ ca ye viduḥ prayāṇakāle'pi ca māṁ te viduryuktacetasaḥ
(Ch.7/30)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः।७।

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।५४ कचहरी रा० प्र० सिंह, अधिवक्ता से [illegible] से
सम्पर्क [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

ठगो मत, भले ही ठगा जाओ।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथाष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम। अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते।१।
अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन। प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः।२।

arjuna uvāca

kiṁ tadbrahma kimadhyātmaṁ kiṁ karma puruṣottama adhibhūtaṁ ca kiṁ proktamadhidaivaṁ kimucyate
adhiyajñaḥ kathaṁ ko'tra dehe'sminmadhusūdana prayāṇakāle ca kathaṁ jñeyo'si niyatātmabhiḥ
(Ch.8/1-2)

सूर्यो० ५।७, सूर्या० ६।५४ द्रव्य २० बीस रुपये। तरकारी आदि १० रुपये।
बेहद खर्च होता है, पर लगती है किया क्या जाय?
मुजफ्फरपुर से का० चन्द्रशेखर मिश्र से बातें करने में फंसिए
इस कारण लगा।
रात में ग्यारह बजे वर्षा हुई।
आंगन से अपने विश्राम कक्ष में जाना पड़ा। साढ़े पांच बजे जग
गये। नित्यक्रिया आदि सम्पन्न किया।

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते। भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसञ्ज्ञितः।३।
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम्। अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर।४।

śrībhagavānuvāca

akṣaraṁ brahma paramaṁ svabhāvo'dhyātmamucyate bhūtabhāvodbhavakaro visargaḥ karmasañjñitaḥ
adhibhūtaṁ kṣaro bhāvaḥ puruṣaścādhidaivatam adhiyajño'hamevātra dehe dehabhṛtāṁ vara

(Ch.8/3-4)

सूर्यो० ५।१७, सूर्या० ६।५४ — **हरिशयनी एकादशीव्रत**

बरसात आने की तैयारी है। [illegible] का [illegible]। [illegible]
लेना शुरू और आवश्यक कामों [illegible] करने के लिये।

कथनी करनी एक करो।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्। १३।
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः। तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः। १४।

omityekākṣaraṁ brahma vyāharanmāmanusmaran yaḥ prayāti tyajandehaṁ sa yāti paramāṁ gatim
ananyacetāḥ satataṁ yo māṁ smarati nityaśaḥ tasyāhaṁ sulabhaḥ pārtha nityayuktasya yoginaḥ
(Ch.8/13-14)

सूर्यो० ५।९, सूर्या० ६।५४ आज वैदिक कर्मकांड के अनुसार सम्पन्न
गुरुपूजा के महत्व पर प्रकाश डालते मानव के
अनुदान का मार्ग प्रशस्त करने वाली गुरुपूर्णिमा का
पर्व। बहुत से विभिन्न विद्वानों [illegible] राजनीतिज्ञ
श्री इन्द्रासनलाल चौधरी · डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा,
और वेदमूर्ति राजेन्द्र शर्मा सपत्नीक आये। [illegible]
शर्मा बहुत श्रद्धापूर्वक [illegible] और [illegible]
पूजा विधान [illegible] करके दीक्षा ग्रहण की।
[illegible] चन्द्रिका शर्मा। कुसुम [illegible] जगदम्बा शर्मा
आदि भी आये। भोजनालय शर्मा [illegible] से कृष्णजी
भी आये हैं। डा० [illegible] मिश्र जी भी आये
थे। राजगुरु मठ [illegible] महत्वपूर्ण बैठक हुई और
पूरी बहस और [illegible] के बाद [illegible] के
[illegible] हुए। पूजा के बहुत [illegible] मिले। प्रमोदकुमार [illegible]
आना [illegible] गये। [illegible]
[illegible]। [illegible] बहुत [illegible]। [illegible]
[illegible]।
× [illegible] × [illegible] × [illegible]
[illegible]।

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्। नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः। १५।
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन। मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते। १६।

māmupetya punarjanma duḥkhālayamaśāśvatam nāpnuvanti mahātmānaḥ saṁsiddhiṁ paramāṁ gatāḥ
ābrahmabhuvanāllokāḥ punarāvartino'rjuna māmupetya tu kaunteya punarjanma na vidyate
(Ch.8/15-16)

सूर्यो० ५।९, सूर्या० ६।५४

आज प्रेमनारायण [illegible] आश्रम के [illegible] अनिलकुमार को प्राणप्रतिष्ठा के प्रासंगिक भेजने के संबंध में पत्र भेजा।
[illegible] परसों - तरकारी [illegible]

आज सहसा अचानक कौशलनारायण जी प्रयाग से आ पहुँचे। वे काशीराज के दरबार में आये थे। [illegible] के संबंध में [illegible] आज वहाँ आ जाते। वे स्वयं मध्य राज [illegible] राजकुमारी हैं, [illegible] उनको [illegible] कहना नहीं चाहते। उन्होंने पत्नी या राजकुमार [illegible] परिस्थिति को [illegible] पर [illegible] के लिये आवेदन [illegible] करने का आग्रह किया।

श्रावण कृष्ण ३, रविवार, 12 JULY

सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।५४

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज अजीतपुर के शिवकुमार पाण्डेय को उनके [illegible] पाण्डेय और रामकुमार के विवाह [illegible] के असामाजिक [illegible] स्थिति के [illegible] एवं आत्मिक शांति के लिये [illegible] पत्र लिखा।
श्री रामनरेश पांडे को [illegible] पत्र भेजकर उनकी [illegible] से [illegible] उत्साहवर्धन किया। [illegible] तरकारी [illegible]।

सहस्त्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः । रात्रिं युगसहस्त्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः । १७ ।
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे । रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसञ्ज्ञके । १८ ।

sahasrayugaparyantamaharyadbrahmaṇo viduḥ rātriṁ yugasahasrāntāṁ te'horātravido janāḥ
avyaktādvyaktayaḥ sarvāḥ prabhavantyaharāgame rātryāgame pralīyante tatraivāvyaktasañjñake
(Ch.8/17-18)

सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।५३

आज ब्रजेशबिहारी त्रिपाठी का [illegible] श्री प्रमोदकुमार दीक्षित के परिश्रम और प्रयास से सुसम्पन्न हुआ। श्री गुरुप्रसाद राय उनके गृह [illegible] आदि के का [illegible]। ये पंडित-परिवार के उपयुक्त धृति स्वामी और समाज की मर्यादापालन की क्षमता से रहित हैं।

आज राजगुरु के पूर्व परिचित श्री ब्रजकिशोर [illegible] ने मुझे आकर [illegible] अनुरोध करने से प्रहरी रूप में रहने को। क्योंकि बेटे प्रमोदकुमार के बाहर जाने में, स्थान में कोई उत्तरदायी उत्तम व्यक्ति रहता नहीं।

प्रमोद ने आग्रह किया कि वे दस हजार रुपये अरुणसिंह को सत्संग भवन के [illegible] (कंपाउंड) सीढ़ियों की [illegible] [illegible] लगाने के संबंध में [illegible] के अनुसार ये राशि उनको देने को कहा।

[illegible] इतना [illegible] हजार [illegible]। [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] शर्मा के लिये ४९०० रुपये [illegible] रही है।

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते। रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे।१९।
परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः। यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।२०।

bhūtagrāmaḥ sa evāyaṁ bhūtvā bhūtvā pralīyate rātryāgame'vaśaḥ pārtha prabhavatyaharāgame
parastasmāttu bhāvo'nyo'vyakto'vyaktātsanātanaḥ yaḥ sa sarveṣu bhūteṣu naśyatsu na vinaśyati
(Ch.8/19-20)

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।५३ अब तक वकल से प्रान्तीय पेंशन के पैसे नहीं आ सके। सूचना भी नहीं मिली। शाम को भी खबर नहीं मिली।

[illegible] पुत्र [illegible] कारण [illegible] उत्पन्न [illegible] पैदा करता है। [illegible] बच्चों को [illegible] के साथ [illegible] के [illegible] में [illegible] है। [illegible] के [illegible] दिल्ली यात्रा का [illegible] करने की हामी भरता है।

गार्गी मैत्रेयी और [illegible] के लिये कुछ [illegible] [illegible] दिया।

[illegible] पहले [illegible] दिया [illegible] को दिया।

निष्काम–बुद्धि ही देवको बुला सकती है।

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम् । यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम । २१ ।
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया । यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् । २२ ।

avyakto'kṣara ityuktastamāhuḥ paramāṁ gatim yaṁ prāpya na nivartante taddhāma paramaṁ mama
puruṣaḥ sa paraḥ pārtha bhaktyā labhyastvananyayā yasyāntaḥsthāni bhūtāni yena sarvamidaṁ tatam
(Ch.8/21-22)

सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।५३

आज मैत्रेयी-गार्गी के वैदिक आध्यात्मिक युग के रूप में १९०८ [illegible] - अन्नपूर्णा देवी इन बच्चियों की माता को दे दिया।

जितेन्द्रिय बनो।

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः। प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ। २३।
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः। २४।

yatra kāle tvanāvṛttimāvṛttiṁ caiva yoginaḥ prayātā yānti taṁ kālaṁ vakṣyāmi bharatarṣabha
agnirjyotirahaḥ śuklaḥ ṣaṇmāsā uttarāyaṇam tatra prayātā gacchanti brahma brahmavido janāḥ
(Ch.8/23-24)

सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।५२ आज कल्पपुरा के खड़गपाल सिंह श्री
बनवारी से आ पहुँचे। इकतीस सौ रुपये ले आये।
पच्चीस सौ रुपये उन्हें वकील ठाकुर रघुनाथसिंह सबलगढ़
को जारी [illegible] करने के लिये दिया। [illegible] उन्हें
मिले जो प्रमोद के [illegible] के मद में जमा करने
का किया [illegible] का लोभ अधिक है। वे सदा
स्वार्थसिद्धि का दृष्टिकोण रखते हुए काम करते हैं।
[illegible] में [illegible] पच्चीस रुपये
अधिक वसूल किया।
कल्पपुरा भी [illegible] करने में [illegible] के
के मामले को भूल जाते हैं यह अनुचित है।
[illegible] सार्वजनिक [illegible] है। [illegible] से
रहते हुए स्वार्थी दृष्टिकोण से इसका विकास
नहीं हो सकता।

आनन्दी स्वभाव ही सबसे श्रेष्ठ दवाका काम देता है।

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् । तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते । २५ ।
शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते । एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः । २६ ।

dhūmo rātristathā kṛṣṇaḥ ṣaṇmāsā dakṣiṇāyanam tatra cāndramasaṁ jyotiryogī prāpya nivartate
śuklakṛṣṇe gatī hyete jagataḥ śāśvate mate ekayā yātyanāvṛttimanyayāvartate punaḥ
(Ch.8/25-26)

सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।५२ आज भी सफाइयाँ हुई। शर्मा जी रहे और
पूर्वी भाग के गड्ढे की सफाई में प्रमोद कुमार के
साथ मिलकर कठिन परिश्रम किया। फिर गड्ढे की
कमरा - जो अतिथि गृह बना है - धुल न सके। बालू गारे
और बड़े लकड़-खपड़ गड्ढे से पानी रोक कर चल
में ही का रुकावट है।
मैंने भी कुछ सफाई का भी प्रयास की पहल जारी किया।
वर्षा की झड़ी से कोई विशेष कार्य नहीं हो सका।
आज नारायण को 100 रुपये खर्च के लिए दिया। मिस्त्री 12.50
में जल पान लिए। बाकी चार हजार में। श्री लाल 20.00
का - मैंने भी पाना कलिनो - मार्ग में जलपान करने के हेतु।

प्रेम प्रेमका और द्वेष द्वेषका जनक है।

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन । तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन । २७ ।
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम् । अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् । २८ ।

naite sṛtī pārtha jānanyogī muhyati kaścana tasmātsarveṣu kāleṣu yogayukto bhavārjuna
vedeṣu yajñeṣu tapaḥsu caiva dāneṣu yatpuṇyaphalaṁ pradiṣṭam atyeti tatsarvamidaṁ viditvā yogī paraṁ sthānamupaiti cādyam

(Ch.8/27-28)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः । ८ ।

सूर्यो० ५ । १३, सूर्या० ६ । ५२

आज [illegible] शर्मा फरुखाबाद गये।
जाते समय उनसे भेंट नहीं हो पायी।
आज [illegible] पोस्ट ऑफिस के खाता से [illegible] रुपये
[illegible] [illegible] के लिये निकाला।

श्रावण कृष्ण ११, रविवार, 19 JULY

सूर्यो० ५ । १३, सूर्या० ६ । ५१

कामदा एकादशीव्रत

आज मुंबई टेलीफोन से सम्पर्क करके
आर० पी० सिंह ने स्पष्ट [illegible] करते हुए [illegible] के नाते
[illegible] याग स्थगित करने की बात बतायी।
अतः पूर्व निर्धारित याग स्थगित कर दी गई।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे । ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ।१।
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् । प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ।२।

śrībhagavānuvāca

idaṁ tu te guhyatamaṁ pravakṣyāmyanasūyave jñānaṁ vijñānasahitaṁ yajjñātvā mokṣyase'śubhāt
rājavidyā rājaguhyaṁ pavitramidamuttamam pratyakṣāvagamaṁ dharmyaṁ susukhaṁ kartumavyayam

(Ch.9/1-2)

सूर्यो० ५।१४, सूर्या० ६।५१ आज प्रात: ८ बजे सिद्धेश्वरी प्रसाद सिंह और
मन्ना बाबू - अरुण सिंह और भौजी के घर गये। प्रमोदकुमार तो
स्वयं थे ही। [illegible] स्वागत की बात [illegible] - व प्रमोदकुमार
के कालेज [illegible] की बात की।
भाईजी को अनुरोधपूर्वक - सत्संग भवन के [illegible] की बात
कही - और उनके कार्यालय प्रभारी के पास [illegible] में ग्यारह
हजार रुपये निर्माण के लिये जमा कर दिया।
प्रमोद ने बड़ी कृपा की और [illegible] के लिये गाँव
को तैयार हो गये।

x x x

आज सहसा श्रीकान्त प्रधान - [illegible] [illegible] देवरिया
गाँव के अभिनवकुमार आ पहुँचे। रहे हैं।
श्री [illegible] राय; [illegible] के गाँव [illegible] रेलवे [illegible]
वाले [illegible] दारोगा आ पहुँचे। वे भी [illegible] गाड़ी की
भेंट - कार्यक्रम में आये।
आज प्रमोद को सेवा के लिये [illegible]
आश्वासन मिल गया। बनारस के [illegible]
[illegible] वाले - उस विभाग में सेवक हैं; उन्होंने
[illegible] जी कार्यों का आश्वासन दिया है। [illegible]
में [illegible] रहे हैं।
आज तिवारी [illegible] के [illegible] पारस पाडे पत्नी के साथ
[illegible] आये। [illegible] भी थी। [illegible]
[illegible] दिया।

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप। अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि। ३।
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना। मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः। ४।

aśraddadhānāḥ puruṣā dharmasyāsya parantapa aprāpya māṁ nivartante mṛtyusaṁsāravartmani
mayā tatamidaṁ sarvaṁ jagadavyaktamūrtinā matsthāni sarvabhūtāni na cāhaṁ teṣvavasthitaḥ
(Ch.9/3-4)

सूर्यो० ५।१४, सूर्या० ६।५१ **भौमप्रदोष**

आज बच्चुजाई के गोपाल के यहाँ गई और उनकी
साड़ी चुड़ि और की आरती। बहुत ही जलपान किया
गिरिजा को पूजा दिया। सब पैसे दूध के लिये मैंने दे
[illegible] पति को दूँगा।
आज भी श्रीकान्त आगमन की जोड़ी पड़ी रही।
श्री रामेश्वर को रजिस्टर भेजा, क्योंकि उनके
लेवा जुन लिखी उनका [illegible] के साथ आई
वे करते और मुझे कहा लिखा कि शिवाला में
रजिस्ट्री आई थी। यह ठीक न सकता। जो लो भी
बाते मालूम हुई।

ईश्वरसे सदा भय करो।

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्। भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः।५।
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्। तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय।६।

na ca matsthāni bhūtāni paśya me ycgamaiśvaram bhūtabhṃna ca bhūtastho mamātmā bhūtabhāvanaḥ
yathākāśasthito nityaṁ vāyuḥ sarvatrago mahān tathā sarvāṇi bhūtāni matsthānītyupadhāraya
(Ch.9/5-6)

सूर्यो० ५।१५, सूर्या० ६।५०

आज श्रीमान - अमितकुमार जी के यहाँ गये। श्रीमान - अमित जी के पिता जी आनन्दमयी - संघ आश्रम में एक - कमरा दे दिये हैं जिसमें - रामकृष्णानन्द गये।

x x x

" मोहन का सन्देश " नामक पुस्तक का हिन्दी संस्करण प्रेस में छप रहा है। एक महीने में प्रकाशन कार्य सम्पन्न हो जायेगा। शिवरात्री राम का जन्मदेश आनेवाला है।

अपनेपनको दूसरोंके लिये मिटा देना ही त्याग है।

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् । कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ।७।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः । भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ।८।

sarvabhūtāni kaunteya prakṛtiṁ yānti māmikām kalpakṣaye punastāni kalpādau visṛjāmyaham
prakṛtiṁ svāmavaṣṭabhya visṛjāmi punaḥ punaḥ bhūtagrāmamimaṁ kṛtsnamavaśaṁ prakṛtervaśāt
(Ch.9/7-8)

सूर्यो० ५।१५, सूर्या० ६।५० — अमावास्या

आज दिल्ली से त्रिपुरारि शरण पाण्डेय वापस आ गया। यह उत्तम और अध्यात्मनिष्ठ युवक है। उन्हें उत्कृष्ट पद मिल गया है तो उन्हें स्मरण रखना है, पर गलतफहमी कर रहे हैं कि सद्भावना की उपेक्षा नहीं करना चाहिये।

आज सायंकाल तबियत खराब थी। भोजन-जलपान कुछ नहीं किया। श्री त्रिपाठी कर्मयोगी जी "अध्यात्म संगति" के नये संस्करण के "आमुख" प्रकाशकीय वक्तव्य के अतिरिक्त परिशिष्ट (धर्म-विचार-दार्शनिक) शीर्षक का प्रारूप तैयार करके प्रेस को मुद्रण के लिये दिया गया।

* * *

बहुत धैर्य, संयम और सहनशीलता के सहारे जीवन के शेष समय को शान्तिपूर्वक बिताना या पूरा करना है। साथ ही प्रकाशन-वृत्ति-योजना के संकल्पित कार्यों को पूरा करने में क्रियाशील रहना है।

अपनेसे सबको बड़ा समझो।

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय। उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु। ९।
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते। १०।

na ca māṁ tāni karmāṇi nibadhnanti dhanañjaya udāsīnavadāsīnamasaktaṁ teṣu karmasu
mayādhyakṣeṇa prakṛtiḥ sūyate sacarācaram hetunānena kaunteya jagadviparivartate
(Ch.9/9-10)

सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।४९

आज अर्जुनसिंह · अर्जुन आदि लोग और
कुमेरसिंह आदि बही · दवाएं आयीं। तीन बजे तक कोई भजन और
चिन्तन में उठ बैठे। नींद पूरी नहीं होने से। जो काम एक घंटे में
करता हूँ उसमें पौने दो घंटे लगा।

आज कुंवरडीह के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद सिंह मानी वाले
को सूचनार्थ पत्र लिखा। वैनीपुर के श्री राजेन्द्र शर्मा न्याय सदस्य
उपभोक्ता तथा अधिवक्ता शिष्य को आवश्यक पत्र तथा दीक्षांत
की टिप्पणी युक्त पत्र की प्रति भेजा। २ अगस्त को आने मिलने
के लिए लिखा।

×× लेखकों के औजार ×× खुशवंत सिंह

(क) विश्वकोश -
(ख) एक अच्छा शब्दकोश
(ग) " हिस्टोरिकल डिक्शनरी आफ इंडिया "
संकलन कर्ता - सुरजीत मानसिंह -
"विज्ञान पुस्तक"

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्। परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।११।
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः। राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः।१२।

avajānanti māṁ mūḍhā mānuṣīṁ tanumāśritam paraṁ bhāvamajānanto mama bhūtamaheśvaram
moghāśā moghakarmāṇo moghajñānā vicetasaḥ rākṣasīmāsurīṁ caiva prakṛtiṁ mohinīṁ śritāḥ
(Ch.9/11-12)

सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।४९

~~आज भोजपुरी कहानी-संग्रह 'नेह के डोर' [illegible]~~
~~इसके संकलन की प्रकाशकीय भूमिका [illegible] ।~~
~~पी० सिंह [illegible] [illegible] को~~
~~दिया गया । यह भोजपुरी के [illegible] में [illegible] है ।~~
~~[illegible] इसके [illegible] ।~~
~~प्रो० [illegible] - [illegible] - पत्र [illegible]~~
~~की माता के दिवंगत होने पर उन्हें संवेदना-पत्र लिखकर~~
भेज दिया ।

श्रावण शुक्ल ३, रविवार, 26 JULY

सूर्यो० ५।१७, सूर्या० ६।४८

आज [illegible] [illegible] आये । राधेश्याम
[illegible] की पुस्तक - '[illegible]'
[illegible] । उन्हें सहभागिता-सहानुभूति की [illegible] बातें होती
रहीं । [illegible] [illegible] की [illegible] भी
प्रसंगतः चर्चा होती रही । [illegible] के
[illegible] में भी बातें होती रहीं ।
अपराह्न में वापस गये । पं० रामनाथ [illegible]
कुछ संदेश कहकर गये ।

अ० ९] श्रावण शुक्ल ४, सं० २०५५, सोमवार, JULY 27. 1998 [दिन २०८

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः। भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्। १३।
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः। नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते। १४।

mahātmānastu māṁ pārtha daivīṁ prakṛtimāśritāḥ bhajantyananyamanaso jñātvā bhūtādimavyayam
satataṁ kīrtayanto māṁ yatantaśca dṛḍhavratāḥ namasyantaśca māṁ bhaktyā nityayuktā upāsate
(Ch.9/13-14)

सूर्यो० ५।१७, सूर्या० ६।४८ आज [illegible] से [illegible] के [illegible] किनारे
पर प्रमोदकुमार और उनकी तीसरी कन्या के अन्नप्राशन संस्कार की
धार्मिक विधि सम्पन्न करने मे मदद किया।
आज भी मठ में माइकवाला सफाई का कुछ काम चलता
रहा। प्रमोदकुमार के भाई बड़े विकट ही राय स्वार्थी
दृष्टिकोण के हैं।
आज तबियत कुछ ढीली रही। प्रमोद ने सिर में
दर्द में तेल मालिश किया।

प्रबल धारणाके सामने कुछ भी असाध्य नहीं है।

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते। एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्।१५।
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्। मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्।१६।

jñānayajñena cāpyanye yajanto māmupāsate ekatvena pṛthaktvena bahudhā viśvatomukham
ahaṁ kraturahaṁ yajñaḥ svadhāhamahamauṣadham mantro'hamahamevājyamahamagnirahaṁ hutam
(Ch.9/15-16)

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।४७ — नागपञ्चमी

आज अन्नप्राशन एवं नामकरण का शुभकार्य
पं० गुलाब शर्मा पञ्चांगम- औरंगाबाद की देखरेख
में सम्पन्न हुआ।
आज डा० रामरूप, श्री लक्ष्मीधर शर्मा, डा० आनन्द और
डा० योगेन्द्र प्रसाद शर्मा ने पौरोहित्य कार्य का
अपनी मात्रा के परिष्कृत अभिप्राय से अध्ययन कराया।

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः। भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्।२५।
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।२६।

yānti devavratā devānpitṛīnyānti pitṛvratāḥ bhūtāni yānti bhūtejyā yānti madyājino'pi mām
patraṁ puṣpaṁ phalaṁ toyaṁ yo me bhaktyā prayacchati tadahaṁ bhaktyupahṛtamaśnāmi prayatātmanaḥ
(Ch.9/25-26)

सूर्यो० ५।२१, सूर्या० ६।४३ आज महाजागरी स्वच्छ प्रेस से प्रमोद कुमार के साथ
मैं बड़े प्रेम से प्रस्थान किया - प्रभुनारायण सिंह - महाराज [illegible] मेरे शिष्य
रोशन दास पंडित भी आये। गाड़ी में बड़े आराम से [illegible] हुआ -
चल रहा हूँ। बंगाल में [illegible] लोगों से [illegible] एक स्वच्छ दिन [illegible] -
आध्यात्मिक रुचि वाला [illegible] कुछ सीखने [illegible] आता है यह
[illegible] था। यह [illegible] में - [illegible] में स्वामी [illegible]
[illegible] में रहे, जो [illegible] शब्द स्वामी [illegible]
[illegible] से [illegible] में दीखते हैं [illegible]
हैं।

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् । २७ ।
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः । सन्न्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि । २८ ।

yatkaroṣi yadaśnāsi yajjuhoṣi dadāsi yat yattapasyasi kaunteya tatkuruṣva madarpaṇam
śubhāśubhaphalairevaṁ mokṣyase karmabandhanaiḥ sannyāsayogayuktātmā vimukto māmupaiṣyasi
(Ch.9/27-28)

सूर्यो० ५।२१, सूर्या० ६।४३ — **पुत्रदा एकादशीव्रत**

आज सायं पाँच बजे सायंकाल बाद स्टेशन पर उतरे। [illegible] चीफ अधिवक्ता श्री राजेन्द्रप्रसाद सिंह के पुत्र स्टेशन गाड़ी लेकर आये थे। उनके साथ उनकी गाड़ी में उनके मुख्य आवास स्थान पर पहुँचे। वहाँ जलपान ग्रहण किया। बाद में वकील साहब भी आ गये। वकील साहब के पैर को देखा और गत वर्ष उनको [illegible] है। [illegible] [illegible] में [illegible] है २ [illegible] २२ [illegible]। [illegible] है। सब कुछ अच्छा है।

बाद में गाड़ी से वकील साहब के दूसरे मकान में गए। [illegible] [illegible]। भोजन [illegible]। विश्राम किया।

सेवा करने वालेपर सन्त और भगवान्‌की कृपा बरसती है।

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः। ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्। २९।
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः। ३०।

samo'haṁ sarvabhūteṣu na me dveṣyo'sti na priyaḥ ye bhajanti tu māṁ bhaktyā mayi te teṣu cāpyaham
api cetsudurācāro bhajate māmananyabhāk sādhureva sa mantavyaḥ samyagvyavasito hi saḥ
(Ch.9/29-30)

सूर्यो० ५।२२, सूर्या० ६।४२ — प्रदोषव्रत

आज समूचा दिन विश्राम में, आँखों के [illegible]
में बीता। प्रमोद कुमार की चिकित्सा के संबंध में विचार
चल रहा है। डा० योगेन्द्र नाथ शर्मा, श्री [illegible] आदि
को पत्र लिखा गया।
स्वामी हरिदर्शनानन्द को बड़ी ईर्ष्या होती है। वे [illegible] के
[illegible] नहीं [illegible] में कहता रहा कि मैं दान
नहीं माँगूगा।
श्री [illegible] से पता चला कि [illegible] [illegible]
को [illegible] गंगा के महामण्डल में भी [illegible] करते हैं।
वैसे भी [illegible] की [illegible] नहीं। [illegible] बढ़ गई है।
गुरु पूर्णिमा पर तो आए ही नहीं। उल्टे [illegible]
कहा कि क्या जायें, वे गाली [illegible] डाँटते हैं, फटकारते हैं।
× × इस संबंध में मैंने उन्हें पत्र लिखना
उचित समझा कि वे अहंकार छोड़ सावधान हों। सारी
[illegible] भगवान की कृपा से [illegible] [illegible] है।
[illegible] [illegible] [illegible]?

सदाचार ही जीवन है।

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति। कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति। ३१।
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः। स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्। ३२।

kṣipraṁ bhavati dharmātmā śaśvacchāntiṁ nigacchati kaunteya pratijānīhi na me bhaktaḥ praṇaśyati
māṁ hi pārtha vyapāśritya ye'pi syuḥ pāpayonayaḥ striyo vaiśyāsthā śūdrāste'pi yānti paraṁ gatim
(Ch.9/31-32)

सूर्यो० ५।२३, सूर्यो० ६।४१ बटुकभट्ट के शिष्य मंगुदास को साधुवाद सूचक पत्र लिखा उनके स्वामी हरिकीर्तनानन्द के व्यवहार और मर्यादा विरोधी आचरण विचार के संबंध में भी चर्चा कर दिया।

कल दयाशंकर साहब भी साफ कहेंगे हनुमान का उद्घाटन होगा - पूजा और कथा होगी. वे उसी तैयारी में लगे हैं।

प्रमोद ने डा० शारदा प्रसाद सिंह - ज्ञानकली के कुल नियन्त्री - आवश्यकता एवं मनोवैज्ञानिक समाज सेवक उपासक से वार्ता के बारे - उनके उद्देश्य और आविष्कार की चर्चा की,
श्री महेश पाण्डेय सम्पादक सिफ़्ती - स्वावलम्बी के संबंध लेखकी और - सहानुभूति के अभिमत व्यक्त की),
वे प्रसन्न हुए और शिक्षा परिवार को श्री प्रमोद प्रसाद सिंह के साथ आशीर्वाद पर मिलने को बुलाया।

श्रुति और स्मृति द्वारा प्रतिपादित आचार ही उत्कृष्ट धर्म है।

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा । अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् । ३३ ।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु । मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः । ३४ ।

kiṁ punarbrāhmaṇāḥ puṇyā bhaktā rājarṣayastathā anityamasukhaṁ lokamimaṁ prāpya bhajasva mām
manmanā bhava madbhakto madyājī māṁ namaskuru māmevaiṣyasi yuktvaivamātmānaṁ matparāyaṇaḥ
(Ch.9/33-34)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः । ९ ।

सूर्यो० ५ । २३, सूर्या० ६ । ४१ **व्रत-पूर्णिमा**

आज स्वामीजी के अध्यक्षता में १०८ गजानन्द रावत उद्यान के स्थान की पूजा हुई। कथावाचन हुई। मैं भी प्रमोदकुमार के साथ चला गया। आधे घंटे से अधिक तक रुका रहा। ओमप्रकाश मिश्र - बिहार के आरा के प्रवाचक पंडित रामनारायण ने ऐसे ही कथा कही। पूजा भी उन्होंने ही की। मनमौजी ढंग से आया - हवन विधि विहीन हुआ। केवल दक्षिणा और भोजन के लोभ में उन्हें लगा देखा। कुछ देर बाद वकील साहब राजेन्द्रप्रसाद सिंह, मेरे भक्त आ पहुंचे। प्रमोदकुमार कहीं नीचे बैठे रह गये। कुछ मिनटों तक वकील साहब से बनारस - का वर्तमान आश्रमों के ... के विधि सम्मत मर्यादा के संबंध में चर्चा हुई। उन्होंने समय से मर्यादा बनाने तथा मठ के विकास और निर्माण के लिये भरपूर सहयोग देने तथा - अगले दो महीने के बाद - महर्षि के कैलाश कीर्ति के प्रारंभ करने का इच्छा व्यक्त किया।

प्रमोदकुमार की भावी व्यवस्था - राजगुरु मठ के भावि समारोह आदि के संबंध में विशद चर्चा हुई। वकील साहब इस संबंध में शुद्ध और श्रद्धा विश्वास पूर्ण चिन्तन में भावना के लिये सराहनीय हैं और आदर्श उदाहरण उपस्थित हैं।

भ्रम त्यागकर ज्ञान प्राप्त करो और ईश्वरके मार्गमें प्रविष्ट होओ।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः। यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया।१।
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः। अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः।२।

śrībhagavānuvāca

bhūya eva mahābāho śṛṇu me paramaṁ vacaḥ yatte'haṁ prīyamāṇāya vakṣyāmi hitakāmyayā
na me viduḥ suragaṇāḥ prabhavaṁ na maharṣayaḥ ahamādirhi devānāṁ maharṣīṇāṁ ca sarvaśaḥ
(Ch.10/1-2)

सूर्यो० ५।२४, सूर्या० ६।४० — **पूर्णिमा, श्रावणीकर्म (यज्ञोपवीत-पूजन), रक्षाबन्धन (भद्रारहित)**

डा० शारदाप्रसाद सिंह के यहाँ - कल उनका आज
श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह चिकित्सक के साथ आये हैं।
आज "मं०ना०बाबू" खेतान के पास डाक्टर साहब से
श्री प्रमोदकुमार के नाक-कान के आपरेशन की छुट्टी
ले ली है तथा कार्यक्रम बना।

डाक्टर साहब स्वयं आपको शुल्क भी नहीं
लेंगे। पर जो बाहर के उनके सहयोगी डाक्टर हैं, उन्हें
कुछ देना होगा।
पहला आपरेशन नाक का सोमवार को होगा।

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् । असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते । ३ ।
बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः । सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च । ४ ।

yo māmajamanādiṁ ca vetti lokamaheśvaram asammūḍhaḥ sa martyeṣu sarvapāpaiḥ pramucyate
buddhirjñānamasammohaḥ kṣamā satyaṁ damaḥ śamaḥ sukhaṁ duḥkhaṁ bhavo'bhāvo bhayaṁ cābhayameva ca
(Ch.10/3-4)

सूर्यो० ५ । २४, सूर्या० ६ । ४० — आजप्रात: पं. रामेश्वर पाण्डे रामपट्टी सिकटी.
तथा रामबेलिराय तथा योगेन्द्रनाथ शर्मा और रघुनाथ तिवारी
को पत्र लिखा। पहला लिफाफा शेष कार्ड द्वारा।
कल प्रात: से प्रमोदकुमार के आफिस का काम होगा।
रेल की इस आना जाना भी होता है।
श्री राजेन्द्र शर्मा - बेतिया को भी कार्ड पत्र लिखा।

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः । भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ।५।
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा । मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ।६।

ahiṁsā samatā tuṣṭistapo dānaṁ yaśo'yaśaḥ bhavanti bhāvā bhūtānāṁ matta eva pṛthagvidhāḥ
maharṣayaḥ sapta pūrve catvāro manavastathā madbhāvā mānasā jātā yeṣāṁ loka imāḥ prajāḥ
(Ch.10/5-6)

सूर्यो० ५।२५, सूर्या० ६।३९ — कज्जली तृतीया

आज प्रमोदकुमारजी नाक का ऑपरेशन करने हुआ। डा० ने बहुत श्रद्धा प्रेम से ऑपरेशन किया। वे बोलते भी रहे - मैंने [illegible] [illegible] [illegible] आया। मैं [illegible] [illegible] था। बीच [illegible] [illegible] उनसे बात करते रहे। [illegible] [illegible] [illegible] "सुख शब्द" [illegible] कैसे आश्वासन दिलाकर ठीक कर देंगे। नाक की हड्डी सड़ गई थी मर्ज ज्यादा हो गया था। दवा कुछ [illegible] [illegible] है। कुछ खून, पानी इत्यादि [illegible] पड़ेगी। डाक्टर जो [illegible] के नाम दिए हैं। उन्हें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ना अच्छा दान कर दिया था। * * *

आज [illegible] के फोन तथा उनकी माँ [illegible] आदि सब से मिला [illegible] किया।

शाम को प्रमोद के [illegible] आने पर [illegible] मिली।

डा० योगेन्द्र, राजेन्द्र [illegible], [illegible] बहुत, राजेन्द्र शर्मा - [illegible] आदि को [illegible] [illegible] में छोड़ गया। [illegible] को पहले ही [illegible] है।

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः। सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः।७।
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।८।

etāṁ vibhūtiṁ yogaṁ ca mama yo vetti tattvataḥ so'vikampena yogena yujyate nātra saṁśayaḥ
ahaṁ sarvasya prabhavo mattaḥ sarvaṁ pravartate iti matvā bhajante māṁ budhā bhāvasamanvitāḥ
(Ch.10/7-8)

सूर्यो० ५।२५, सूर्या० ६।३८ — श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, बहुलाव्रत

पं. कैलाशपति मिश्रजी का पत्र, पटना-२, वीरचंद पटेल मार्ग पटना। आज डा० अशोक सिंह उर्फ बब्लू - दमाद मन्ना बाबू को आयोग की संक्षिप्त बैंक के मद में ५०००, पाँच हजार रुपये जमा कर दिया गया - १० रुपये लिफाफा पासबुक के लिये दिया एवं भेजा गया। मन्ना बाबू को डाक्टर द्वारा फोन कर दिया गया कि बाद में आवेदन कर दिया - काम का आगे सोमवार को किया जायेगा। :

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा १५ अगस्त १९९८ को → लाल किले के प्राचीर से पढ़ी गई कविता

× × ×

"क्या हार में क्या जीत में,
किञ्चित नहीं भयभीत मैं।
कर्तव्य-पथ पर जो मिले,
यह भी सही, वह भी सही।
वरदान मांगूगा नहीं,
वरदान मांगूगा नहीं॥"
- कविता डा० शिवमंगल सिंह सुमन।

अटल वाजपेयीजी की स्वरचित कविता →

"राह कौन सी जाऊँ मैं,
चौराहे पर लुटता चीर
प्यादे से पिट गया वजीर।
चलूँ आखिरी चाल कि
बाजी छोड़ विरक्ति रचाऊँ?
राह कौन सी जाऊँ मैं।"

हार नहीं मानूँगा,
रार नहीं ठानूँगा।
काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूँ,
गीत नया गाता हूँ॥"
—०—

सौ हाथोंसे कमा और हजार हाथसे दान कर।

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्। कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च। ९।
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।१०।

maccittā madgataprāṇā bodhayantaḥ parasparam kathayantaśca māṁ nityaṁ tuṣyanti ca ramanti ca
teṣāṁ satatayuktānāṁ bhajatāṁ prītipūrvakam dadāmi buddhiyogaṁ taṁ yena māmupayānti te
(Ch.10/9-10)

सूर्यो० ५।२६, सूर्या० ६।३७   चन्द्रषष्ठी

आज प्रमोद कुमार के आयोजन के तीसरे दिन नौकरी लगी छुट्टी। श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह ओझा [illegible] सायंकाल आ पहुँचे। उनसे आवश्यक विचार-विमर्श हुआ। [illegible] के क्रम में कमी का निवारण उनसे मैंने [illegible] के लिये सहयोग अनुरोध किया। वे श्रद्धापूर्वक [illegible] करेंगे।
रविवार को [illegible] डा० शारदाप्रसाद शर्मा [illegible] से मिलकर [illegible] सहयोग के लिए [illegible] जाऊँगा। उनसे [illegible] के सूचना में भी [illegible] बातें हुईं। उनमें सहकर्मी साथियों से भी उन्होंने [illegible] सहयोग जुटाने का आश्वासन दिया।
[illegible] आ गये हैं। [illegible] में [illegible] आ गयी है। [illegible] को भी डा० [illegible] शर्मा के [illegible] प्रमोद के [illegible] देनी। [illegible] आयोजक के सोमवार १७ ता. को करेंगे।
मैं [illegible] आया था। [illegible] कुमार [illegible] के [illegible] बात के [illegible] गये।

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः । नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता । ११ ।

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् । पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् । १२ ।

teṣāmevānukampārthamahamajñānajaṁ tamaḥ nāśayāmyātmabhāvastho jñānadīpena bhāsvatā

arjuna uvāca

paraṁ brahma paraṁ dhāma pavitraṁ paramaṁ bhavān puruṣaṁ śāśvataṁ divyamādidevamajaṁ vibhum

(Ch.10/11-12)

सूर्यो० ५ । २६, सूर्या० ६ । ३६ — **हलषष्ठी (ललहीछठ)**

आज बहुत से पत्र लिखना छोड़ा। पहले के लिखे पत्र - डा० रामवचन शर्मा, रामनिवास त्रिपाठी, छोड़े गये। आज मुजफ्फरपुर श्री शिवशंकरप्रसाद सिंह को भी पत्र लिखने में लिखा। रामकेश पांडे को बीरपुर के नन्दकुमार, जगन्नाथराय शर्मा, तथा चन्द्रभूषण सागरभारती शर्मा धूमनगर के द्वारा पं० रामनरेश राय शर्मा को पोस्टकार्ड व्द. यानि पत्र लिख कर भेजा।

[illegible]में
[illegible]न
[illegible]नाल

स्वामी हरिदर्शन जी को लिखा पत्र - फोटोस्टेट प्रतिलिपि करा कर बाद में छोड़ा जायेगा। उन्हें समझाना - उचित बातें [illegible] प्रेम से कह समझा देना धर्म है। वे चाहे जो करें।

मेरे मन में न क्रोध है न उद्वेग। वे गर्मी से ग्रस्त हैं, त्रस्त हैं।

कल "उमेश" बीरपुर, प्रो० तेजनारायण कुमार - कुर्सी कुंज एवं तथा श्री फौजदार राय इलाहाबाद आदि को पत्र लिखेंगे। [illegible] शंभुनाथ मिश्र - रमाकांत मिश्र आदि को भी पत्र भेजूंगा समागम के नवीनीकरण तथा आयतन संघर्ष के लिये। रामजी राय बी० डी० ओ०.

पंचायत - चकापुर बो० चकापुर: जयप्रकाश जी को भी पत्र भेजना आवश्यक है - कि अधिकृत कामों के संबंध में।

जिससे स्व-परका हित हो सदैव वैसा ही लिखो।

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा। असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे।१३।
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव। न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः।१४।

āhustvāmṛṣayaḥ sarve devarṣirnāradastathā asito devalo vyāsaḥ svayaṁ caiva bravīṣi me
sarvametadṛtaṁ manye yanmāṁ vadasi keśava na hi te bhagavanvyaktiṁ vidurdevā na dānavāḥ
(Ch.10/13-14)

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३५ — श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (स्मार्त)

आज कब ही झगड़ा-फसाद किया- यहाँ का वकीलसाहेब का परिवार मलिमाद वाला है। प्रो० तेज नारायण प्रसाद को पत्र नहीं भेज सका।

समाचार पत्र पढ़ता मन बेचैन रहा। बनारसी की स्थिति: मन अपने अनुकूल समान नहीं। कैदी की तरह शहर कमरे में बंद पड़े पड़े दिन काटना पड़ता है।

x x x

आज तक की दुर्भाग्य से प्रमोद ने अपने शकुन्तला- मंगलदेव- एमकोर्ड-अभिकर्ता ही सबै जीत के पुनर्मिलन हुआ। वे दुःखी हैं। उनकी माता जी छूटे रही चिकित्सा में कुछ नहीं. उसी से चिन्तित हैं। उनकी पत्नी भी उन्मन हैं। किन्तु समय निकाल कर कभी पूना से, अब उनकी नौकरी पायी है, शायद मिलेंगे।

ध्यानमें भी आता ११ अगस्त को लालकिले से उसमें भाषणक्रममें पढ़ी गई शिवमंगल सिंह 'सुमन' की कविता के अंश :→

"क्या हार में क्या जीत में
किञ्चित नहीं भयभीत मैं।
कर्तव्य पथ पर जो मिले,
यह भी सही, वह भी सही,
वरदान मांगूगा नहीं,
वरदान मांगूगा नहीं।"

— शिवमंगल सिंह 'सुमन'

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते। १५।
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि। १६।

svayamevātmanātmānaṁ vettha tvaṁ puruṣottama bhūtabhāvana bhūteśa devadeva jagatpate
vaktumarhasyaśeṣeṇa divyā hyātmavibhūtayaḥ yābhirvibhūtibhirlokānimāṁstvaṁ vyāpya tiṣṭhasi
(Ch.10/25-26)

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३४

स्वतन्त्रतादिवस,
श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (वैष्णव)

आज श्री राजेन्द्र प्रसाद जी - अधिवक्ता के अनुरोध पर उनके घर
गया - वहाँ वाराणसी से वायुयान से आये उनके पुत्र से भेंट हुई।
परिवार वालों से भी धर्म चर्चा होती रही। ९ बजे वकील साहब अपने
कार्यालय से आये। कथा प्रारम्भ हुआ। उन्होंने सभी अपेक्षित
कार्यों के संबंध में पूर्ण आश्वासन दिये। स्वामी [illegible]
तथा पूज्यपाद स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी के मध्य बड़े किसानों
के कल्याण की बात कही। शोधपुस्तकों के प्रकाशन - [illegible] के
बाद की। [illegible] और [illegible] मुख्यालय आदि
[illegible] अपने [illegible] को [illegible] बाद
दिलाया - डा० शारदा प्रसाद शर्मा - [illegible] आदि से मिलने
की बात कहा - [illegible] की भी चर्चा हुई।
फोन से वकील साहब के पुत्र से

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३३

मतान्तरसे-श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (वैष्णव)

[illegible] जो [illegible] रहे हैं - स्वामी जी की मूर्ति के [illegible]
[illegible] - वाराणसी को किये।
आज वकील साहब नहीं आ
सके न डा० शारदा प्रसाद के यहाँ जाने का कोई कार्यक्रम बन पाया।
आज [illegible] शर्मा, चौ० राजनारायण शर्मी तथा श्री [illegible] शर्मा
[illegible] को पत्र लिखा। "[illegible]" [illegible]
आने की सूचना मिली। [illegible] तथा
[illegible] अवसर पर आते हैं, [illegible] नहीं
सोचते। [illegible] राजेन्द्र प्रसाद जी के घर गये। उनके [illegible]
[illegible] है। [illegible] सकें [illegible]।
[illegible] के कागजात [illegible] के [illegible] होती
रही। [illegible] नहीं [illegible]।
[illegible] पर [illegible] रहे। [illegible] होगा ही।
[illegible] के [illegible] की [illegible] हुई।

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन्। केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया। १७।
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन। भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्। १८।

kathaṁ vidyāmahaṁ yogiṁstvāṁ sadā paricintayan keṣu keṣu ca bhāveṣu cintyo'si bhagavanmayā
vistareṇātmano yogaṁ vibhūtiṁ ca janārdana bhūyaḥ kathaya tṛptirhi śṛṇvato nāsti me'mṛtam
(Ch. 10/17-18)

सूर्यो० ५।२८, सूर्या० ६।३२ आज कान का ऑपरेशन नहीं हो सका - कल के लिये टाल दिया। चिन्ता बनी रहती है। वाराणसी की व्यवस्था को लेकर। ट्रेवल-आरक्षण आदि दिक्कतें आ गई हैं। बच्चियों को कष्ट होता होगा।

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः । प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे। १९।
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः। अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च। २०।

śrībhagavānuvāca

hanta te kathayiṣyāmi divyā hyātmavibhūtayaḥ prādhānyataḥ kuruśreṣṭha nāstyanto vistarasya me
ahamātmā guḍākeśa sarvabhūtāśayasthitaḥ ahamādiśca madhyaṁ ca bhūtānāmanta eva ca

(Ch.10/19-20)

सूर्यो० ५।२८, सूर्या० ६।३२ — अजा एकादशीव्रत

आज भी अनौपचारिक - कल बुधवार के लिये रुक गया। श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह को पत्र भेजकर कुछ कार्यक्रम के लिये अनुरोध किया। प्रो० तेजनारायण कुमार - डुमरी - अंगराह डुमराँव कामसलटी। जी को पत्र लिखकर मठ के निर्माण में योगदान के लिये प्रेरित किया साथ ही . . कुंवरसिंह विश्वविद्यालय में "बउआधार" के संबंध में - पूर्व प्राचार्य विश्वनाथ सिंह द्वारा अव्यवस्था करने के संबंध में लिखते हुए उनकी पैरवी - सिफारिश के संबंध में भी लिखा। वाराणसी - श्री सुरेन्द्रनाथ राय - अधिशासी - अभियंता को शनिवार को न्यास - समिति की बैठक में अवश्य उपस्थित होने के लिये आग्रह किया। दोनों पत्र डाक में छोड़े गये।

पतिव्रता नारी गरीब–से–गरीब घरको स्वर्ग बना देती है।

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्। मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी।२१।
वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः। इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना।२२।

ādityānāmahaṁ viṣṇurjyotiṣāṁ raviraṁśumān marīcirmarutāmasmi nakṣatrāṇāmahaṁ śaśī
vedānāṁ sāmavedo'smi devānāmasmi vāsavaḥ indriyāṇāṁ manaścāsmi bhūtānāmasmi cetanā
(Ch.10/21-22)

सूर्यो० ५।२९, सूर्या० ६।३१ प्रदोषव्रत

आज सौभाग्य से, अचानक
अशोककुमार 'राघव' ने प्रमोदकुमार के कालेज का औपचारिक
आलोचन कर दिया। आज डा० आनंद. औंकार. वाजपेयी आये
शिक्षक, अभिनंदन— कालिदास ठाकुर को पढ़ने के पश्चात् ...
पत्र लिखा। मुहम्मदपुर के श्री गुलाब शर्मा को भी एक कार्ड पत्र
लिख भेजा। १० बजे रात को प्रमोद का आवेदन करने से छुट्टी
मिली।

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्। वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्। २३।
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्। सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः। २४।

rudrāṇāṁ śaṅkaraścāsmi vitteśo yakṣarakṣasām vasūnāṁ pāvakaścāsmi meruḥ śikhariṇāmaham
purodhasāṁ ca mukhyaṁ māṁ viddhi pārtha bṛhaspatim senānīnāmahaṁ skandaḥ sarasāmasmi sāgaraḥ
(Ch.10/23-24)

सूर्यो० ५।२९, सूर्या० ६।३०

आज पकड़ा गया है। काशी की अपनी आध्यात्मिक महत्ता है, वातावरण भी विशुद्ध शांति है, पास-पड़ोस के सम्पर्क से मन निरन्तर मिलते रहते हैं। [illegible] बनी रहती है।
यहां [illegible] का जीवन है। कारागार की सेल कोठरी में बंद रहने की तरह जीवन बीतता है।

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्। ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम्। २७।
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्। प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः। २८।

uccaiḥśravasamaśvānāṁ viddhi māmamṛtodbhavam airāvataṁ gajendrāṇāṁ narāṇāṁ ca narādhipam
āyudhānāmahaṁ vajraṁ dhenūnāmasmi kāmadhuk prajanaścāsmi kandarpaḥ sarpāṇāmasmi vāsukiḥ
(Ch.10/27-28)

सूर्यो० ५। ३०, सूर्या० ६। २८

कुशोत्पाटिनी अमावास्या, सूर्यग्रहण
(भारतके पूर्वी भागमें स्वल्प दृश्य)

भाद्रपद शुक्ल १, रविवार, 23 AUG.

सूर्यो० ५। ३१, सूर्या० ६। २७

रविवार को श्री [illegible] प्रसाद सिंह के [illegible] -
[illegible] में [illegible] के [illegible]
[illegible] में सम्मिलित होकर [illegible] गये। दो घंटे तक
वहाँ रहे। [illegible] के सदस्यों की अपनी बैठक भी - उनका
[illegible] विरोध होता रहा। मेरा एवं प्रमोदकुमार
का सम्मान किया गया।
[illegible] से इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि [illegible]
तत्काल यहाँ से कोई [illegible] नहीं [illegible]।
इस संस्था के लोग अपनी ही समस्याओं के सुलझाने
में व्यस्त हैं। बड़ी [illegible] से राजेन्द्रप्रताप सिंह
के [illegible] आये हैं। किन्तु उदासीनता से
स्वावलंबन की प्रेरणा मिली और बुद्ध भगवान का
"आत्मदीपो [illegible]" [illegible] याद आया।

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्। झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी। ३१।
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन। अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम्। ३२।

pavanaḥ pavatāmasmi rāmaḥ śastrabhṛtāmaham jhaṣāṇāṁ makaraścāsmi srotasāmasmi jāhnavī
sargāṇāmādirantaśca madhyaṁ caivāhamarjuna adhyātmavidyā vidyānāṁ vādaḥ pravadatāmaham
(Ch.10/31-32)

सूर्यो० ५।३२, सूर्या० ६।२५ — हरितालिकाव्रत, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत (चन्द्रदर्शन-निषिद्ध)

आज प्रमोद कुमार ने श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह से संपर्क किया तो पता चला कि वे स्वयं डा० शारदा प्रसाद शर्मा से मिलते हैं। इन लोगों के साथ जाने से कतराते हैं। वे विशेषज्ञ के साथ लगाये। फलतः वहाँ से भी किसी सहायता की आशा नहीं दिखाई देती।

डा० शारदा प्रसाद शर्मा ने बुधवार को ८ बजे के बाद अपने मिलने का समय दिया है। वे वैसे काफी सज्जन व्यक्ति [illegible] प्रतीत होता है।

उसके बाद सरकार वकील साहब राजेन्द्र प्रसाद सिंह से भेंट करके मठ के नवनिर्माण, साकेत के [illegible] के संबंध में तथा सहायता के संबंध में बातें हुईं।

आत्मा इन्द्रियोंका नौकर नहीं, मालिक है।

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च। अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः। ३३।
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्। कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा। ३४।

akṣarāṇāmakāro'smi dvandvaḥ sāmāsikasya ca ahamevākṣayaḥ kālo dhātāhaṁ viśvatomukhaḥ
mṛtyuḥ sarvaharaścāhamudbhavaśca bhaviṣyatām kīrtiḥ śrīrvākca nārīṇāṁ smṛtirmedhā dhṛtiḥ kṣamā
(Ch.10/33-34)

सूर्यो० ५।३२, सूर्या० ६।२४ आज पं० रामचन्द्र शर्मा [illegible] जी
शास्त्री एम० बी० ए० और [illegible] - [illegible]
[illegible] पति। उन्होंने शिवजी को [illegible]।
आज प्रमोद कुमार का काम का [illegible]।
डाक्टर अशोक कुमार जी उपाध्याय रजिस्ट्रार [illegible]
रखना चाहते थे।
मैंने स्वयं प्रमोद के जाने आदि में पत्र के सिफारिश की
कि मन आया है, निवेदन है, रविवार को जाने की इन्हें
स्वीकृति प्रदान करें। उन्होंने साहब के बड़ी कृपा की और
रविवार को रात भी रुक के जाने की अनुमति प्रदान कर दी।

रूपका मोह छोड़ दो।

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् । मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः । ३५ ।
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् । जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् । ३६ ।

bṛhatsāma tathā sāmnāṁ gāyatrī chandasāmaham māsānāṁ mārgaśīrṣo'hamṛtūnāṁ kusumākaraḥ
dyūtaṁ chalayatāmasmi tejastejasvināmaham jayo'smi vyavasāyo'smi sattvaṁ sattvavatāmaham
(Ch.10/35-36)

सूर्यो० ५ । ३३, सूर्या० ६ । २३ — **ऋषिपञ्चमीव्रत**

आज कोई विशेष कार्य नहीं हो सका - इटावा से वकील साहब से बातें हुईं। शनिवार को ७ बजे सांयकाल डा० को आँख दिखाई जायेगी। रविवार को नव बजे डा० शारदाप्रसाद शर्मा से बातें करने का कार्यक्रम तय हो चुका है। नव बजे तक वकील चलकर उनके यहां १० बजे पहुँचना है।

जहाँ विषयोंकी चर्चा होती है वहीं नरक है।

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः। मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः।३७।
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्। मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्।३८।

vṛṣṇīnāṁ vāsudevo'smi pāṇḍavānāṁ dhanañjayaḥ munīnāmapyahaṁ vyāsaḥ kavīnāmuśanā kaviḥ
daṇḍo damayatāmasmi nītirasmi jigīṣatām maunaṁ caivāsmi guhyānāṁ jñānaṁ jñānavatāmaham
(Ch.10/37-38)

सूर्यो० ५।३३, सूर्या० ६।२२ — लोलार्कषष्ठी

आ काशी वापसी के लिये
पवन एक्सप्रेस में ५८ २५ [illegible] में सोमवार ३१ को
स्थान आरक्षित हुआ है। [illegible] में ०२.५५ [illegible] है।

पवित्र भावना सिद्धियोंकी जननी है।

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्। मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि।७।
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा। दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्।८।

ihaikasthaṁ jagatkṛtsnaṁ paśyādya sacarācaram mama dehe guḍākeśa yaccānyaddraṣṭumicchasi
na tu māṁ śakyase draṣṭumanenaiva svacakṣuṣā divyaṁ dadāmi te cakṣuḥ paśya me yogamaiśvaram
(Ch.11/7-8)

सूर्यो० ५।३७, सूर्या० ६।१४ — प्रदोषव्रत

संस्कृति का अर्थ है, मनुष्य की एक परिमार्जित नैतिक और रसात्मक मनोदशा।

× × ×

तप, त्याग और अप्रमाद की सीढ़ियों से ही जीवन में तेज उतरता है।

× × ×

'राजनीति की किताब में तो बस अधिकार ही अधिकार है, कर्तव्य उसके लिए एक फ़िजूल-सा शब्द है।'

और तो और, अपनी नई बाइबिल — भारतीय संविधान के प्रथम [illegible] संस्करण में मौलिक अधिकारों की बड़ी-बड़ी बातें (की गयी हैं) रखी गयी हैं, परन्तु मौलिक कर्तव्यों की चर्चा नहीं। उन्हें तो प्रथमपृष्ठ की ललित भाषा में सांकेतिक शैली में कह दिया गया।
राजेन्द्र प्रसाद, नेहरू और अम्बेडकर के दिमाग में यह बात आई ही नहीं कि हजार वर्षों की गुलामी से कुसंस्कारग्रस्त भारतीय मानस के लिये अधिकार से ज्यादा रेखांकित करना जरूरी है।
शायद उन्होंने सोचा कि उस हंसी-खुशी, उल्लास, उमंग, ताजपोशी के मौके का स्वाद कर्तव्य जैसी जिम्मेदाराना बात की चर्चा करके क्यों बेस्वाद किया जाय।"

× × ×

— कृपेन्द्रनाथ राय

अंधकार में अग्निशिखा

बड़प्पनका अभिमान करना भूल है।

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च । रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः । ३६ ।
कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे । अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् । ३७ ।
त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् । वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप । ३८ ।

arjuna uvāca

sthāne hṛṣīkeśa tava prakīrtyā jagatprahṛṣyatyanurajyate ca rakṣāṁsi bhītāni diśo dravanti sarve namasyanti ca siddhasaṅghāḥ
kasmācca te na nameranmahātman garīyase brahmaṇo'pyādikartre ananta deveśa jagannivāsa tvamakṣaraṁ sadasattatparaṁ yat
tvamādidevaḥ puruṣaḥ purāṇastvamasya viśvasya paraṁ nidhānam vettāsi vedyaṁ ca paraṁ ca dhāma tvayā tataṁ viśvamanantarūpa

(Ch.11/36—38)

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५७ — **चतुर्दशी-श्राद्ध**

आश्विन कृष्ण ३०, रविवार, 20 SEPT.

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५६

अमावास्या, पितृ-विसर्जन

आज न्यास-समिति के सदस्यों एवं कुछ औरे बंधुओं की बैठक हुई। मन्त्रावधू, श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, डा० चंद्रेश्वर मिश्र और खड्गधारी शर्मा सहित - राजनीतिराय आदि और - पर श्री राजेन्द्रप्रसाद सिंह मन्त्री - अधिवक्ता, मुंबई उच्च-न्यायालय के नहीं आने से - मतसंख्या नहीं थी कोरम से। बैठक १८ अक्टूबर तक के लिये स्थगित कर दी गई। मन्त्रावधू, राजनीतिराय और डा० चंद्रेश्वर मिश्र की एक उपसमिति बनाई गई जो उस बैठक में नियमावली का प्रारूप तैयार करके पेश करेगी जो स्वीकृत होने के बाद - अनुबंध के कार्यों में सहायक होगा॥ /

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च । नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।३९।
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व । अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।४०।
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति । अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि।४१।

vāyuryamo'gnirvaruṇaḥ śaśāṅkaḥ prajāpatistvaṁ prapitāmahaśca namo namaste'stu sahasrakṛtvaḥ punaśca bhūyo'pi namo namaste
namaḥ purastādatha pṛṣṭhataste namo'stu te sarvata eva sarva anantavīryāmitavikramastvaṁ sarvaṁ samāpnoṣi tato'si sarvaḥ
sakheti matvā prasabhaṁ yaduktaṁ he kṛṣṇa he yādava he sakheti ajānatā mahimānaṁ tavedaṁ mayā pramādātpraṇayena vāpi

(Ch.11/39—41)

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५५ — **मातामह-श्राद्ध, शारदीय नवरात्रारम्भ**

श्रीमद् कुमार दुर्गापाठ का अनुष्ठानकर्ता के पाठ कर रहे हैं। ब्रजकिशोर शर्मा - नवदिन कलारता पर रहकर जनपूजा करने में लगे हैं।

सत्सङ्गसे संघर्षका नाश होता है।

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु । एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ।४२।
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् । न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ।४३।
तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् । पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ।४४।

yaccāvahāsārthamasatkṛto'si vihāraśayyāsanabhojaneṣu eko'thavāpyacyuta tatsamakṣaṁ tatkṣāmaye tvāmahamaprameyam
pitāsi lokasya carācarasya tvamasya pūjyaśca gururgarīyān na tvatsamo'styabhyadhikaḥ kuto'nyo lokatraye'pyapratimaprabhāva
tasmātpraṇamya praṇidhāya kāyaṁ prasādaye tvāmahamīśamīḍyam piteva putrasya sakheva sakhyuḥ priyaḥ priyāyārhasi deva soḍhum

(Ch.11/42—44)

सूर्यो० ५।४४, सूर्या० ५।५४

भगवान के शब्दार्थिक से
— महामहोपाध्याय गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी.
~~की व्याख्या है~~ →

ऐश्वर्य, धर्म, यश, ज्ञान, वैराग्य और श्री का नाम
"भगवान" है। ये सब धर्म मायारूप बल के निर्दोष
रूप से प्रादुर्भूत होते हैं। इसलिये वह भगवान है,
और वही उसकी शक्ति है।

× × ×

परमात्माकी सामर्थ्य उनके किस कामकी, वह तो हमारे लिये है।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते। ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः।१।

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते। श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः।२।

arjuna uvāca

evaṁ satatayuktā ye bhaktāstvāṁ paryupāsate ye cāpyakṣaramavyaktaṁ teṣāṁ ke yogavittamāḥ

śrībhagavānuvāca

mayyāveśya mano ye māṁ nityayuktā upāsate śraddhayā parayopetāste me yuktatamā matāḥ

(Ch.12/1-2)

सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ५।४७ आज० प्रमोद कुमार को तीन सौ रुपये
पूजा-सामग्री-दक्षिणा आदि के लिये दिया। दो सौ रुपये
छात्रावास-वालों को, ७५ रुपये डाक्टर के [illegible] हैं।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते । सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् । ३ ।
सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः । ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः । ४ ।
क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् । अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते । ५ ।

ye tvakṣaramanirdeśyamavyaktaṁ paryupāsate sarvatragamacintyaṁ ca kūṭasthamacalaṁ dhruvam
sanniyamyendriyagrāmaṁ sarvatra samabuddhayaḥ te prāpnuvanti māmeva sarvabhūtahite ratāḥ
kleśo'dhikatarasteṣāmavyaktāsaktacetasām avyaktā hi gatirduḥkhaṁ dehavadbhiravāpyate

(Ch.12/3—5)

सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ५।४६ — श्रीदुर्गाष्टमी-नवमीव्रत

आज डा० योगीन्द्रनाथ शर्मा- शाहपुर कोलम्बा पं० रामेश्वर पाण्डेय- सिमरी के, पत्र भेजा कि [illegible] मधुपुर की अगली बैठक में उपस्थित होना [illegible] हैं।

आज मालिनी के श्री श्यामनारायण राय- शिक्षक अपने पौत्र सहित आये- [illegible] जाने को चले गये- उनके बड़े भाई रामप्रताप राय शर्मा को पक्षाघात [illegible] से पीड़ित- बीमार होने की बात बताया, [illegible] में दवा हुई नहीं - [illegible] चल रहा है। व० तर्पण शुरू किया।

लोभसे नरक मिलता है भगवान् नहीं ।

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते।६।
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्। भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्।७।
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय। निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः।८।

ye tu sarvāṇi karmāṇi mayi sannyasya matparāḥ ananyenaiva yogena māṁ dhyāyanta upāsate
teṣāmahaṁ samuddhartā mṛtyusaṁsārasāgarāt bhavāmi nacirātpārtha mayyāveśitacetasām
mayyeva mana ādhatsva mayi buddhiṁ niveśaya nivasiṣyasi mayyeva ata ūrdhvaṁ na saṁśayaḥ
(Ch. 12/6—8)

सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ५।४५ **विजयादशमी**

आज मकिहारी के लड़के लोग
समाजीत के पीछे आगये - २० तारीख का
ब्राह्मी [illegible] होगया।

सच्चा शूर वही है जो धर्म, देश और असहायोंकी रक्षा करे।

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् । अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय। ९।
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव। मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि।१०।
अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः। सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्।११।

atha cittaṁ samādhātuṁ na śaknoṣi mayi sthiram abhyāsayogena tato māmicchāptuṁ dhanañjaya
abhyāse'pyasamartho'si matkarmaparamo bhava madarthamapi karmāṇi kurvansiddhimavāpsyasi
athaitadapyaśakto'si kartuṁ madyogamāśritaḥ sarvakarmaphalatyāgaṁ tataḥ kuru yatātmavān

(Ch.12/9—11)

सूर्यो० ५।४८, सूर्यां० ५।४४

आज सुबह वाचनवेल्य के पूर्व परिचित श्री रामनारायण शर्मा - कोलकाता - फुलिया के पुत्र लालनारायण शर्मा अप्रत्याशित सपत्नीक वच्चे साथ में आ धमके। पहचाना नहीं। तदस्स वर्षों पर पधारे थे। बहुत हर्ष से मिले - स्कूटर मिले। वर्षों [illegible] स्मृति रूप में दिया। बहुत स्नेह श्रद्धा प्रदर्शित करते पाये गये। इधर [illegible] अनेक बार करना गये।

× × ×

पशु नारायण के इधर लड़के को [illegible] गये। उन्होंने काल की मशीन - पेन लेते आये हैं।

× × ×

(१) चिन्मय - भारत (२) दृष्टि - अभियान
(३) मन पवन की नौका (४) महाकाल की तरंगें।

सन्तों की [illegible] उपहार छोड़के लेते हैं।

नरेन्द्र मोहन की - बहुचर्चित - पुस्तक "हिन्दुत्व"

तथा सीताराम गोयल की पुस्तक

The Hindu Temples: What happened to them and after :- Voice of India - "Publication"

अपमानको अमृत और सम्मानको विष समझना चाहिये।

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते। ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।१२।
अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च। निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी।१३।
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।१४।

śreyo hi jñānamabhyāsājjñānāddhyānaṁ viśiṣyate dhyānātkarmaphalatyāgastyāgācchāntiranantaram
adveṣṭā sarvabhūtānāṁ maitraḥ karuṇa eva ca nirmamo nirahaṅkāraḥ samaduḥkhasukhaḥ kṣamī
santuṣṭaḥ satataṁ yogī yatātmā dṛḍhaniścayaḥ mayyarpitamanobuddhiryo madbhaktaḥ sa me priyaḥ
(Ch.12/12—14)

सूर्यो० ५।४९, सूर्या० ५।४३ — पापाङ्कुशा एकादशीव्रत, श्रीगाँधी-जयन्ती

आज सत्संग महानगरपुर में मेरे कटक के सज्जन कौन भक्त कुमारजीत शर्मा आये सांझ में (रामपुर के [illegible]) साधु रामकृष्ण गोस्वामी थे जो प्रजापतिवाग के समीप। लोकनाथ के काशी-नगर के पुत्र के विवाह का अनुष्ठान करना आये थे। महिमा है संतों मिलनों का।

इसके पश्चात् - स्वदेश [illegible] की पत्नी लेकर कुमारजीत ने [illegible] दर्शन दिया।

नाम-जपका अभ्यास बढ़ाना चाहिये।

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः। हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः।१५।
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः। सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः।१६।
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति। शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।१७।

yasmānnodvijate loko lokānnodvijate ca yaḥ harṣāmarṣabhayodvegairmukto yaḥ sa ca me priyaḥ
anapekṣaḥ śucirdakṣa udāsīno gatavyathaḥ sarvārambhaparityāgī yo madbhaktaḥ sa me priyaḥ
yo na hṛṣyati na dveṣṭi na śocati na kāṅkṣati śubhāśubhaparityāgī bhaktimānyaḥ sa me priyaḥ
(Ch.12/15—17)

सूर्यो० ५।४९, सूर्या० ५।४२ — शनिप्रदोष

आज कल्पना [illegible] प्रमोद कुमार [illegible] से नहीं आ सके। मैमनगर [illegible] - "अहमदाबाद" [illegible] के आचार्य [illegible] से आ [illegible] को - ब्रजकिशोर से कहा कि प्रमोद की पत्नी के अस्वस्थ होने से वे लोग नहीं आ सके। सोमवार को आवेंगे।

आज पुनः [illegible] शर्मा पत्नी [illegible] सहित आये। दो तीन किलो सेव [illegible] तथा [illegible] दो सौ रुपये पूजा में दिये।

आश्विन शुक्ल १४, रविवार, 4 OCT.

सूर्यो० ५।५०, सूर्या० ५।४१

आज भी [illegible] के घर से भोजन आया। रात्रि की [illegible] तक [illegible] नहीं।

आज स्वामी हरिदेवानंद [illegible] को [illegible] तथा [illegible] शर्मा को भी [illegible] प्रति [illegible] [illegible] के पश्चात् पत्र लिखा।

आज [illegible] - [illegible] - शिवदयाल [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] - श्री [illegible] चौधरी को पत्र लिखा।

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः । शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ।१८।
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित् । अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ।१९।
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते । श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ।२०।

samaḥ śatrau ca mitre ca tathā mānāpamānayoḥ śītoṣṇasukhaduḥkheṣu samaḥ saṅgavivarjitaḥ
tulyanindāstutirmaunī santuṣṭo yena kenacit aniketaḥ sthiramatirbhaktimānme priyo naraḥ
ye tu dharmyāmṛtamidaṁ yathoktaṁ paryupāsate śraddadhānā matparamā bhaktāste'tīva me priyāḥ

(Ch.12/18—20)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ।१२।

सूर्यो० ५।५०, सूर्या० ५।४० — शरत्-पूर्णिमा, कार्तिक-स्नानारम्भ

आज कैलाश-आश्रम ऋषिकेश से महामंडलेश्वर जी का पत्र प्राप्त हुआ [illegible] एवं भावी कार्यक्रम का।
शान्ति-सदन- बहराइच से, श्रीमती [illegible] का पत्र प्राप्त हुआ। कलकत्ते से कृ० गोपाल सिंगहा का "[illegible]" का नया अंक मिला।
"Best Citizens of India"
A-102, Defence Colony, International Publishers of India का पत्र Publication के लिए मिला।

आज "[illegible]-रामपुर- गाजीपुर आये [illegible]। उन्होंने [illegible] हो गया। मैं रो [illegible]। अपनी असमर्थता पर।
प्रमोद जी से [illegible] नहीं। [illegible] स्वाभाविक है। [illegible] स्नान की सुविधा व्यवस्था से लोग [illegible] [illegible] से [illegible]
श्री खड्गधारी शर्मा [illegible] - इनके माध्यम से पेंशन [illegible] माँगा कि [illegible] का नवीनीकरण किया जा सके।
[illegible] के [illegible] शर्मा को पत्र लिखकर [illegible] में आने के लिए आग्रह किया।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते। एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः।१।
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत। क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम।२।

śrībhagavānuvāca

idaṁ śarīraṁ kaunteya kṣetramityabhidhīyate etadyo vetti taṁ prāhuḥ kṣetrajña iti tadvidaḥ
kṣetrajñaṁ cāpi māṁ viddhi sarvakṣetreṣu bhārata kṣetrakṣetrajñayorjñānaṁ yattajjñānaṁ mataṁ mama

(Ch.13/1-2)

सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ५।३९ — आज ९ बजे दिन तक भी प्रमोदकुमार नहीं आये। खेद है इस भी [illegible] है। ब्रजकिशोर के जाने से भी उदास है। [illegible] - [illegible] को [illegible] आगमन [illegible] लेखा दो [illegible]। तीन बजे अपराह्न, बड़ी पियरी से श्री राधारमण पाण्डेय - पड़िया - पौत्र - पं० यदुनाथ पाण्डेय - आये। इनके फूफा बैंक मैनेजर - बनारस स्टेट बैंक - श्री विजयनारायण मिश्र को लकवा का प्रभाव हो गया है। दवा उपचार चल रहा है। प्रमोदकुमार के अभिन्न [illegible] मैं [illegible] आवश्यक था है। मिश्र जी ने याद किया था।

यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति । तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा । ३० ।
अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः । शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते । ३१ ।
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते । सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते । ३२ ।

yadā bhūtapṛthagbhāvamekasthamanupaśyati tata eva ca vistāraṁ brahma sampadyate tadā
anāditvānnirguṇatvātparamātmāyamavyayaḥ śarīrastho'pi kaunteya na karoti na lipyate
yathā sarvagataṁ saukṣmyādākāśaṁ nopalipyate sarvatrāvasthito dehe tathātmā nopalipyate

(Ch.13/30—32)

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ५।२७ — **शनिप्रदोष, धनतेरस, श्रीधन्वन्तरि-जयन्ती**

कार्तिक कृष्ण १३, रविवार, 18 OCT.

सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ५।२६

श्रीहनुमज्जयन्ती, नरक चतुर्दशी

आज १० बजे पूर्वाह्न न्यास-समिति राजगुरुमठ की मासिक बैठक [illegible] सत्संग कक्ष में हुई। श्री [illegible] प्रसाद सिंह [illegible], श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह अधिवक्ता, राजेन्द्र प्रसाद सिंह डा० योगीन्द्रनन्द शास्त्री, श्री [illegible] [illegible] उपस्थित थे। [illegible]

[illegible]

रजनी के [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः। क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत।३३।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा। भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम्।३४।

yathā prakāśayatyekaḥ kṛtsnaṁ lokamimaṁ raviḥ kṣetraṁ kṣetrī tathā kṛtsnaṁ prakāśayati bhārata
kṣetrakṣetrajñayorevamantaraṁ jñānacakṣuṣā bhūtaprakṛtimokṣaṁ ca ye viduryānti te param
(Ch.13/33-34)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः।१३।

सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ५।२५ — **दीपावली**

बच्चोंको मिठाई के लिये तथा दूध आदि के लिये अन्नपूर्णा को ५०/- रुपये
दिया। महल्ले में आज मंगलस्वरूप श्री मां गंगा [illegible] हेतु [illegible]
[illegible] साठ से अधिक व्यक्ति हुए।
दीपावली दीप जलाये गये। [illegible]
और बालबच्चों का भी भोजन बना। मैंने दूध सत्तू जलपान
किया - केला दूध भी शायद!

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्। यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः।१।
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः। सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च।२।

śrībhagavānuvāca

paraṁ bhūyaḥ pravakṣyāmi jñānānāṁ jñānamuttamam yajjñātvā munayaḥ sarve parāṁ siddhimito gatāḥ
idaṁ jñānamupāśritya mama sādharmyamāgatāḥ sarge'pi nopajāyante pralaye na vyathanti ca

(Ch.14/1-2)

सूर्यो० ५।५८, सूर्या० ५।२४ — **अमावास्या**

आज राजनैतिशरद उपाध्याय आये। जलपान-भोजन किया - विश्राम करते रहे। कुशल-समाचार हुआ।

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्। सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत।३।
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः। तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता।४।
सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः। निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।५।

mama yonirmahadbrahma tasmingarbhaṁ dadhāmyaham sambhavaḥ sarvabhūtānāṁ tato bhavati bhārata
sarvayoniṣu kaunteya mūrtayaḥ sambhavanti yāḥ tāsāṁ brahma mahadyoniraham bījapradaḥ pitā
sattvaṁ rajastama iti guṇāḥ prakṛtisambhavāḥ nibadhnanti mahābāho dehe dehinamavyayam

(Ch.14/3—5)

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ५।२३ — अन्नकूट, गोवर्धनपूजा

अपराह्न श्री फौजदार राय - अतिरिक्त - अधिवक्ता, उच्च न्यायालय.
प्रयाग - आ पहुंचे। बक्सर की कुलीनिक [illegible] में
[illegible] महाराज काशिराज डा० विभूतिनारायण - उनके एकलौता [illegible] कुमार
आदि की लम्बी चौड़ी - बातें करके - अपने मेरे यहां बुलाये
पर नहीं आने की सफाई देते रहे।
अब १० वर्ष से १०००० की अधिवक्ता फौजदार राय नहीं हैं,
मर्यादा एवं श्री प्राप्त करने के वास्ते [illegible] और [illegible]
की होती हैं। प्रमोद के साथ लेकर रामनगर गये रामप्रदेश जी
के निमन्त्रण पर उनके यहां छोड़ दी गयी, और फिर कर
[illegible] मेल की [illegible] में [illegible] की [illegible] बातें करके लौटे।
रात में भोजन विश्राम किया। [illegible] - खीर बनी।
सबों ने भोजन किया। पचास हजार [illegible] [illegible]
दे गये हैं - अतः पढ़ने पैसे बच्चों की किताब और [illegible] के
[illegible] २८ [illegible] दे दिया था।

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् । सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ।६।
रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् । तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम्।७।
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् । प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत।८।

tatra sattvaṁ nirmalatvātprakāśakamanāmayam sukhasaṅgena badhnāti jñānasaṅgena cānagha
rajo rāgātmakaṁ viddhi tṛṣṇāsaṅgasamudbhavam tannibadhnāti kaunteya karmasaṅgena dehinam
tamastvajñānajaṁ viddhi mohanaṁ sarvadehinām pramādālasyanidrābhistannibadhnāti bhārata

(Ch.14/6—8)

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ५।२२ — **यमद्वितीया (भैयादूज)**

आज भी पड़ी मरम्मत. बच्चा नाना [illegible] तथा
प्रयाग लौटा। और भागलपुर की टैस्ट मैच - और मैं मात्र कमरा
से देखा [illegible]सिंह- मनाबाबू के देखा भी - बहुत भी भी नहीं
हो सका। राहुलजी के संकलन वाला लेख भी लिखकर ध्यान
नहीं दिया जा सका।

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा । रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ। १२।
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च। तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन। १३।
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत् । तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते। १४।

lobhaḥ pravṛttirārambhaḥ karmaṇāmaśamaḥ spṛhā rajasyetāni jāyante vivṛddhe bharatarṣabha
aprakāśo'pravṛttiśca pramādo moha eva ca tamasyetāni jāyante vivṛddhe kurunandana
yadā sattve pravṛddhe tu pralayaṁ yāti dehabhṛt tadottamavidāṁ lokānamalānpratipadyate
(Ch.14/12—14)

सूर्यो० ६।००, सूर्यां० ५।२१

कार्तिक शुक्ल ५, रविवार, 25 OCT.

सूर्यो ६।१, सूर्यां० ५।२०

आज मुंबई के अधिवक्ता श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह तथा [illegible]
मुजफ्फरपुर के डा० चन्द्रशेखर मिश्र [illegible] अधीक्षक को पत्र लिखा
गया और लिफाफे में बंद करके प्रमोद कुमार [illegible] को सौंपा।
पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सरीसा के मन्नाबाबू जगदीशपुर के
ठाकुर राम नाथ सिंह के परिवार के श्री [illegible] राम सिंह वरिष्ठ अधिवक्ता
वाराणसी को साथ लेकर उनके अनुज श्री रघुवंश प्रसाद सिंह के साथ
मठ में आये। श्री [illegible] राम से पूर्वज पारिवारिक संबंध की चर्चा
के साथ जगदीशपुर के संबंध की बातें हुईं। मठ से संबंधित सभी
आज तक कागजात उन्होंने देखा। [illegible] मन्नाबाबू से विचार विमर्श
किया - कुछ कागजात की प्रतिलिपि उन्हें दी भी गई।
उन्होंने दिलचस्पी ली और निर्माण कार्य के लिये अक्षुण्ण
सहयोग का आश्वासन भी दिया।

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते। गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते।२३।
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः। तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः।२४।
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः। सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते।२५।

udāsīnavadāsīno guṇairyo na vicālyate guṇā vartanta ityeva yo'vatiṣṭhati neṅgate samaduḥkhasukhaḥ svasthaḥ samaloṣṭāśmakāñcanaḥ tulyapriyāpriyo dhīrastulyanindātmasaṁstutiḥ mānāpamānayostulyastulyo mitrāripakṣayoḥ sarvārambhaparityāgī guṇātītaḥ sa ucyate
(Ch.14/23—25)

सूर्यो० ६।४, सूर्या० ५।१७ — **अक्षय नवमी**

आज वचन आश्रम से अमिताभ "छेना" [illegible]
गाड़ी से गरमी गये। मुन्ना और उनके साले विनोद भी साथ थे। गाड़ी
अंजोरपुर के ब्रजकिशोर ले गये। पहुंचा कर और [illegible]
आदि की कुशल [illegible] जाना हुआ।
आनन्द राय के [illegible] रात को [illegible]
छिड़ी। पुन प्रो० [illegible] के साला है। [illegible]
है। [illegible] में [illegible] है। [illegible] बता रहा, कि
स्वामी [illegible] गांजा पीते है और कुछ बोलते हैं
कि नहीं पीते। [illegible] के [illegible]
से भी मालूम हुई जो श्रीविनोद राय चौबेजी के यहां [illegible]
से रहकर अध्यापन करते हैं।

पापका आदेश किसीका न मानो।

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते । स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते । २६ ।
ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च । शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च । २७ ।

māṁ ca yo'vyabhicāreṇa bhaktiyogena sevate sa guṇānsamatītyaitānbrahmabhūyāya kalpate
brahmaṇo hi pratiṣṭhāhamamṛtasyāvyayasya ca śāśvatasya ca dharmasya sukhasyaikāntikasya ca

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः । १४ ।

(Ch.14/26-27)

सूर्यो० ६ । ५, सूर्या० ५ । १६ — आज नरहीं में पूर्व प्रधान श्री उमाशंकर राय को पंचाक्षर मंत्र की दीक्षा दिया। उनके भाई ने भी दीक्षा ली। प्रमोद कुमार दीक्षित, मेरे उपप्राध्यापक ने विधिपूर्वक [illegible] के साथ पहचान संपन्न कराया।

इसके पूर्व डेढ़ दो घंटे तक प्रधान के दरवाजे पर विशेष आयोजन रूप धार्मिक प्रवचन होता रहा, जिसमें गाँव के प्रायः सभी गणमान्य चौधरी और महिलाएँ सम्मिलित होकर सुनते रहे तथा प्रभावित भी हुए।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्। छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥१॥
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः। अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके॥२॥
न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा। अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा॥३॥

śrībhagavānuvāca

ūrdhvamūlamadhaḥśākhamaśvatthaṁ prāhuravyayam chandāṁsi yasya parṇāni yastaṁ veda sa vedavit
adhaścordhvaṁ prasṛtāstasya śākhā guṇapravṛddhā viṣayapravālāḥ adhaśca mūlānyanusantatāni karmānubandhīni manuṣyaloke
na rūpamasyeha tathopalabhyate nānto na cādirna ca sampratiṣṭhā aśvatthamenaṁ suvirūḍhamūlamasaṅgaśastreṇa dṛḍhena chittvā

(Ch.15/1—3)

सूर्यो० ६।६, सूर्या० ५।१५ — **प्रबोधिनी एकादशीव्रत**

आजप्रातः जलपान करके ब्रजकिशोर की गाड़ी से अंजोरपुर श्रीविन्ध्याचल पाण्डेय के यहाँ पहुँचे। अचानक श्री परमात्मा नन्द भी मिल गये जो देवनाओं की कुटी पर रह आते हैं। पटियां के लोगों ने उनके विरुद्ध सम्पत्ति के उत्तराधिकार के लिये मुकदमा किया है। जलपान के बाद श्री केशव के यहाँ लौटकर भोजन किया। उन्होंने दामाद के यहाँ। पूजा दक्षिणा मिली। अंजोरपुर से दो सौ रुपये मिले। कपड़े भी दो धोतियां मिली। साढ़े चार सौ रुपये और तीन चार धोतियां नहीं मिली। उसी दिन अंजोरपुर से लौटकर ब्रजकिशोर के डेरे व मुक्त का पाठ लेते आजमगढ़ वापस आ गये।

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः। तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।४।
निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः। द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसञ्ज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।५।
न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।६।

tataḥ padaṁ tatparimārgitavyaṁ yasmingatā na nivartanti bhūyaḥ tameva cādyaṁ puruṣaṁ prapadye yataḥ pravṛttiḥ prasṛtā purāṇī
nirmānamohā jitasaṅgadoṣā adhyātmanityā vinivṛttakāmāḥ dvandvairvimuktāḥ sukhaduḥkhasañjñairgacchantyamūḍhāḥ padamavyayaṁ tat
na tadbhāsayate sūryo na śaśāṅko na pāvakaḥ yadgatvā na nivartante taddhāma paramaṁ mama

(Ch.15/4—6)

सूर्यो० ६।६, सूर्या० ५।१५ **प्रदोषव्रत**

आज हम स्वामीनाथ तिवारी की गाड़ी से कानपुर खड़गधारी शर्मा, इन्द्रदिवाकर शर्मा के यहाँ पहुँच कर भोजन किया। बातों से लगे। लोगों की श्रद्धाभक्ति में मुझको मिलनेवाला भोजन दक्षिणा होती दक्षिणा के बाद लिया। पीछे खेद हुआ। वहाँ से लौटने पर श्री शिवकुमार शास्त्री से आकस्मिक भेंट हुई। राम अवध पाण्डेय से कलकत्ता यात्रा के कार्यक्रम के सम्बन्ध में विचार विमर्श भी हुआ। वे कलकत्ता जानेवाले हैं। अपने बड़े भाई श्री श्रीराम पाण्डेय से परामर्श करके निश्चय करेंगे।

बैंक से एक हजार रुपये निकाला। कारखाने के कामों के लिये। ऐसे प्रबन्ध कार्यों में लगा जाता है। इनका भार उठाना पड़ता है। कष्ट भी लगता है।

अपनी इच्छानुसार चलना तो पशु-पक्षियोंमें होता है।

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः। मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।७।
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः। गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।८।
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च। अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते।९।

mamaivāṁśo jīvaloke jīvabhūtaḥ sanātanaḥ manaḥṣaṣṭhānīndriyāṇi prakṛtisthāni karṣati
śarīraṁ yadavāpnoti yaccāpyutkrāmatīśvaraḥ gṛhītvaitāni saṁyāti vāyurgandhānivāśayāt
śrotraṁ cakṣuḥ sparśanaṁ ca rasanaṁ ghrāṇameva ca adhiṣṭhāya manaścāyaṁ viṣayānupasevate
(Ch.15/7—9)

सूर्यो० ६।७, सूर्या० ५।१४

आज भारत एक्सप्रेस से प्रमोद के साथ
२० किलो, गेहूँ और मैदा का पांच किलो बाज लेकर काशी
आया। जिसमें से भी [illegible] प्रमोद की पत्नी पहली बार
रही हैं। पूर्णिमा तक गंगा स्नान करेंगी।
प्रकाश थापर के परिवार की उनकी पुत्री और नातिन
भी आयी रही हैं। [illegible] जाने वाले थे। दूसरे दिन
कहाँ ठीक हैं, तो सम्भवतः उन्हें बुरा लगा।
जो स्वाभाविक है।
मेरा रवि का इलाहाबाद का ट्रांसफर [illegible]
[illegible] की जांच के क्रम में [illegible] रहे हैं।

मेहनतसे शरीर और कठिनाईसे मन बलवान होता है।

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्। विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।१०।
यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्। यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः।११।
यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्।१२।

utkrāmantaṁ sthitaṁ vāpi bhuñjānaṁ vā guṇānvitam vimūḍhā nānupaśyanti paśyanti jñānacakṣuṣaḥ
yatanto yoginaścainaṁ paśyantyātmanyavasthitam yatanto'pyakṛtātmāno nainaṁ paśyantyacetasaḥ
yadādityagataṁ tejo jagadbhāsayate'khilam yaccandramasi yaccāgnau tattejo viddhi māmakam

(Ch.15/10—12)

सूर्यो० ६।७, सूर्या० ५।१३ — व्रत-पूर्णिमा

आज प्रातः अत्यन्त [illegible] प्रकार [illegible] [illegible] सहित - [illegible] [illegible] के [illegible] चले गये।
मेरा अनुमान है कि [illegible] में इनका पूर्णिमा [illegible] का आयेगा। उनकी [illegible] पत्नी अनुमान में कहती थी कि [illegible] आये हैं। [illegible] रहते हैं।

कैसा [illegible] यह समाज है। पहले भी [illegible] मन में [illegible] [illegible] है। [illegible] में [illegible] [illegible] बनते हैं। [illegible] अभी अनुमान है। कुछ पैसा [illegible] तथा [illegible] का हिस्सा भी अनुमान का [illegible] है जो उनके अधःपतन का [illegible] है।
आगे के [illegible] है [illegible] [illegible] है।

जीवन की पंक्तियां याद आती हैं :
किसकी राह मैं छोड़ूं, किसको तोड़ूं [illegible] [illegible] है। [illegible] है। [illegible] होता जा रहा हूं। [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible]।

संग्रहकी हुई वस्तुओंका सदुपयोग करो।

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा। पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः।१३।
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।१४।
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च। वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्।१५।

gāmāviśya ca bhūtāni dhārayāmyahamojasā puṣṇāmi cauṣadhīḥ sarvāḥ somo bhūtvā rasātmakaḥ
ahaṁ vaiśvānaro bhūtvā prāṇināṁ dehamāśritaḥ prāṇāpānasamāyuktaḥ pacāmyannaṁ caturvidham
sarvasya cāhaṁ hṛdi sanniviṣṭo mattaḥ smṛtirjñānamapohanaṁ ca vedaiśca sarvairahameva vedyo vedāntakṛdvedavideva cāham

(Ch.15/13—15)

सूर्यो० ६।८, सूर्या० ५।१३ — **पूर्णिमा, कार्तिक-स्नान समास, श्रीनानक-जयन्ती**

आज मलदहिया-वाराणसी-[illegible] धर्मशाला में [illegible]
श्री प्रभुनारायण सिंह-मधुबनपुर के पौत्र उनके द्वितीय पुत्र के
निमित्त यज्ञोपवीत हुआ। परिवार एवं सम्बंधी [illegible] थे।
पं० देवनारायण शर्मा ने प्रमोद कुमार [illegible] पात्रों को
साथ ले कर्मकाण्ड संपन्न किया। [illegible] के बाद [illegible] लौटे।
श्री शिव [illegible] की [illegible] [illegible]
[illegible] - [illegible] के यहाँ
[illegible] भी [illegible]। [illegible] किया था।
[illegible] प्राप्त हुआ। [illegible] प्रमोद [illegible]
[illegible] दे दिया। [illegible] उनके परिवार के लोगों [illegible]
को [illegible] किया।
सायंकाल सहसा [illegible] हरिशंकर [illegible]
([illegible]) के संबंधी-मुसाफिर [illegible] "[illegible]" के [illegible] के साथ आ गये।
वे लोग [illegible]। भोजन [illegible] किया।
[illegible] हुआ। [illegible] किया उन्होंने।

लक्ष्मी लालची आदमीको कभी भी नहीं चाहतीं।

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।१६।
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः। यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।१७।
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः। अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।१८।

dvāvimau puruṣau loke kṣaraścākṣara eva ca kṣaraḥ sarvāṇi bhūtāni kūṭastho'kṣara ucyate
uttamaḥ puruṣastvanyaḥ paramātmetyudāhṛtaḥ yo lokatrayamāviśya bibhartyavyaya īśvaraḥ
yasmātkṣaramatīto'hamakṣarādapi cottamaḥ ato'smi loke vede ca prathitaḥ puruṣottamaḥ
(Ch.15/16—18)

सूर्यो० ६।८, सूर्या० ५।१२ आज प्रातः प्रमोदकुमार दीक्षित गाजीपुर
अपने डीह [illegible] के कार्य से गये - वहाँ से कल आयेंगे -
बच्चियाँ एवं बच्चियों सहित लौटेंगे। [illegible]। प्रातः
[illegible] दिया - [illegible] ने [illegible]
दिया। [illegible] को दिया।
प्रेमनारायण प्रयाग से १० बजे लौटे - मोटे [illegible] - स्वामी - कुटुम्ब
समझ नहीं - काम कर गया। जीवन मंद है।
महामहोपाध्याय पं० मधुसूदन ओझा कृत - "[illegible]" पुस्तक
की कठिन वेद विज्ञान विवेचन को पुस्तक के कुछ पृष्ठ पढ़कर
समझने की कोशिश किया। अद्भुत [illegible] ज्ञान-विज्ञान है।

विकारहीन मन ही तनको स्वस्थ रख सकता है।

यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरुषोत्तमम्। स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत।१९।
इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ। एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।२०।

yo māmevamasammūḍho jānāti puruṣottamam sa sarvavidbhajati māṁ sarvabhāvena bhārata
iti guhyatamaṁ śāstramidamuktaṁ mayānagha etadbuddhvā buddhimānsyātkṛtakṛtyaśca bhārata
(Ch. 15/19-20)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः।१५।

सूर्यो० ६।९, सूर्या० ५।११ आज मिश्री परशुराम उपाध्याय साबुन बहनोई
ईश्वरचन्द्र का संग्रह मिला। जिसका दो-रुपये।
सायंकाल डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा आ पहुँचे। उनकी ज्येष्ठ पुत्री
ऊषा फिरोजपुर जायेगी - बबलू पहुँचाने जायेंगे।
कुमिल्ला के श्री हीरालाल राय के गाजीपुर से सैदपुर के रास्ते
में कार दुर्घटना से मरने की खबर मालूम हुई। यह खबर डा० य०
नाथ के गाने पर हे राम से सुने थे।
श्री ब्रजकिशोर टंडन - श्यामसुन्दर कोठारी राय पर फटकार की
भी भाषा में इलाहाबाद से निकला उसकी प्रेस रिपोर्ट प्रति
रख ली गई।
उदयपुर गुलाबचन्द पटेल, कुलाबगंज - और - पद्माकुमारी
के पूर्णिमा का पद ही भेजे। पं० देवनारायण शर्मा ने उन्हें
सूचित नहीं किया। आदि सिर्फ भारतीय संस्कृति
ब्राह्मण उदय से आये जो भारत का ध्यान है। यह
उचित नहीं। वर्तमान सीखने आते हैं। सीधे उनका
इसी लेखक की सेवा करेगा - जड़ शब्दों का प्रचार करेगा।
पं० गुलाबचन्द शर्मा ने डा० रामानंद राय से मिलकर
गाजीपुर का इतिहास की प्रतियाँ दे आये।
मैंने पुस्तक का अवलोकन किया। महत्वपूर्ण
आकर्षक वाले का - पुनी बनाई पाठकों के लिए
बालकों को उन संग्रहों सकारात्मक मानते हैं
अनुकूल है। यह ऐतिहासिक तथ्यों को दिया गया है।

आश्चर्य! लोग जीवन बढ़ाना चाहते हैं सुधारना नहीं।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः। दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।१।
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्। दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।२।

śrībhagavānuvāca

abhayaṁ sattvasaṁśuddhirjñānayogavyavasthitiḥ dānaṁ damaśca yajñaśca svādhyāyastapa ārjavam
ahiṁsā satyamakrodhastyāgaḥ śāntirapaiśunam dayā bhūteṣvaloluptvaṁ mārdavaṁ hrīracāpalam
(Ch.16/1-2)

सूर्यो० ६।१०, सूर्या० ५।१० — **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

आज पूर्वाह्न पिपरा के श्री विधानचन्द्र शर्मा पुत्र श्री शिवमूर्ति
राम शर्मा गोरखपुर से लौटते आ गये। उनकी भाभी एक सप्ताह से
यहां काशी वास कर गंगा स्नान कर रही थीं।
आज ही कुमार समाचार [illegible] पत्नी [illegible] रही। ब्रजकिशोर
राय रामपुर के नाम लिखा पत्र नारायण द्वारा डाक में डलवाया।
श्री [illegible] किशोर [illegible] [illegible] जिसमें [illegible] के लिए [illegible]
[illegible] से। [illegible] [illegible] [illegible] लिफाफा [illegible]
था पहले।
× प्रमोद कुमार आज भी नहीं आये। कोई खबर भी नहीं
दिया उनने। सब काम पड़े हैं। समकालीन भोजपुरी साहित्य
पत्रिका के लिये लिखा गया। [illegible] पत्रिका के [illegible] की
[illegible] लेगये। उनका पता डायरी में लिख लिया।

अ० १६] मार्गशीर्ष कृष्ण ५, सं० २०५५, रविवार, NOV. 8. 1998 [दिन ३१२

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता। भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।३।
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च। अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।४।
दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता। मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव।५।

tejaḥ kṣamā dhṛtiḥ śaucamadroho nātimānitā bhavanti sampadaṁ daivīmabhijātasya bhārata
dambho darpo'bhimānaśca krodhaḥ pāruṣyameva ca ajñānaṁ cābhijātasya pārtha sampadamāsurīm
daivī sampadvimokṣāya nibandhāyāsurī matā mā śucaḥ sampadaṁ daivīmabhijāto'si pāṇḍava
(Ch.16/3—5)

सूर्यो० ६।१०, सूर्या० ५।१०

दस दिनों तक रहा करने के बाद आज विश्वनाथजी की माता अजीत कुमार के साथ वापस उड़ीसा गईं। संबंधियों से मन को संतोष व आह्लाद मालूम होती है।
आज भगिहरी के श्री भगवाननारायण राय - शिक्षक आये। कुशल मंगल - समाचार पूछ-ताछ हुआ। उन्हें भी श्री सीताराम राय - कुशवाहा के दिवंगत होने की खबर नहीं थी - अफसोस व्यक्त किये।
आज मैंने मिरहौंव पं० रामरेखा पाण्डेय को विवाह पत्रिका के लिये पत्र लिखा। इसी के साथ स्व० शिवपूजन शास्त्री के पौत्र को - उनके पिता के लिये संवेदना पत्र लिखा।

पाप और पारा कोई पचा नहीं सकता।

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च। दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु।६। प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः। न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते।७। असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्। अपरस्परसम्भूतं किमन्यत्कामहैतुकम्।८।

dvau bhūtasargau loke'smindaiva āsura eva ca daivo vistaraśaḥ prokta āsuraṁ pārtha me śṛṇu pravṛttiṁ ca nivṛttiṁ ca janā na vidurāsurāḥ na śaucaṁ nāpi cācāro na satyaṁ teṣu vidyate asatyamapratiṣṭhaṁ te jagadāhuranīśvaram aparasparasambhūtaṁ kimanyatkāmahaitukam

(Ch.16/6—8)

सूर्यो० ६।११, सूर्यां० ५।९

~~आज सुप्रेश्वर पंडित आये पर अस्वस्थता के मैं अपनी दवा के लिए वैद्य त्रिपाठी के यहां नहीं जा सका। प्रमोद कुमार जी~~

~~गृहकार्य में कार्य इच्छा का उत्साह सब समाप्त हो गये हैं। प्रयाग अपने भाई वेदव्यास शर्मा को फोन से स्थिति-परिस्थिति की सूचना देते हैं. और महन्त मुझे कोई सूचना नहीं देते। हरिदत्त शास्त्री वेदाचार्य बृजेश की बात - यह अपनी बहन-अपने भांजों के यहां पैसा खर्च रहा है। मठ में मेरी रोटी तक नहीं लेता। एक महन्त - अवध गाथी - पारसनाथ सिंह - पलटन शास्त्री जी - महामण्डलेश्वर की कथा भागवत यज्ञ से बड़ा कि चलता है। मन को मजबूत करके लिखने बैठा हूँ - तो पढ़ने लिखने लगता हूँ। फतेहबहादुर - फतेहगढ़ से आये उनका पत्र मिला। वे पन्द्रह नवम्बर तक काशी लौटेंगे। बिजेन्द्र शर्मा को रुपये पच्चीस और एक पोस्टकार्ड पत्र पुनः लिख कर अगले कार्यक्रम की सूचना दिया।~~

दुष्टोंकी न शत्रुता अच्छी, न मित्रता।

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः। प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः। ९।
काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः। मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः। १०।
चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः। कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः। ११।

etāṁ dṛṣṭimavaṣṭabhya naṣṭātmāno'lpabuddhayaḥ prabhavantyugrakarmāṇaḥ kṣayāya jagato'hitāḥ
kāmamāśritya duṣpūraṁ dambhamānamadānvitāḥ mohādgṛhītvāsadgrāhānpravartante'śucivratāḥ
cintāmaparimeyāṁ ca pralayāntāmupāśritāḥ kāmopabhogaparamā etāvaditi niścitāḥ
(Ch.16/9—11)

सूर्यो० ६।१२, सूर्या० ५।८

आज प्रभुनारायण सिंह के छोटे पुत्र आये। गोलमी कोसा दे गये - पचास रुपये पूजा कूप में दे गये। उनसे मैंने स्वामी हरिदेवीनानन्द एवं परमप्रकाशानंद के लिखे हुये पत्रों की बात समझकर कह दिया [illegible]। [illegible] से भी परिचित करा दिया।

सायंकाल दीक्षा की जलपान किया। [illegible] सोया। काम होता भी, कष्ट होता है। राजनीति के लिये लेख प्रभावकारी पत्र दो पन्नों में लिखकर तैयार किया।

श्री प्रभुनारायण सिंह के लड़के को - [illegible] का डाक्टरी परीक्षण - दे दिया कि [illegible] तैयार [illegible] होगा।

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः। ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान्।१२।
इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्। इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।१३।
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि। ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी।१४।

āśāpāśaśatairbaddhāḥ kāmakrodhaparāyaṇāḥ īhante kāmabhogārthamanyāyenārthasañcayān
idamadya mayā labdhamimaṁ prāpsye manoratham idamastīdamapi me bhaviṣyati punardhanam
asau mayā hataḥ śatrurhaniṣye cāparānapi īśvaro'hamahaṁ bhogī siddho'haṁ balavānsukhī

(Ch.16/12—14)

सूर्यो० ६।१३, सूर्यां० ५।८ आज नौ बजे आर के प्राच्यभाषक [illegible]
[illegible] के बड़े पुत्र आये जो [illegible] विश्वविद्यालय में [illegible]
[illegible] में नामांकन करा चुके हैं। मठ में रहने के लिए [illegible] मनोज कुमार
से इनके पिता ने बात की है।
बटे का भी [illegible] के बाद प्रमोद आ गये।
अपने पत्नी-बच्चों सहित। शांति मिली। [illegible]
के बाद अपने कई कार्यक्रम से उन्हें अवगत कराया।

× × ×

तारा [illegible] की [illegible] का दस [illegible]; [illegible]
चौकी का [illegible] दाम में [illegible] के लिये [illegible]। [illegible] तीन
रुपये का मंगा भागया। पांच रुपये में [illegible] वापस हुए।
[illegible] के [illegible] किन्तु [illegible] बाहर अपनी
[illegible] के [illegible] उदासीनता पर [illegible]।
अपना [illegible] आराम ले आयेंगे। [illegible] में रहेंगे।
महापंडित राहुल सांकृत्यायन की बहुमूल्य पुस्तक
मध्य एशिया का इतिहास - प्रथम भाग भूमिका
तथा [illegible] ग्रंथों की समीक्षा और देखना
किया - कई ग्रंथों की पुस्तकों के [illegible] सुधार
रखा। पढ़ने में कई घंटे [illegible]।
आज कार्य अच्छा रहा। [illegible] हो गया।

दुनियामें रहो, दुनियाको अपनेमें न रहने दो।

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया । यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः। १५।
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ। १६।
आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः। यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्। १७।

āḍhyo'bhijanavānasmi ko'nyo'sti sadṛśo mayā yakṣye dāsyāmi modiṣya ityajñānavimohitāḥ
anekacittavibhrāntā mohajālasamāvṛtāḥ prasaktāḥ kāmabhogeṣu patanti narake'śucau
ātmasambhāvitāḥ stabdhā dhanamānamadānvitāḥ yajante nāmayajñaiste dambhenāvidhipūrvakam
(Ch.16/15—17)

सूर्यो० ६।१३, सूर्या० ५।७ आज हनुमानप्रसाद [illegible] से [illegible];
दैनिक आवश्यक [illegible] उतार। वीरेन्द्र कुमार शर्मा
एवं श्री राजेन्द्र शर्मा- को पत्र भेजा।
आज अपराह्न [illegible] को [illegible] गया। [illegible]
प्रतीक्षित [illegible] से [illegible] है। वह [illegible] स्वतः
सम्पूर्ण [illegible] हो जायेगा।
विशुद्ध चित्त तथा [illegible] मिलन [illegible] हो सकता।

कर्कश वाणीसे कलहका जन्म होता है।

अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः। मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः।१८।
तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्। क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु।१९।
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि। मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्।२०।

ahaṅkāraṁ balaṁ darpaṁ kāmaṁ krodhaṁ ca saṁśritāḥ māmātmaparadeheṣu pradviṣanto'bhyasūyakāḥ
tānahaṁ dviṣataḥ krūrānsaṁsāreṣu narādhamān kṣipāmyajasramaśubhānāsurīṣveva yoniṣu
āsurīṁ yonimāpannā mūḍhā janmani janmani māmaprāpyaiva kaunteya tato yāntyadhamāṁ gatim
(Ch.16/18—20)

सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ५।७ प्रातः मदनपुर-शिवदत्त [illegible]
भागलपुर के श्री श्यामलाल चौधरी स्व० संन्यासी, मैंने शिक्षा
का पूछे। जी हू. गरजियोला आदि जवाब दिया उन्होंने।

तपित्त टीवी चल रही है। जिन्हें संन्यासी शिक्षा का पता नहीं,
सामी अपने उद्बोधन में लोग की पूजा में लगा दिया है
भागवत पारायण घूमते हैं। स्वामी की गौरव गीता एवं
संन्यास धर्म के पालन की चिन्ता किसे है?
मन विनाश संस्कार लोक से भी [illegible]।

प्राणपिपीलिका- प्रज्ञा सिद्धान्त और महत्वपूर्ण ग्रंथों का
अवलोकन तथा मनन-चिन्तन किया।
श्री रामनवमी [illegible] लिखकर पूरा किया।

असंग भाव की प्राप्ति के लिये अहंकार
का इतना अन्त आवश्यक है।
प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले तीन गुण - सत्व, रज और तम के
जाल में जगत् के सभी जन हैं। अर्थात जगत में सभी फंसा हुआ है।
मनुष्य योग दे तो भी जगत चलेगा। और योग न दे तो भी
चलेगा नहीं। ऐसा समझ लिया जाय तो अपने आपके
कर्तापन का भ्रम हट जायेगा।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः । कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् । २१ ।
एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः । आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् । २२ ।

trividhaṁ narakasyedaṁ dvāraṁ nāśanamātmanaḥ kāmaḥ krodhastathā lobhastasmādetattrayaṁ tyajet
etairvimuktaḥ kaunteya tamodvāraistribhirnaraḥ ācaratyātmanaḥ śreyastato yāti parāṁ gatim

(Ch.16/21-22)

सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ५।६ — उत्पन्ना एकादशीव्रत

आज प्रमोदकुमार श्री हिमांशु चौधरी के साथ देहरादून से सहारनपुर [illegible] गये। [illegible]
दिन में तीन घंटे तक सत्संग भवन में [illegible] बैठाते रहे। पं० गुप्तेश्वर शर्मा ने भी [illegible]।
इन्द्रिय और विषय इनके पारस्परिक संबंध कैसे [illegible] किये बिना न शान्ति मिल सकती है न सुख। [illegible] इन्द्रियों को वश में रखना ही है।
अध्यात्म और व्यवहार का मेल ही प्रज्ञा है। जीवन में संतुलित दृष्टिकोण ही प्रज्ञा है। आज [illegible] [illegible] गया। [illegible] गये हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण १२, रविवार, 15 NOV.

सूर्यो० ६।१५, सूर्या० ५।६

आज पं० गुप्तेश्वर शर्मा ने [illegible] कॉलोनी [illegible] के घर से बैंक के [illegible] दिया। पंडितजी तत्पर होकर दो घंटे तक सत्संग भवन में [illegible] को [illegible] में रखवाने में लगे रहे।

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्। २३।
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ। ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि। २४।

yaḥ śāstravidhimutsṛjya vartate kāmakārataḥ na sa siddhimavāpnoti na sukhaṁ na parāṁ gatim
tasmācchāstraṁ pramāṇaṁ te kāryākāryavyavasthitau jñātvā śāstravidhānoktaṁ karma kartumihārhasi
(Ch.16/23-24)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसम्पद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः। १६।

सूर्यो० ६।१६, सूर्या० ५।६ — **सोमप्रदोष**

आज अचानक पं० कमलाकान्त पाण्डेय जी [illegible]
श्री जयकिशन के साथ आ पहुँचे। उन्होंने भी हावड़ा [illegible] के प्रति
निश्चित कर शुद्ध निष्ठा का अनुमोदन किया। उनके साथ
बहुविध सामाजिक बातें होती रहीं।
श्री स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती (कन्याकुमारी [illegible]) जो [illegible]
से यहीं आये हुए थे, में। उनके पास ठहरे हैं, सहसा आ पहुँचे।
वे अब परिव्राजक हैं।
उनसे अनुरोध किया गया कि मेरे यज्ञ-यात्रा के समय में
वे दस दिनों तक रामकुण्ड के आश्रम - प्रतिष्ठान में निवास करें।
क्योंकि किसी के परिवार के लोगों की अनुपस्थिति में, कोई पुरुष
रहता नहीं। उन्होंने सोमवार/मंगलवार [illegible] दिसम्बर तक
आ पहुँचने का आश्वासन दिया।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः। तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः। १।

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा। सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु। २।

arjuna uvāca

ye śāstravidhimutsṛjya yajante śraddhayānvitāḥ teṣāṁ niṣṭhā tu kā kṛṣṇa sattvamāho rajastamaḥ

śrībhagavānuvāca

trividhā bhavati śraddhā dehināṁ sā svabhāvajā sāttvikī rājasī caiva tāmasī ceti tāṁ śṛṇu

(Ch.17/1-2)

सूर्यो० ६।१७, सूर्या० ५।५

आज श्रीरामनरेश पाण्डेय जी सिकरौर के दैनिक
उदय पत्र स्मारक में लिखकर हथुआ भगवानदीन को
सचेष्ट किया। उदय पत्र हाथड़ा-कैलिका के पते निवास
श्री श्रीराम पाण्डेय रामप्रसाद पाण्डेय को दिया।
सायंकाल- सिगरी से श्री रामभूषण पाण्डेय- बकुलहाँ.
मठ में आये। वे श्री रामनरेश पाण्डेय का भेजा पत्र किलो
आवलय एक किलो घी लेकर आये। साथ ही उनका यह संदेश भी
सुनाया कि ८ दिसंबर के अन्दर में उनकी लड़की के पुत्र का
तिलक इण्डरा हाथड़ा का कार्यक्रम करा जावेंगे। किन्तु उसमें
महरनी का नहीं है क्योंकि ग्राम वंशुकुल का है. आमंत्रण भी
हो चुका। उन्हें एक पत्र भेज दूंगा कि आप तिलकोत्सव के
समाचार छपवा कि तिलक तक कल आता हाथड़ा पहुँचें। मैं वहां,
उस दिन स्कूल के पास पहुँच जाऊँगा।

अ० १७] मार्गशीर्ष कृष्ण १४, सं० २०५५, मंगलवार, NOV. 17. 1998 [दिन ३२१

अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् । इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् । १२ ।
विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् । श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते । १३ ।
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् । ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते । १४ ।

abhisandhāya tu phalaṁ dambhārthamapi caiva yat ijyate bharataśreṣṭha taṁ yajñaṁ viddhi rājasam
vidhihīnamasṛṣṭānnaṁ mantrahīnamadakṣiṇam śraddhāvirahitaṁ yajñaṁ tāmasaṁ paricakṣate
devadvijaguruprājñapūjanaṁ śaucamārjavam brahmacaryamahiṁsā ca śārīraṁ tapa ucyate
(Ch.17/12—14)

सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।१४

आज रात के नौ दस बजे, [illegible]
श्री शिवकुमार राय - अपने कन्या विद्यालय के [illegible]
भारी जमात लेकर सभी [illegible] - [illegible]
पर लेकर [illegible] आ गये। मैं तो सो गया।
श्री प्रमोद कुमार [illegible] में लगे रहे और [illegible]
को सौंपे गये।

मार्गशीर्ष शुक्ल ३, रविवार, 22 NOV.

सूर्यो० ६।२१, सूर्या० ५।१४

प्रातः शिवकुमार राय की भारी बड़ी सी जमात, युवक-
युवतियों, बच्चे बच्चियों, प्राचार्य, शिक्षिका, शिक्षक एवं
शिक्षिकाओं के साथ [illegible]
[illegible]
[illegible] गये - ४ बजे शाम पुनः जमात के साथ [illegible]
[illegible] पांच बजे - सब [illegible]
[illegible]
[illegible] दिया।

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः। दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्।२१।
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते। असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्।२२।
ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः। ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा।२३।

yattu pratyupakārārthaṁ phalamuddiśya vā punaḥ dīyate ca parikliṣṭaṁ taddānaṁ rājasaṁ smṛtam
adeśakāle yaddānamapātrebhyaśca dīyate asatkṛtamavajñātaṁ tattāmasamudāhṛtam
oṁ tatsaditi nirdeśo brahmaṇastrividhaḥ smṛtaḥ brāhmaṇāstena vedāśca yajñāśca vihitāḥ purā
(Ch.17/21—23)

सूर्यो० ६।२३, सूर्या० ५।३

आज विहार सरकार की राजभाषा समिति से
एक पत्र में यह सूचना आयी कि राष्ट्रभाषा समिति
ने उनके महाकाव्य "पउमावती" पर पाँच हजार रुपये का
शिवजी ठाकुर पुरस्कार दिया जायेगा। विधिवत समारोह
में ये सम्मान यह पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।
यह एक मूल्यवान उपलब्धि है और कठिन परिश्रम और
निःस्पृह साधना से प्राप्त हुई है। यह कोटि का एक है!

[illegible] उलग है। -

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः। पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः। १६।
यस्य नाहङ्कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते। हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते। १७।
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना। करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसङ्ग्रहः। १८।

tatraivaṁ sati kartāramātmānaṁ kevalaṁ tu yaḥ paśyatyakṛtabuddhitvānna sa paśyati durmatiḥ
yasya nāhaṅkṛto bhāvo buddhiryasya na lipyate hatvāpi sa imā̐llokānna hanti na nibadhyate
jñānaṁ jñeyaṁ parijñātā trividhā karmacodanā karaṇaṁ karma karteti trividhaḥ karmasaṅgrahaḥ
(Ch.18/16—18)

सूर्यो० ६।२९, सूर्या० ५।३ — पूर्णिमा

[illegible] पांडे के कार्यक्रम के उपलक्ष्य [illegible]
के [illegible] के [illegible]
आज [illegible]
[illegible]
[illegible]

'है' तो केवल कृपा-ही-कृपा है, अन्य सबकुछ तो 'नहीं' है।

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः। प्रोच्यते गुणसङ्ख्याने यथावच्छृणु तान्यपि।१९।
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते। अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्।२०।
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्। वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्।२१।

jñānaṁ karma ca kartā ca tridhaiva guṇabhedataḥ procyate guṇasaṅkhyāne yathāvacchṛṇu tānyapi
sarvabhūteṣu yenaikaṁ bhāvamavyayamīkṣate avibhaktaṁ vibhakteṣu tajjñānaṁ viddhi sāttvikam
pṛthaktvena tu yajjñānaṁ nānābhāvānpṛthagvidhān vetti sarveṣu bhūteṣu tajjñānaṁ viddhi rājasam
(Ch.18/19—21)

सूर्यो० ६।३०, सूर्या० ५।३

बरसा - मेंरजाजपुर के किले पहाड़ और [illegible]
[illegible] राजनीति [illegible] के ऊपर फेंककर [illegible]।
काशी - [illegible] के प्रग - मूर्ति। [illegible] पर उनकी
श्रद्धाओं को भी देखकर [illegible] गये। राजनीति[illegible] की स्थिति
साक्षात भगवती हैं. उनकी श्रद्धा अपार है।

नित्य प्रातः-सायं बड़ोंको प्रणाम करना चाहिये।

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम्। अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम्। २२।
नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम्। अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते। २३।
यत्तु कामेप्सुना कर्म साहङ्कारेण वा पुनः। क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम्। २४।

yattu kṛtsnavadekasminkārye saktamahaitukam atattvārthavadalpaṁ ca tattāmasamudāhṛtam
niyataṁ saṅgarahitamarāgadveṣataḥ kṛtam aphalaprepsunā karma yattatsāttvikamucyate
yattu kāmepsunā karma sāhaṅkāreṇa vā punaḥ kriyate bahulāyāsaṁ tadrājasamudāhṛtam

(Ch.18/22—24)

सूर्यो० ६।३१, सूर्या० ५।३

आज राजनीति तिवारी के कोर्ट गई। केवल भोजन किया, और उनके पिता डिप्टी साहब के [illegible] का [illegible] है। शनिवार को कौशल तिवारी की पत्नी तथा [illegible] आये। उनकी [illegible] पहले आया था। उन्हें सामग्री की सूची दे दी गई। कल दीक्षा होगी।

सहसा राजनीति तिवारी के एक [illegible] आजमगढ़ से आये और पुनः वहीं जायेंगे। सायंकाल प्रभाशंकर तिवारी राजेश [illegible] जो मेरे [illegible] हैं, और उनके पिता [illegible] हुआ। [illegible] की पत्नी तथा [illegible] की [illegible] को [illegible] किसी की [illegible] नहीं देखी।

पौष कृष्ण ३, रविवार, 6 DEC.

सूर्यो० ६।३२, सूर्या० ५।३

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज बड़े [illegible] से पूजा की होम आदि [illegible] की [illegible] तिवारी को [illegible] दीक्षा दी गई। इस जीवन की [illegible] की [illegible] है। [illegible] है। [illegible] नहीं किया।

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम्। मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते।२५।
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः। सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते।२६।
रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः। हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः।२७।

anubandhaṁ kṣayaṁ hiṁsāmanavekṣya ca pauruṣam mohādārabhyate karma yattattāmasamucyate
muktasaṅgo'nahaṁvādī dhṛtyutsāhasamanvitaḥ siddhyasiddhyornirvikāraḥ kartā sāttvika ucyate
rāgī karmaphalaprepsurlubdho hiṁsātmako'śuciḥ harṣaśokānvitaḥ kartā rājasaḥ parikīrtitaḥ
(Ch.18/25—27)

सूर्यो० ६।३२, सूर्या० ५।३ — आज शिवपुर कालोनी में गये बनारसी लाल जी
के घर भोजन सम्पन्न हुआ। बनारसी जी के पुत्र बंधु बच्चों
दामाद (कार्तिक) आदि मिले।
इन लोगों ने भी मधुर स्वागत किया। कपड़ा [illegible]
[illegible] चित्त क्रुद्ध हो [illegible] समाप्त किया।
कलाकार कृष्णचन्द्र के कटुवचन सुने [illegible] की [illegible] हैं सभी
[illegible] हैं [illegible] देते हैं।
[illegible] मिले [illegible] अस्पताल
[illegible] पाण्डेयपुर और शिवपुर स्थित हैं [illegible] हैं [illegible]
हैं। [illegible] के काम करते [illegible] रहते हैं।
मैं भी [illegible] कर दी जाती हैं।

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठोऽनैष्कृतिकोऽलसः । विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते। २८।
बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु। प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनञ्जय। २९।
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये। बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी। ३०।

ayuktaḥ prākṛtaḥ stabdhaḥ śaṭho'naiṣkṛtiko'lasaḥ viṣādī dīrghasūtrī ca kartā tāmasa ucyate
buddherbhedaṁ dhṛteścaiva guṇatastrividhaṁ śṛṇu procyamānamaśeṣeṇa pṛthaktvena dhanañjaya
pravṛttiṁ ca nivṛttiṁ ca kāryākārye bhayābhaye bandhaṁ mokṣaṁ ca yā vetti buddhiḥ sā pārtha sāttvikī
(Ch.18/28—30)

सूर्यो० ६।३३, सूर्या० ५।३ — आज श्री दयाशंकर (बिहारी) के यहां [illegible]-कल्याण
अत्यन्त श्रद्धा के साथ किया। दक्षिणा [illegible] होगी।
गोपाल नगर में इनका भी पांच-सात कमरों का मकान
बना है। १ बजे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
पहुंचा। [illegible] में आया। भोजन [illegible] किया।
सात सौ रुपये [illegible] [illegible] किया। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] लिये।

जिसने बोझ बढ़ा लिया है, वह तो डूबेगा ही।

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः। सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः।४०।
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप। कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।४१।
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च। ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।४२।

na tadasti pṛthivyāṁ vā divi deveṣu vā punaḥ sattvaṁ prakṛtijairmuktaṁ yadebhiḥ syāttribhirguṇaiḥ
brāhmaṇakṣatriyaviśāṁ śūdrāṇāṁ ca parantapa karmāṇi pravibhaktāni svabhāvaprabhavairguṇaiḥ
śamo damastapaḥ śaucaṁ kṣāntirārjavameva ca jñānaṁ vijñānamāstikyaṁ brahmakarma svabhāvajam
(Ch.18/40—42)

सूर्यो० ६।३६, सूर्या० ५।४

पौष कृष्ण १०, रविवार, 13 DEC.

सूर्यो० ६।३६, सूर्या० ५।४

आज साढ़े ग्यारह बजे [illegible] प्रेक्षागृह में [illegible] का उद्घाटन करने जाना पड़ा। यह [illegible] है। [illegible] के [illegible] मुख्य अतिथि [illegible] विशिष्ट अतिथि [illegible], गोरखपुर के [illegible] [illegible] और [illegible] के [illegible] [illegible]

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्। दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्।४३।
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्।४४।
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु।४५।

śauryaṁ tejo dhṛtirdākṣyaṁ yuddhe cāpyapalāyanam dānamīśvarabhāvaśca kṣātraṁ karma svabhāvajam
kṛṣigaurakṣyavāṇijyaṁ vaiśyakarma svabhāvajam paricaryātmakaṁ karma śūdrasyāpi svabhāvajam
sve sve karmaṇyabhirataḥ saṁsiddhiṁ labhate naraḥ svakarmanirataḥ siddhiṁ yathā vindati tacchṛṇu
(Ch.18/43—45)

सूर्यो० ६।३७, सूर्या० ५।५   **सफला एकादशीव्रत**

आज कानपुर के श्री महीपाल शर्मा, पुत्र स्व० श्री सुरेन्द्र शर्मा, सपत्नीक मठ में पधारे। वे आगन्तुक श्रद्धाप्रेमपूर्वक दीक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से आये। कहा कि एक माह रहेंगा। अतः पत्नी को सलाह दी कि शीघ्र गुरुमंत्र ले लिया जाय। फलतः शीघ्रता में आवश्यक तैयारी हुई। प्रमोद कुमार दीक्षित ने सविधि पूजा अर्चा करा कर दीक्षा का कार्य संपन्न कराया। षडक्षर मंत्र "ॐ नमः शिवाय" की दीक्षा दी गई। निर्विकल्प भावक त्रिगुण सत्ता अखण्ड प्रशान्त नायक उत्कृष्टतम का अक्षर से परे; जो "शिव" कहा गया है। शिव महादेव हैं। परम श्रेष्ठ परमात्मा है। जीव का परम लक्ष्य शिव सायुज्य में मिल जाना अर्थात् आत्मबोध प्राप्त करना है। जीव वही है कामनाओं की उलझनों में पड़कर "शिव" से जीव हुआ है। मुझे इसकी नजर दक्षिणा १५० रुपये शिष्या के लिये। १०० रुपये [illegible] को दिये। रात्रि निवास किया।

मारना है तो बुरी इच्छाओंको मारो।

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्। स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः। ४६।
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्। स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्। ४७।
सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्। सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः। ४८।

yataḥ pravṛttirbhūtānāṁ yena sarvamidaṁ tatam svakarmaṇā tamabhyarcya siddhiṁ vindati mānavaḥ
śreyānsvadharmo viguṇaḥ paradharmātsvanuṣṭhitāt svabhāvaniyataṁ karma kurvannāpnoti kilbiṣam
sahajaṁ karma kaunteya sadoṣamapi na tyajet sarvārambhā hi doṣeṇa dhūmenāgnirivāvṛtāḥ
(Ch.18/46—48)

सूर्यो० ६। ३८, सूर्या० ५। ५ महाराजजी प्रातः [illegible]
[illegible] दो गिलास [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
सायंकाल [illegible]
[illegible] पेट के तेल मालिश किया। सो गये। [illegible]
[illegible]
[illegible] और [illegible]

अज्ञानी मनुष्य ही अभिमानका गुलाम है।

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः । ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ।५२।
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् । विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ।५३।
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति । समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ।५४।

viviktasevī laghvāśī yatavākkāyamānasaḥ dhyānayogaparo nityaṁ vairāgyaṁ samupāśritaḥ
ahaṅkāraṁ balaṁ darpaṁ kāmaṁ krodhaṁ parigraham vimucya nirmamaḥ śānto brahmabhūyāya kalpate
brahmabhūtaḥ prasannātmā na śocati na kāṅkṣati samaḥ sarveṣu bhūteṣu madbhaktiṁ labhate parām
(Ch.18/52—54)

सूर्यो० ६।३९, सूर्या० ५।६ आज सहसा प्रमोदकुमार ओझा इलाहाबाद से आए हैं
कहते - [illegible] में। ईशान की [illegible]
[illegible] राय लिए आये हैं, ठहरे हैं - दो लोगों [illegible]
[illegible] के आगे वैराग्य की एक [illegible] प्रकाशित
करना चाहते हैं। इनका प्रारूप देखेंगे।
उन्हें संशोधित करना है।
पं० रामकृष्ण पाण्डे - डा० [illegible] मिश्र -
बाबा - [illegible] त्रिपाठी आदि को निमंत्रणपत्र भेज दिया
डाक में।
मंगल [illegible] १०+१. ३०. का आना.

उसे कोई सुख नहीं, जिसकी इच्छाएँ बड़ी हैं।

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः । ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्।५५।
सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः। मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्।५६।

bhaktyā māmabhijānāti yāvānyaścāsmi tattvataḥ tato māṁ tattvato jñātvā viśate tadanantaram
sarvakarmāṇyapi sadā kurvāṇo madvyapāśrayaḥ matprasādādavāpnoti śāśvataṁ padamavyayam

(Ch.18/55-56)

सूर्यो० ६।४०, सूर्या० ५।६ — **अमावास्या**

आज भी लालजी [illegible] नहीं आये। प० [illegible]
स्वामी गंगाराम अपनी जन्मभूमि का वंशवृक्ष इतिहास [illegible]
देखने लिखने के लिये पत्र [illegible] उनकी जन्मभूमि [illegible]
[illegible] इनकी माता जी के [illegible]
[illegible]
इतिहास में [illegible]
सम्मिलित है। [illegible]
[illegible] "गुरु स्मरण और उसका फल"
सायंकाल [illegible] तिवारी [illegible]
आये। [illegible]
[illegible]। वे "[illegible]" की [illegible] बहुत
दिनों से।
सायंकाल [illegible] के [illegible] अपनी बड़ी लड़की
की विदा के क्रम में आये रहे। [illegible]।
प्रमोद कुमार के [illegible] बहुत कष्ट होता है। [illegible]
अस्त व्यस्त हो जाती है।

रोग-वियोगसे घबराओ मत।

चेतसा सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्परः। बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव।५७।
मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि। अथ चेत्त्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।५८।

cetasā sarvakarmāṇi mayi sannyasya matparaḥ buddhiyogamupāśritya maccittaḥ satataṁ bhava maccittaḥ sarvadurgāṇi matprasādāttariṣyasi atha cettvamahaṅkārānna śroṣyasi vinaṅkṣyasi

(Ch.18/57-58)

सूर्यो० ६।४०, सूर्या० ५।१७

~~आज अंजनी आश्रम (कानपुर) गये। [illegible] भी गोमा परवार के बड़ेश्वर त्रिपाठी को एक विस्तृत एवं प्रभावकारी पत्र लिखा कि उन्हें कोई कार्य [illegible] लोकसंग्रह कार्य के लिये प्राप्त हो सके।~~

पौष शुक्ल २, रविवार, 20 DEC.

सूर्यो० ६।४१, सूर्या० ५।१७

~~आज भोपाल के रमेश शर्मा [illegible] गडुवां के श्री गिरिजा शंकर राय के साथ [illegible] को आ पहुंचा। उन्होंने मठ के सत्संग [illegible] नवनिर्माण को देखा, अति प्रसन्न थे। जाते समय उन्होंने [illegible] रुपये दिये। पश्चात् [illegible] कुल [illegible] रुपये [illegible] के लिये दे दिया।~~

यदहङ्कारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे । मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति।५९।
स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा । कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्।६०।

yadahaṅkāramāśritya na yotsya iti manyase mithyaiṣa vyavasāyaste prakṛtistvāṁ niyokṣyati
svabhāvajena kaunteya nibaddhaḥ svena karmaṇā kartuṁ necchasi yanmohātkariṣyasyavaśo'pi tat

(Ch.18/59-60)

सूर्यो० ६।४१, सूर्या० ५।८

आज मिश्री एक को कागज [illegible]
पंचांग के लिये मोटा कागज तीन [illegible] भी मँगा [illegible]
[illegible] आज लायेंगे। [illegible]
श्री [illegible] त्रिपाठी [illegible]
[illegible] तैयार किया। [illegible] त्रिपाठी को [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] रहे हैं। [illegible] छूट गया है।
श्री [illegible] के पैसे [illegible]
के [illegible] के लिये रोज पैसे थे।

भगवत्कृपाका जो मिठास है, इसकी कोई तुलना नहीं है।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति। भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।६१।
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत। तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।६२।

īśvaraḥ sarvabhūtānāṁ hṛddeśe'rjuna tiṣṭhati bhrāmayansarvabhūtāni yantrārūḍhāni māyayā
tameva śaraṇaṁ gaccha sarvabhāvena bhārata tatprasādātparāṁ śāntiṁ sthānaṁ prāpsyasi śāśvatam

(Ch.18/61-62)

सूर्यो० ६।४२, सूर्या० ५।८ आज प्रातः [illegible] इटारसी को देकर
दो लिफाफे मंगाये तथा [illegible]. गाजी को लिये
लाल पेंसिल तथा [illegible] कलकत्ते से कोकी
काली। प्रोफेसर त्रिपाठी का पत्र डाक में गया।

बेटा के श्री सुरेन्द्र राय की बहिन की छुट्टी हुई है।
वे दस दिनों से काशी में [illegible] नर्सिंग होम में
किसी चिकित्सा करा रहे हैं। फोन द्वारा उनकी
खबर प्राप्त हुई थी। बाहर [illegible] [illegible] के
[illegible] गर्भ में भी आ सकते हैं। [illegible]
फोन से यह बात ज्ञात हुई है।

सत्यके बिना राजनीति धिक्कारने योग्य है।

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया । विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ।६३।
सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः । इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ।६४।

iti te jñānamākhyātaṁ guhyādguhyataraṁ mayā vimṛśyaitadaśeṣeṇa yathecchasi tathā kuru
sarvaguhyatamaṁ bhūyaḥ śṛṇu me paramaṁ vacaḥ iṣṭo'si me dṛḍhamiti tato vakṣyāmi te hitam

(Ch. 18/63-64)

सूर्यो० ६।४२, सूर्या० ५।९ आज सायंकाल तीन बजे [illegible] श्री रवीन्द्र कुमार
शर्मा और [illegible] [illegible] उड़ीसा [illegible] आ गये।
[illegible] शिक्षा मंडली का समाचार प्राप्त हुआ।
व आवश्यक क्रिया [illegible] के बाद [illegible] गये।
तबियत बहुत कमजोर हो गई है। [illegible]
[illegible] का सुप्रबन्ध नहीं हो पा रहा है। [illegible]
[illegible] देखें [illegible] कैसे [illegible] है।

जो चला गया उसपर नहीं, आने वालेपर विचार करो।

स्व० रामआज्ञा पाण्डे -
द्वारा: सोनामती देवी 1001 रु०
ग्राम सेमरी, नकुलहा पुरी 9722 - 1009 रु०
पान - वाराणसी सत्संग भवन कोल

'सुभाषितरत्नभाण्डागारम्'

प्रकाशक - मुन्शीराम मनोहरलाल - पब्लिशर्स
द्वारा - मोती लाल बनारसी दास
या दि. कि. ज्ञान प्रकाशन - वाराणसी

इस्लामिक सील आन इन्डियास इंडीपेन्डेन्स -
अब्दुल कलाम आज ए कैश - बुक -
- डा० सैयदा सैयदन

रामजी लाल बी.डी.ओ. (रिटायर्ड)
पंचायत समिति चाकसु
पो. चाकसु (जयपुर)
(राजस्थान)

जगदीश प्रसाद नारायण सिंह (सलेमगढ़),
12-बी., कान्तीकुंज एपार्टमेन्ट,
कमच्छा
वाराणसी

'श्री रामजन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास'
ले० - पं० रामगोपाल पाण्डेय 'शारद'
प्रकाशक - मनीराम प्रिंटिंग प्रेस, शास्त्री नगर - अयोध्या
जिला - फैजाबाद



पता —
डा० चंद्रेश्वर मिश्र
द्वारा डा० रामकृष्ण मिश्र
एस०के० मेडिकल - कॉलेज के दक्षिण
पो० - उमानगर
जि० मुजफ्फरपुर
(उत्तर बिहार)

बाबू नंदन राय
फूलपुर - जो पवन
है - राज घई स्कूल में :—

... मीटर →
२ फुट पौने चार इंच